20CC

पुवाग्न-प्रभा

' ধর্মার্থকামনোকানামারেরার্গ্যং কার্নংক্ষত। তি আনাদারোগ্য দানেন নরো ভবতি সর্বাদঃ ॥,,

জীভোলানাথ মুখোপাধ্যায় কর্তৃক

সংগৃহীত এবং অনুবাদিত।

চতুর্থ সংস্করণ।

প্রকাশক।

वीविश्वस्त्र नार्।।

किनिकाला, हिर्शूत (त्र क वर्षे जेता १३६ नर खत्र न

मन ५२०० मान मूना ५ (अक है। का।

বিজ্ঞাপন |

সর্ব্ধ দাধারণকে অবগত করা বাইভেছে যে এই '' দ্রবাগুণ-দর্পন ,, পুত্তক ধানি গবর্গমেট হইতে রেজেফরি করিয়া দইয়াছি আমব্দেবিনা অনুমতিতে মুদ্রিত করিলে অইনন্দ্রগারে দণ্ডনীয় হইতে হইবে।

এবিশ্বভর লাহা।

উপহার।

্ ধর্মনিরত পরহিত পরারণ দেশহিতিষী জীপজীয়ুক বার প্রতাপচন্দ্র বড়ুরা রারবাহাদূর। জনীপার মহাশয় মহতাশরেষু।

महाभव।

আপনি ধর্ম সংস্থাপনার্থে এবং পরোপকারার্থে দেশহিতকর বিবিধকার্য্য করিয়া পৃথিবীর একটি ভূষণ অরূপ হইরাছেন। একারণ জনমহাশবের
পাবিত্র করকমলে এই একান্তেগ-দর্শণ নামক । পুত্তকথানি উপহার অরূপ্ প্রদান করিয়া পরম প্রীতি লাভ করিলাম নিবেদন ইতি।

মুখোপাধ্যায়োপাধিক।

ত্রীভোলানাথ শর্মা।

णालनात मूथ जालनि तम्स, किछू किछू तृष्धि क्षेष्ठमन, क्षेष्ठां म यण अम २व ण्य थल, लाग जी मन्द्रागवण अम ७ २य ज्यस, विज-त्रक्षन लागिनी, क्षेष्ठांम् मिनन, रेमिथनी मिनन, क्ष्माद्ययनी ननममयली, क्षत्रद्यागाथान, क्ष्मांमान्ने लाजन, तात्मत्र तालाक्षाल, कनक-फल्या, मानिक्ष्मा, तामनिक्ष्मा, लाक्दवत्र जालाण वान नाहिक, कृतिणा-मर्गन, कार्यमञ्ज मात्रमध्योद्ध, कार्यमिक्कू-एक् मात्रमध्योद्ध, कार्यमिक्कू-एक् मात्रमध्योद्ध, कार्यमिक्क् क्ष्मां क

किनकां वाहीति होना ३३० नः वाही।

বিজ্ঞাপন।

লোকমালা নির্কাহ করণার্ব দ্রব্যের দোষ গুণ বিদিত ছওয়া বিশেষ
করিবা। একারণ স্থান্ত ও জনান্য কএকথানি চিকিৎসক গ্রন্থ জবলম্বন
করিবা। একারণ স্থান্ত ও জনান্য কএকথানি চিকিৎসক গ্রন্থ জবলম্বন
করিবা। এবাজণ-দপন নামর্ব পুস্তক থানি প্রস্তুত করা ছইয়াছে। ইহা কোন
ক্রেমাণ এইের আহপুর্কিক জন্পবাদ নহে। দ্রব্যগুণ সম্বন্ধ প্রসকছ গ্রন্থের
ক্রে বে অংশের জাবশাক ছইয়াছে, সেই সেই জংশই গ্রহণ করা ছইয়াছে।
শোক ভাগে কতকগুণীন দ্রব্যের গুণ জকগাদিক্রমে লিখিত হইয়াছে।
শাক্তক দহোদয়দিগের স্থানার্থে অকারাদিক্রমে ও বর্গান্থানিক ছই প্রকার
স্থাণীত দেওয়া ছইয়াছে, ক্রেকগুলি করিন শব্দের অর্থাও জকারাদিক্রমে
লিখিত ছইয়াছে। পরিশ্রেম করিতে কোন,ক্রমেই ফ্রেট করি নাই, এক্রনে
ক্রিমান্ত ছবাছে। পরিশ্রম করিতে কোন,ক্রমেই ফ্রেট করি নাই, এক্রনে
ক্রেমান্ত ভাগার প্রদ্ধিতি ছইলে শ্রম্ম স্কল জন্পত্র নিবেদনু করিব ইতি।
দেশের উপ্রায় প্রদ্ধিতি ছইলে শ্রম স্কল জন্পত্র নিবেদনু করিব ইতি।

वर्गि- ड्वान।

मिर्छ ।	对面有	विष्के ।	প্ৰে ক
লেশ বিজ্ঞান	રૂ ૭	শুক্ত বিজ্ঞান	8 >
হ্ৰ বিজ্ঞান	24	মূত্র বিজ্ঞ;ন	8>
मिथ रिज्ञान	© 0	অলুদি বিজ্ঞান	4.2
फक विकास	જર્	ক্ল-ধান্য বিজ্ঞান	42
হুও বিজ্ঞান	9 8	वारम विष्णान	**
- टेजन विकाम	2	कन विष्ठान	98
क्रमा (यम बदः मक्का विकार	4 6b	পাক বিজ্ঞান	, p.c.
मध्र विक्रम्	600	পুষ্প বিচ্ছ ন	26
रेकू विकाम	8%	कम विकास	35
महा विकास	88	नर्ग विकान	300

वर्श विकान मगाछ।

আকারাদি ভেদে হতীপত্র।

		**	,
নিৰ্য'ট	পত্ৰ হৈ।	নিৰ্য'ট	外面十二
শকারাদি ভে,দ দ্রব্যগুর	324	অন্ন ফল বর্গ	98
অকুত এবং কুত বিজ্ঞান	302	कासकन विश खन •	9,8
শাদ ভক্ৰ	9	ममत्र १	22
व्यवाखा शूक्त छन, (इवा	ने श्रीका छन	म ञ्ज तम ३९	52
(मर्थ	4	অ'মকা গুণ	49
ष्म ग खा श्रुष्णे छन	24	ज्यामत मध्या छे ९ क्र छे	3.0
অথক চলন গুন	3¢	वर्तभूका श्रम (मध्यः	भगे भागि ,
শক্র বিশিষ্ট শালী ধানা	50 hD	८म ण)	
व्यक्तिक ज्ञादगादशम जन	ज रा	অক পুষ্পা গুণ (রক্ত	इक्लामित्र श्रृष्ट
ંશન .	* 770	(मथ)	
অজগর মাংস গুন	৬১	অজ্জ ক ওল (পি প্র	
আটুরাৰক গুণ (মুঞুকপনী	(म्थ)	অজ্জ ক গুণ (সুরস,	व्यक्ति वरः
महेत्रयक छन	29	ज्ख्न (मथ)	
ष्य ७ छ न	৬৮	व्यत्रहत्रकेणारे छन (·
অত্যা গুণ (হুবর্ষনা দে		व्यात्रक छन	89
व्यवमो छन (स्वर्कता मन		व्यात्रक्षे कल क्षन (कड़	क्षानि कन (न्य)
শতি উকার গুণ	3.8	चात्रके छन (मणुक्त	नी भागि (वर्ष (
व्यथम माः मविष्ठान	90	अन तू कम छन	b 9
ज्यम श्रमञ्	90	अर्थकन कल खुन	, 62
অহুগান বিজ্ঞান	27€	অপ্তথ কল গুণ (ক্ষ্	त्र त्रकानिकन ∽
অইপদেশে জল গুন	29	(甲甲)	
শন্তকার ওপ	26	পাৰ্যন্ত কলা জন	▶•
শর গুণ	3.8	वर्षरमा छन (उछ वि	লয়ক আদি শাক
অন প্রকরণ	\$28	(प्रंथ)	
শরাদ বিজ্ঞান	7	वश्वदारम छन (कक	পক মাংস (দৃধ)
म (मत्र म (धा छेश्कृष	302	भश्रम्ब छन	40
व्यक इक्ष जाउ नवनी उ		ব্যাহ্য ওন (এর শ	क प्रस (मर्थ)]
ৰপ্ৰ মধু গুন	* 83	कर्त्वना मेर्थ छन	93
ेष्प्रत् छक् छ। (म्पूक्र्यत्	,	जानीत मधि छन	, 63
অবল্থজ গুনু) 32	আৰু ফল গুন	• 58
म्डश कन छून	b-8	व्याकनामि श्राम मायूष	· ·
अधिक्ष कर्ग छन् (दुर्ग	_	वासन्य ।	48
ं (सम्)	कंप्याची गांच	শাচ্ফন বিধি	. Zak

ें विर्धन्ते	প্ৰাক ৷	নিৰ্বক্ত	भवाक ।
मायं छल छन	4 8	আহারের পরিষাণ	583
'आक्रक छन (शिल्लामार्ग	मि (मर्थ)ः	আহারের বৈধি	245
神(選本 〇十	69	আহারের সমর নিরপণ	320
का अक छन (विकास)।	দি এবং	व्याक्तिक भी धू छन	85
व्याप्तक (मथ)		আকিকী জাত হুরাগুণ	84
শাত্রক সংযুক্ত মৎসৈর	(व) छन	चाटकां हे कल छन (वाजाम	:मि
. 84	98	क्न (म्थ)	
শাদ। এবং কুন্তমূক	এক ক্রিড গুণ ৮৮	আক্ষোড় কল গুণ (বাভাগা	मि
व्याञ्चल बारज वर्ग विष		कश (मर्थ)	
व्याद्विदेशका छन (व्यथ		हेकां क गाँच छ मर्ट जत वास	A 34 40
আমভাকল গুণ (আত		हेकाक मून मध्यूक मध्यात	
(मथ)		বাঞ্জন গুণ	40
আমতিভিড়ি ফল গুণ	96	हेम्मिवत कम छन (कमवर्ग	(मर्थ)
जामकन जरमुक मर्टन	র ব্যঞ্জন	रेजूमी रेजन छन	99
81	48	इस्मी कम छन	40
आंभगक भव्यां छन	34	हेकू छफ़ छन	89
व्यापनकी कन छन	98	ইকুলাত উত্তিদ গুন	29
आंगनकी वील नंना छ		रैक्क्विकादत्रत्र मध्या छेरक्स	5.0
व्यामानि छ। (पूरशाम		ইক্ষুবিজ্ঞান	87
नामानि मध्युक बर्दम		जेस्ट्रांख त मर्म छन	৬৬
434	48	উट्ट छन (कांद्र देशक (मध) .
व्यासका छन	99	উটের হ্য গুণ উচ্চু হ্য থ	। (मध)
পান্তবীজের তৈল গুন	• ৩৮	किश्क्रके ज्वा विकान	205
वाखमध्युक मरमत र		उर्भन कम थन (कमवर्ग	(मटथ)
অধ্যাতক কল গুন	96	डिर्शन श्रूल छन	∌€
वाश्रुत्संतित मर्भकान	3	उद्भागमित्र तम छन (कीतः	₹
वारी मधु छन	. 80	नामि (मर्थ)	
আরক গুণ (অরিষ্ট গু		ल्ह्य माध्य विकास	
व्यानकृतीवीख छ। (€ छम माध्य छ व	
आंश्वरत भाक छन	A	উল্ভেদ শবন গুন	3.5
্জাসনপ্তা ৪০ (রক্তর	ক্রির স	উপকু'ঞ্জ গুন	66
- श्रुक्श हमश)	8	छेश ठक गाँर अन	th
नार्गतादेश वर्षका कर्म	3,28	উলোদিশা थन (उर्जनियम	
चाराद्वार्ख पूर (नार		नानि (मर्थ)	
व्यादातीवज्यत्याव श्रवा		উপোকাশাক গুন	\$\$
आचादतत गणि मिन्हा		हैक इंक छन (ध्रन्तवामि दम्ब	*) ·· '
শাধারের হিতু নিরপ		डेक्ट्रक छन (यव कनती व	

Asiera I.

विव े	शेवाम।	নিৰ্বাজী	400
উলুধ মাংস-গুৰ্	308	कट्रेक्कन छन (क्रांकि	(कान कन
उबकात नवन छन	303	(मर्थ)	н
खेबकात छ न	303	क्ट्रेकी छन (मल कश	नी जावि
উন্ধি হয় শুন	6.5	(मच	
উষ্ণজন প্ৰমাণ	29	क्रेवर्ग •	2.0
उक्करम् ध्यमान उक्करमद्भ छन	29	कर्रेत्रम धन	25
-উক্মান কল গুন (বাতামাদি		कर्रेत्रमत मत्था छे	\$ 3.0
कण दर्शाप्तिथं)		करिका छन (लानि	कामि (मर्थ)
		कणेकावीत कन छन (मध कलती
খাতুবি জ্ঞান আহমেন জন	28	(দ্খ)	
খাহুডেদে জল গুণ	40	क के का त्रीय करा छन	20
একশক স্থাত ওপ	25	कमचकन छन (नील	कन (मर्थ)
একশক হ্ৰ গুৰ	89	क्मणीकन छन (स्मीष्ठ	
अक्रमंक बारम छन्	6.0	कब्द्रवर्श	*b
একৈবিকা প্তল গুল		কপাল এবং অফ রগ	
একোগুড় গুণ (ইকুগুড় দে	۹) (الا	कशिक्षनशास्त्र धन	₹ ₩
वर्ग माध्य 🕶		কপিথ ফল গুণ	٠ ي
একাক জন	64	कक अरकाटलव कार	
এক্ষাক্ক ভৈল গুল (চিরাভা	.(4	क्क मर्भवनोर्ग	20
टेखन (मर्थ)	•	1	99
এরও छन উক্রক (দেশ)		কমলা লেবু গুণ কপিল তৈল গুণ (তু	,
वारक टेक्स छन	99		राय जात दरन
ज्राम्या मर्गे छन	ଧ୍ୟ	(मथ)	Fotos (Est)
ধৌরাবত ফশ	93	করেড বেল হাল ক	
७न (ज्रूतन (मर्थ)		कर्ति छन (मछ कर	
ওবধি বিজ্ঞান	8	कर्तिक कन अन	39
গুৰধ সংগ্ৰহাৰ্থ ভূমি বিজ্ঞ	नि ,ऽ४	कर्तक कन छन	৭৬
ওষধ সংগ্রেছের লক্ষ্	24	कटक कि कि कि वि	64
উদালকমধু গুণ	85	ৰকে কিন তৈগ ও	। (विद्राजीन रेजन
छ एडम जन शन	1.0	(দখ) •	
खेल्डिम गरन छन	3.5	क्टक निक कम छन	(জাতি কোশ
खे विका भारम खन	હર	(मथ्र)	
अवस बादवादगंत्र वादस्	2.	कक्ष व अने	P8
उर्माध कन	303	কপুৰ গুন	:47
कहेंगरम छन.	85	क्रमात्र थेन (कृष्ठ प	भामि (मण्ड)
के ठूकका छन	22	कद्मात्र टेडमच्छेग (क्रित्रशामि देज्न
कडे श्रेकन छ। (आ विद्रका		(मर्थ)	
(नश्र)		कर्षाति क्रम क्रश	80

ŧ

10)	
1	-
444	7

**** ******* *** ***

करीत चानि कन छन

वर्ग (मथ)

가여 (F박)

वाक्षन अन

布列目中1年 むり

कलाव्याक खन

कर्षात्र द्रम छन

क ए ही छन

न्या अन

CAA L

事情可愛 对年 电点

ক্ষার বর্গ

(甲号)

कदीवजा उ उप छन

の画書

٦٩

42

۵.

28

23

22

3,0

નહ

১৬

202

क्षित्रहा कन छन (क्यूमर्कक कन (१४)

केंद्रमा क्षेत्र (कात्र विलक्ष (एक)

कभीत्रभूष्ण छन (मधुष्मिश्र भूष्णधन

क्ष्मचीनाक छन (উৎপাদিকা छन

कमाई चामि छन (शिक्लनग्रिन

कनियान छ। (शिश्शेनामि (एस।

কলার গেঃড়া সংযুক্ত মংসের

क्षांत्र तरमर मरधा छेरक्ष

কলেক ৮ গুণ

क (अक छन (क प्रवर्ग , म्थ)

काकरत्रांग छन (कक हे (मध)

ক্ষাকলাকল গুণ (জাভিকোশকল

के हिन्सम छ। (श्रीम कन मध

कारू चत्रकृत छ। एझ कर्न प्रथ यारूमारी छन (मणुक्तानी यासि

क्रिक्क छन (मछ क्रानी जानि

কাকুড গুণ (একাক গুণ দেখ) কাঁচাতে ভুশ গুণ (আমতি ভড়ী

कें हे जा अर्थे के ब्रह्में का क्षेत्र की पर का जनी हेकू, छन 53 কানকপোডমাংস গুন 42 कामवाषा छन् কাম্বালক প্রকর্প के शिवक छन काञ्चिकिक्ता चाळात मर्गा कारररज्ञक छन मध्करनी जानि (म्थ) कारामद्यक छन् 20 कारनी छन कालकामम खन (कामगर्क प्रथ) कालका जन्म शक मध्युक मध्यमात्र वास्त्र छन 90 काल विष्ठ न कालमांक छन বালসহনীয় দেবা বিজ্ঞান কলে ৩ ঋতৃ বিজ্ঞান 64 क नियम श्रम কাই লুক গুণ (কশবর্গ দেখ) কাফেকু গুন 83 क, न्यार्थ। कम राज्य 62 **b**2 कान-नीरश्युक्त मः टमात्र वः अन €3 d 99 কাসমার্চ গুণ काम नर्फ छन (लिल्लाना मि एमध) कि अम्रीक्य अम ৯৬ কিংশুক ফল গুণ (করঞাদিকলবর্গ কিরাত-তিক্ত গুণ (মণু কপ্নী আদি কিয়া হ-ভিক্ত গুণ 24 किनाहे अन किन' हे अर्था ६ इंशिमि मुद्ध

विक्रिक्क क्षित्रका विक्र

नविशि ।

কৈৰ্মণ্ট কিৰ্মণ্ট	প্রাক্ত।	नियंके	- water
किक्रियम कन छन (जाप	गिकन (मधः)	क्छमवीरका रेजन कन	9
क्क हेमारम् अन	44	কৃষদ্ধ তুণ (পিপার	,
क्रिक्रभूक्र छन '	24	কু পিজাত মৎসা গুল	৬৯
दूरात छन (जिल्लामानि	(म्थ)	क्राभत छन छन	69
কুখানা বিজ্ঞান	42	কর্ম অত গুণ	FA
দন্তলিকা গুৰ (লোনিকা	मि (मर्थ)	হুৰ্মা∘স গুৰ	98
কুম্বলিকা গুণ	\$8	কেশ্ড কল গুৰ (কেশ্বৰ	
क्रवतद्वभूष्ण छन	24	ा टलकीर छन (जीतन	
क्रक्म छन	24	कीरकू (पथ)	44-
क्रक्र भूले छन	ಸ ್ಥಿ	(कस्पट छन् , सम्बद्ध त	i arwaz
क्ष्र छेरलन क निष्मा न	ا من ا	ं स्व	1. 4.6.14.3
इयम भूष्य २ त	ಎ₹	रेकम'व अपना छन	t &
क्रिका ७ व	275	- " ए कि म श्रुत (कदीरा	
क्क दिक अन ((म'नाका।	भ (भ्य)	কে'ন কোন দ্ৰহা কোন:	
कूरक्रेकशुच्ले छन्	26	সভিত ভোক্তন বি	
क्का स्मार्थन 🔐	≥8 €	কোরিদার আদি পুজ্প	-
कुकवक छैन (cert निक, म	(K\$)	(कारियाराश्रेष्ट्र) छन्।	_
कून छन (वमत (मर्थ)		व्यामि भव्यवर्ग सम्	
क्रम हत्रमारम	1	কোবিশার গুন (চুক্ত খ	
कुलक्समारम वर्ग विकास		কোল ফল গুৰ	99
द्वतायक्तर है शर्	3n	কোল মক্ত শুন	9%
कूम थर ३४ व्यम	200	क्षिकां व त्रम काम (कू	
ূল্বি সেহা র্লফ র গুল		(उन (१२)	4 -11(4
কুল্ডেদ গুণ্ (হিবতাদি (CA M	ार उप कम श्रुभ	৭৯
che }	•	ক'শকার হন্দ্র গুল	88
शूनम्भ छः	354	কোশস্বর্গবিজ্ঞান	68
क्नवीख भंगा छन	ৰুঙ	কোশ'তকী গুণ (মণ্ডুৰ	
কুলাহল গুণ (গিপ্পান্যাদ	.18)	व्यापि (पर्वे)	
क् निषमात्म थन	**	कार्य समाधन	
কুলেখাড়া সংযুক্ত মংসের	दाक्षन	কৌমার ভৃত্যু তন্ত্রের ম	र्ष ७
43 4	92	को इस नाक छन	20
কুলেচরপুজা গুণ (ক্ষরকা	मि (मर्थ)	कुक्त गांध्य छन	4
কুত্মাগুলৈ জন (চিরভা	म रेडम	কুডার বিজ্ঞান	300
(可寸) • •		कुछक्टकं हिक मांग्य छ।	58
क्षान्त मः गृक मरत्मत्र मा	974	क्रकनीत छन	56
84	42	क्रमद्रा छन	₹°5
रर्गरीय छन (र्युष्ट छ	न (मर्थ),	पर छन (मान मान्	
A Company of the Company			

न्हीलंब ।

শক্তি রাদি তল - শক্তির রাদি ফলা গুল শক্তির বাদি ফলা গুল শক্তির বাদি ফলা গুল শক্তির বাদ কলা গুল শক্তির বাদ কলা গুল শক্তির বাদ কলা বাদ কলা বিদ্যা শক্তির মাল্য গুল শক্তির মাল্য সাল্য গুল শক্তির মাল্য সাল্য সাল্য সাল্য গুল শক্তির মাল্য সাল্য সাল্য সাল্য সাল্য সাল্য সাল্য সাল্য সাল্য	Tanto	भावां है।	, fa48 :	नवाइ।
শক্ষ্ম বাদ্য হল গ্ৰন্থ কৰা জন ১০০ শক্ষ্ম বাদ্য জন ৬০০ শক্ষ্ম বাদ্য জন ৬০০ শক্ষ্ম বাদ্য জন ৬০০ শক্ষ্ম বাদ্য জন ১০০ শক্ষম বাদ্য জন ১০	_	62	क्षेड़ कांब कका जरा शर्भ	222
শহর তান পরির	* -	200	छए ही छन (बरमामना (म	♥)
শবির তান শব্দির		es	क्षण हो छन यह कराती जी।	वि (पर्य)
থল আর্থাৎ কলেকর শুন্ ে ১০৮ থালিসা মংস শুন্ ভ ৬৮ থালিসা মংস শুন্ ভ ৬৪ থালিসা মাংস শুন ভ ৬৪ থালিসা মাং		320	अष् हो क्र .	20
থালিসা মৎস গুণ ৩৮ থানিক মাৎস গুণ ৩০ থানিক মাৎস গুণ ১০০ থাক্তির মল্লাগুণ ১০০ থাক্তির মল্লাগুণ ৪৪ থিচু ডি গুণ (কুলিকা দেখ) গাড়ার গুণ (কুলিকা দেখ) গাড়ার গুণ (প্রত্নী মাৎস দেখ) গাড়ার গুণ (পিপ্পানাদি দেখ গাবা মাৎস গুণ গাবা মাৎস গুণ গাবা মাৎস গুণ গাবা কল গুণ (গাভি তুর দেখ) গার্দিভ মাৎস গুণ (একলক চুর দেখ) গার্দিভ মাংস মাংস বিজ্ঞান ভিল্প মাংস গুণ (একলক চুর দেখ) গার্দিভ মাংস মাংস বিজ্ঞান ভিল্প মাংস গুণ (একলক চুর দেখ) গার্দিভ মাংস মাংস বিজ্ঞান ভিল্প মাংস গুণ (একলক ভুল বুণ) গার্দিভ মাংস মাংস বুণ (একলক ভুল বুণ) গার্দিভ মাংস মাংস বুণ (একলক কুল বুণ) গার্দিভ মাংস মাংস বুণ (একলক চুল মাংস মাংস বুণ (একলক কুল মাংস মাংস বুণ (একলক মাংস মাংস মাংস মাংস মাংস মাংস মাংস মাংস		(甲박)	श्चरोक क्ष्म	255
শানিক মাৎস গুণ শক্ত্রের মজ্জান্তন শক্ত্রের মজ্জান্তন শক্ত্রের মজ্জান্তন শক্ত্রের মজ্জান্তন শক্তরের মান্তন শক্ত	थन वर्षार कालकत्र सन	6 306	গুছাশ্র পশুর মাংস গুণ	4>
শ জুব মজ্জ গ্রন্থ ১০০ শাজ্ম র মন্ত্রা ওব শাল্ম র মন্ত্রা ওব শাজ্ম র মন্ত্রা ওব শাল্ম র মন্তর্কা বির্বা ওব শাল্ম র মন্তর্কা বন্ধ ওব শ্বলা র মন্তর্কা র মন্তর্কা ওব শাল্ম র মন্তর্কা র মন্তর্কা বন্ধ র মন্ত্র্কা বন্ধ র মন্তর্কা বন্ধ র মন্ত্র্কা বন্ধ র মন্তর্কা বন্ধ র মন্তর্কা বন্ধ র মন্ত্র্কা বন্ধ র মন্তর্কা প্রমা বন্ধ র মন্তর্কা বন্ধ র মন্তর্কা প্রমা বন্ধ বন্ধ র মন্তর্কা প্রমা বন্ধ বন্ধ র মন্তর্কা বন্ধ র মন্তর্কা বন্ধ র মন্তর্কা বন্ধ র মন্তর্কা প্রমা বন্ধ বন্ধ বন্ধ র মন্তর্কা বন্ধ বন্ধ বন্ধ বন্ধ বন্ধ বন্ধ বন্ধ বন্ধ	थिनिमा बरम छन *	86		49
পাজি র মদ্য গুণ পিছু তি শুন (কুলারা দেখ) সাজা দাংস, গুণ সাজাতিমংস গুণ গাড়ার মাংস গুণ গাড়ার মাংস গুণ গাড়ার গুণ (পি পুলা দি দেখ সামার মাংস গুণ গারা হয় গুণ (গাড়ি হয় দেখ) সালার কল গুণ (কলাক হয় দেখ) সালার ফ্রন্ড গুণ গাড়ার হয় গুণ (একলাক হয় দেখ) সালার স্থা সালার গুণ গাড়ার কল গুণ (একলাক হয় দেখ) সালার স্থা সালার স্থ সালার স্থা সালার স্থ	थः निक्र मारम छ १	309		
শিচ্ ভ ৪ন (ক্লারা দেখ) নাজা দিন্দ্র গ্রন্থ নাজা ক্রন্থ	भ स्त्रूव मञ्जा छन	3.0	<u> </u>	
সজা মাংস, গুল স্থাজাতিমংস গুল সভা মাংস, গুল সভা মাংস, গুল সভা মাংস গুল সভা মাংস গুল সালার গুল স	था छि त महा छन	88		(पृथ)
য়জাতিমংস গুল গভার জাল (কুডলিকা দেখ) গভার বাংস গুল গভার জাল (শিপালাদি দেখ গাবা মাংস গুল গাবা মাংস গোল গাবা মাংস গাব				22
গভাগতে গুল (কুন্তলিকা দেখ) গভাই মংস গুল গভার থাংস গুল (ধড়লী মাংস দেখ) গভার গুল (পি প্রাণাদি দেখ লাবার মাংস গুল গবা হয় গুল (গাভি হয় দেখ) গবা হয় গুল (গাভি হয় দেখ) গবা হয় গুল (গুল ক্ষা হয় দেখ) গবা হয় গুল (গুল ক্ষা হয় দেখ) গবা হয় গুল (গুল ক্ষা হয় দেখ) গবা হয় গুল (গুল ক্ষা হয় দেখ) গবা হয় গুল গুল (গুল ক্ষা হয় দেখ) গবা হয় গুল গুল (গুল ক্ষা হয় দেখ) গবা হয় গুল গুল (গুল ক্ষা হয় দেখ) গবা হয় গুল গুল (গুল ক্ষা হয় দেখ) গবা হয় গুল গুল (গুল ক্ষা হয় দেখ) গবা হয় গুল গুল (গুল ক্ষা হয় গুল	नक गारम, छन			99
গভার মংস গুল গভার বাংস গভার বাং				et
গণ্ডার মাংস গুল (পড়ানী মাংস দেখ) গান্তার গুল (লিপ্লাণাদি দেখ গান্তার গুল (লিপ্লাণাদি দেখ গান্তার গুল (লিপ্লাণাদি দেখ গান্তার গুল গুল গান্তার গান্তার গুল গান্তার গুল গান্তার গুল গান্তার গুল গান্তার গুল গান্তার	গভগতে গুণ (কুম্বলিকা দে	4)		
গভার গুণ (শিশ্পণ্যাদি দেখ গান্ত মাংস গুণ গান্ত মুন্ত গুণ গান্ত মুন্ত গুণ গান্ত মাংস গুণ গান্ত মান্ত মুন্ত গুণ গান্ত মুন্ত গুণ সুন্ত পুন মান্ত মুন্ত গুণ সুন্ত মুন্ত মুন্ত মুন্ত গুণ সুন্ত মুন্ত মুন্ত গুণ সুন্ত মুন্ত মুন্ত মুন্ত মুন্ত গুণ সুন্ত মুন্ত	গড়ই মৎস গুৰ	69		४४)खन३७२
গভার গুণ (পিপপণাদি দেখ গাবার মাংস গুণ গাবার মাংস গুণ গাবার জ্ব গুণ (গাভি ছ্র দেখ) গাবার ক্ষণ গুণ (গাভি ছ্র দেখ) গারার ক্ষণ গুণ (কাশ্বর্য দেখ) গার্মিন্ত ক্ষণ (একলক ছ্র দেখ) গার্মিন্ত স্থান গুণ গার্মিন্ত গুণ গার্মান্ত মণ্ড গার্মান্ত স্থান গালে ক্ষণী গুণ গার্মান্ত স্থান গাল্মান্ত প্র গার্মান্ত গাল্মান্ত গুণ	शकांत बारम छन (क्ष्म्नी मा	श्म (मर्थ)		
গাবা মৃথি গুল গাবা মুখ্য গুল গাবা ম				्ज
গাবা দ্ধি গুণ গাবা হয় গুণ (গাভি হয় দেখ) গাবা মাংস গুণ গাৱারি ফল গুণ (কংশ্মহা দেখ) গার্দ্ধভ মাংস গুণ (একলফ হয় দেখ) গার্দ্দভ মুত্র গুণ গার্দ্দভ মুত্র ম	श्या मारम छन्	હ ુ છ		
গাবা হয় গুল (গাভি হয় দেখ) গাবা মাংস গুল গান্তারি ফল গুল (কাংশ্বর্যা দেখ) গার্দ্ধভ মাংস গুল (একলক হয় দেখ) গার্দ্দভ মাংস গুল (একলক হয় দেখ) গার্দ্দভ মাংস গুল (একলক মাংস দেখ) গার্দ্দভ মুত্র গুল গাল্দেশকী গাল্দি গাল্দেশকী গুল গাল্দেশকী গুল গাল্দেশকী গাল্দি গাল্দেশকী গ	গাবাছত গুণ	38		পিণালু
গাব্য মাংস গুণ গাস্তারি কল গুন (কাল্মহার দেখ) গার্দ্ধভ মাংস গুন (একলক হয় দেখ) গার্দ্দভ মাংস গুন (একলক হয় দেখ) গার্দ্দভ মাংস গুন (একলক মাংস দেখ) গার্দ্দভ মাংস গুন (একলক মাংস গােল্লেকনী গুন গাালেকনী গুন গাালেকন গুন (একলক হয় দেখ) গাাল্মাজন গুন (একলক ড্বন গুন গুন (একলক ড্বন গুন (একলক ড্বন গুন (একলক ড্বন গুন (একলক ড্বন গুন গুন (একলক ড্বন প্রম (একলক ড্বন প্রম (একলক ড্বন প্রম (একল ড্বন প্রম	श्वा मधि छन	೨೦		
গান্তারি কল গুন (কাশ্রহা দেখ) গার্দভ্য গুন (একশক হয় দেখ) গার্দভ্য গুন গুন গুন (কাশক হয় দেখ) গার্দভ্য গুন (একশক গার্দভ্য গুন (একশক গ্রহা সাংস্কাল গার্দভ্য গুন (একশক গ্রহা সাংস্কাল গ্রহা সাংস্কাল গ্রহা সাংস্কাল গ্রহা সাংস্কাল গ্রহা প্রকাল গ্রহা স্বর্দ প্রকাল গ্রহা প্রকাল গ্রহা প্রকাল গ্রহা প্রকাল গ্রহা প্রহা প্রকাল গ্রহা প্রহা প্রকাল গ্রহা প্রহা প্রহা প্রকাল গ্রহা প্রহা প্রহ	नावा इब छन (गांकि इक्ष प	*)		84
গার্ম ভত্ত গুণ (এক শক্ষ হয় দেখ) গার্ম ভ মাংস গুণ (এক শক্ষ মাংস দেখ) গার্ম ভ মাংস গুণ (এক শক্ষ মাংস গার্ম ভ মার্ম গুণ (বিজ্ঞান ভ ১৬ গার্মা ভিন্ন গুণ (এক শক্ষ হয় দেখ) গার্মা ভ মার্ম গুণ (এক শক্ষ হয় দেখ) গার্মা ভ মার্ম গুণ (গার্মারত ফর্ম দেখ) গার্মা ভ মার্ম গুণ (গার্মারত ফর্ম দেখ) গার্মা ভ মার্মা গুণ (গার্মারত মার্মা গুণ (মার্মা ভ মার্মা গুণ (মার্মা মাংস গুণ হুণ (মার্মা মাংস বিজ্ঞান বিজ্ঞান মাংস বিজ্ঞান বিজ্ঞান বিজ্ঞান মাংস বিজ্ঞান বিজ্ঞান মাংস বিজ্ঞান বিজ্ঞান বিজ্ঞান মাংস বিজ্ঞান বিজ্ঞান বিজ্ঞান মাংস বিজ্ঞান বিজ	भवा भारम स्थ	95		•
বার্দ্ধন মাংস গুণ (একলক মাংস দেখ) গার্দ্ধন মাংস গুণ (একলক মাংস গার্দ্ধন মাংস বিজ্ঞান গালেককী গুণ গালেককী গুণ গালিক গালিক গুণ গালিক গুণ গালিক গাল	গম্ভারি কল ওন (কাশ্মধ্য (मर्थ)		#
দেখ) গর্মন্ত মৃত্র গুল গালেম্বনী গুল গালিম্বনি গালিম্বনি গুল গালিম্বনি গালিম্বনি গালিম্বনি গুল গালিম্বনি গালিম্বনি গালিম্বনি গুল গালিম্বনি গালিম্বনি গালিম্বনি গালিম্বনি গুল গালিম্বনি স্বিম্বনি স্বিম্বনি স্বিম্বনি স্বিম্বনি স্বিম্বনি স্বি	গৰ্ম ভত্ত জন (একশক হয়	(甲寸)		
বার্মন্ত মূত্র গুল বাংলেকনি গুল বাংলেকনি গুল বাংলেকনি গুল বাংলার ভ্রমণ্ডল (একশক ভ্রম দেখ) বাংলার ভ্রমণ্ডল (একশক ভ্রম দেখ) বাংলার ভ্রমণ্ডল (একশক ভ্রম দেখ) বাংলার ভূমণ্ডল (একশক ভ্রমণ দেখ) বাংলার ভূমণ্ডল (একশক ভ্রমণ দেখ) বাংলার ভূমণ্ডল গুল বাংলার ভূমণার গুল বাংলার গুল বাং	शक्ष माध्य छन (এक्नक	गरम		63
गालमकी छन । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	(मर्थ)	•		
গাত্রমান্ত্রম গুল বিজ্ঞ ন ত্ত বিজ্ঞান গুল গোলার ভ্রমণ্ডল (একপক ভ্রম দেখা) সূত ও ছন্তের মধ্যে উৎকৃষ্ট ১০৩ গাত্রভূমি গুল বিজ্ঞান কৈল গুল (মধুকাদি যুগ পক মাংস গুল ১০৬ মুগদি ঘারা পক গোধুন চুল শুন প্রমন্থ	গৰ্মত মূত্ৰ গুণ			इक्पेरिज
गांधात इस्छन (त्वकनंक इस प्रथा) गांधकन छन (भारत्व कर्म प्रथा) गांधक है। छन । भारत्व देश ।	गाटककरी अन	50	्र भूक्य (मध)	
नाविकत छ। (পরিবিভ कत दिथ । यूछ छ छ छ । यह छ। ३०७ नाष्ट्रिक छ। (प्रश्निक क्षि पृष्ठ शक थाना ज्या छ। ३०७ भासाति देखन छ। (प्रश्निक यूष्ठ शक थाना ज्या छ। ३०७ एडम (मथ) ६ यूष्ठ शिक्ष वाता शक शोधन हुई छ मध्				40
नाकिश्व छन वेश ये ये ये ये अन्य वा या छन ५३% भाषाति टेकन छन (मध्यानि टक्त दम्ध) ६ यूड जिस्सा अन्य द्वाधित हुन छ मध्	গাধার ভ্রত্তন («একশক ও	्ष (मथ्र		
प्रशाहित देवन छ । । प्रशाहित व्याप्त छ । । । । । । । । । । । । । । । । । ।		दम्थ -		200
प्रशाहित देखन छ । प्रशाहित व्याप्त अने भारत छ । ५०% एक प्रशाहित देखन छ । प्रशाहित के प्रशाहित है । प्रशाहित के प	गाविश् छन	_	युक्त श्रम अभा अवा वान	
(जन (मध) ह मुजान बाता शक (श्रीधून हूर्न अमध्	भाषाति देवन छन (मध्का	म	युष्ठ शक मारम छन	
	Arman .		मुजाम बाता शक श्रीध्र	
नियाजरबूक मंद्रश्यत वाक्षन छन । १४ विक्षित शिकेन छन । ३३३		छव १	াৰাজত থিকৰ গুণ	
क्षक्ति नयन छन • ३०३ च्लिम यन छन	कार्या नवन थ्रा	Miles	च्राज्य यम छन	
क्षेत्रकार क्षा (काक्यांकि तार्थ) विष्कृत मरवा छेड्सके इन्	केल्यामार करें (कान्सीह	CHA)	। चूरजूत्र मरना एरक्क	200

अवीर (

বৃত্তের সহিত সিদ্ধ মাৎস গুণ ৭২	माज वर्ष क्षेत्र
हैनक कना है छन (कूषाना (मर्थ)	हानाक्षन (जर्क क् किंका (मध)
भाग छन	ছানাদি হুম বিকার জাও ভক্য
हस्तकास मनिकां ड वण्यान ३७	ज्यका ७ ९
हमंत्र मारम छ्रा 💌 🐸	ছোট এশাইচ छन (कात्रदी अवः
हमबी इस छ। (এकलक इस (मर्थ)	ख्रको (म ४ न
हमती माध्यक्षर्ग (এकन्य माध्यामर्थ)	ছোলা গুণ (চণক দেখ)
इन्लाक कूम्प भै रम श्रुव ७१	ছোলাশক গুণ (ছরিমস্থ শাক দেখ)
চম্পৰ পূজা ত্তৰ ১৬	ज्ञान मनार्थन 8€
চাউল ভাজা গুৰ ১০৫	जनम द्यारमञ्जू जनश्रेन २१
চাকুদাবীজ ৩৭ (প্রপুরাড় দেখ)	জ্জ্বাল মাংস বিজ্ঞান ১৬
চাদেরি গুন ১৩	জন্ড দিগের শরীরে ধাতু এবং
চালতা গুণ (ভবা ফল দেখ)	স্থালেব লঘু গুৰু বিজ্ঞান ৭০
किएम मर्म छन ७৮	ज्योत ७ व
डिक् ष्णा मश्त्र छ ।	জ্ববির ফল গুন
कि किमा (यदन नदम अन ७१	জৰির শাক গুল (পিপ্লিয়াদি দেশ)
হিডা গুণ (চিত্ৰক দেশ)	জমিত্রী গুণ (জাতিকোশ ফল
किखक छन (शिश्लानागाम (मध)	(मर्थ)
চিত্ৰক গুণ ৮৯	व्यविषे छन् । ३२०
চিপিটক গুৰু ১০৭	জন্মন্তী গুণ (তর্কারি দেখ)
চিশিটৰ গুণ ১১৪	জন বিজ্ঞান ২৩
চিপিটক পরামান্ন গুণ ১০৫	জলতাহন করিবার কাল নিকপণ ২৬
চিরাতা গুণ (কিরাত তিক্ত দেখ)	जनाजू मत जन [*] धनं (चाञ्न्न-
চিন্নতাদি তৈল গুল ৩৭	(मः चंत्र छल (मर्थ)
हिल्लि छन (उछ निवक ज्यानि (मर्थ)	অলের বযু গুৰু এবং দোষা-
हिलिनाक अर्थ के	শ্বেষ কথন ২৫
_	জ, জলগের মাংস বিজ্ঞান ২৫
हुम्हे वा नि श्चन है।	জ্ঞাতকোশ কলবৰ্গ গুণ্
हूर्वत्र छन ३३७	জাতিকল ওল (জাডিকোশ কল
(हरबरम छन ७५	(मथ)
हगनाको छन (हुछ, जामिरमध)	अपूरुभवी (गानिकामि (मथु)
हारा परि छन 💮 😕	कार्रित्र कम श्री
हाग इब छन्।(हागीइब (मथ)	आध्र भी ध्राप
हांग माध्य अन (अल माध्य (मध)	वांत्रकन छन् (व्याजिदकान कन
हाराष्ट्रत कर	े (मथ)
हार्गीयक संब	विश्वनन्त्रभाष्ट्रम् धने
As the as the as	कींद्रके के र क्यांतिकांति (मर्थ) के

· [44'8	नेवां का	বিশ্বতি	<u> শ্ৰাক।</u>
स्रीरकी क्य (हरू क जानि	(中旬)	डानकद छन्	b \$
कोरको छन	20	खानमञ्जा छन	3+4
कोवको देवन छन (हिन्रजानि	देखन (मध)	िक जनात् छन	্ ৮৬
नीत्रक छन (निर्नेशनामि ((म्थं)	ডিক্তৰ গ	50
क्योद्रक धन	. 66	তিক্সন গুণ -	22
खाताकन (बोतक (इप)	t	जिएक माथा छे १ क्र	200
জ্যোৎসাঞ্চণ	20	ভিতৰা উ छ। (ভিক্ত প্ৰা	द् (मर्थ)
नावनाव जन छन	34	ভিত্তির মাংস গুণ	49
্ৰৈঙা ও। (কাশাতকী দে		ভানশ ভৈলগুণ (চিরাতার্দি	टिक्म (मर्थ)
5 5 49 6 7	60	তিম্পুর কল গু।	60
छेडन कात्र छ।	202	जिनकन्दामित्र छ।	202
श्रादादनद् कन छ। (माजून		তিশ গু।	48
छ।वादनत्र मच्छा (वीकश्व	कामित्र	ाजमी खन	44
मक्का छन (कथ)		ভিলপণা গুৰ	64
(हेणज्ञाध ्य) छ।	৬৭	कामशर्ग का खन (निश् भन	गर्जाम (मथ)
1481	94	डोनभी छ।	49
ভক্ত গুণ	02	তুবরুক ভৈদ শুগ	• ৭
তক্ত বিজ্ঞান	92	তুবরক কল ও।	6-9
্ৰক। সঞ্জা ক	2.9	पूर्वी जा म रेडम छ।	৺৮
किलागाना उपरमा सन	94	जू यामक श ।	85
जज़ारगत जग खन	25	তুলদা গু।	202
ख्यानक जामित्र खन	>2	७ अभव छन (क्लांत्र वि ए	4)
उठ ्यक छ।	\$7	(जजून मरयूक मररम) त छ।	99
	27	े छन्। भक्ष था भाषा (वात्र छ।	220
कत्रम्भ छ। (भाग इस रि	*)	टिजनश्रक मार्न छ।	2.0
क्रके क्रका छ।	C 00	टेज्डा विकान	وه
्छक्री। त्र थः। (श्र्नर्वर्गाम (व		(जगाक)म छ।	78
छक्ता छ। (रूक्त्र्वानि	6 \$ 4	रेश्रमक मार्ड मिष्मएरम	র গুণ ৭২
क्यांति (मध)		त्यामन कन छ।	. b.
ভাগন্ ইক্তা	29	खश्रा	.5 . 2
ভাৰ্ন তা	376	वर्ग पाष्ट्रिश	b-30
जामञ्जूशक् छन	18	ज्यम् कन छ।	49
ভাষু লপ্ত ৪৭	2230	खर्म रेडन छ। (हिन्नाका	f
जाम अर	308	टेडन (इच)	
कानामि कनदर्ग	b-5 -	वक्गा छ।	ୃକ୍ତ
ভালু স্বাটির স্বশা গুণ	. 63	হৰ ভূৰিলাৰ শানী ধান্য	છ્યું હર્
罗(本) 年,其 為 代	, +3	मध्यम् मध्या छ।	er:

मधि विकान	••	নাগকে
দ্ধির মাত তীন	૭૨	CT
मधित्र गत श्रम	45	नाग शू
मधान छन्	3.5	নারজ ব
मस्विन्नोष्डि हेक्दरमर धन	82	ৰার জা
मखी उन छन (वृष्य जानि ह	डग (मथ	নারিছয
मगविध जवा जतात्र जिन्ही	324	শারি হ
দশ্বিধ জবাঞ্জণের জিলা	325	नाति इ
म । जिस्सा मर्गा छन	89	नातिद्व
माज़िन ७ व्य मगरकत्र यूग छन	3.6	নারিং
माष्ट्रिक कत अन	94	(3)
माष्ट्रिका स स्थ	304	नादिदन
मानमधु ७ व	8.	নারিকে
मियानजा श्रम	36	नात्रिदक
मिनात्राख्त्र भर्या वर्ष अपूत्र (ভাগের	ন[লিক
কাণ্যিকপ্ৰ		ৰিকোচ
मीर्शव हे कू अन	82	平河
হ্য বিজ্ঞান	20	নিচুলফ
হংশ্বর গুণ	24	निम ध्या
হ্ ফর্ সর গুণ	93	[नचाम
इत्यत मत्या छेरक्ष्ट	وعد	নিম্কল
मियम।क (जन शक्त (जनत रेड़।	ी (मृथ)	নিয় ৩
खरखो (जन ६० (भूष आम	रे अन	भिष छ
(দেখ)		ান্থপুস
ত্রাকাপানক গুণ	222	રહ ૧
进一年 李月 卷月	b'R	নির্দ খ
ভ্ৰাক্ষাদি কল ৰূপ	bz	८म्
अञ्चन कन छन	b9	শিসিদ্ধ
ধনির। গুল (আদ। কুস্তব ক ও		নাপকৰ
शिक्शंगार्षि (मर्प)	•	नीयूक्ष
थानग्रजं छन	8>	194
शादान्य अन	278	नोनश्री
न टिमाक छन (उर्जु निश्क मि	4)	्रम र
नमात्र जाग छन '	20	नौन ए
नमीकाण मध्यानर्श "	9≰	- CHA
नम्। जार्ज मरा नद्र छन '	51163	नीनर्भ
न्द्रीक्षन (इक नामि मन)		नुजन क
and an area of the state of the	•	4-4-

1	14141
নাগকেশর পুষ্পাঞ্চণ (নাগ পু	**
(प्रथ)	
नाग भूष्य छन	29
नांत्रण कम श्रम	92
नात्रका (भव् छन	99
नातिक्य छन्	53
নারি হুমের দৰি গুণ	•2
নারি হ মর সূত গুণ	O.E
नातिर्वन जन श्रेन	34
नातिरक्व देखन अन् (कित्र जा	T.
(उन (एथ)	
नादिएकम कम छन	P.2
नातिर्कण सण्का अन	200
नातिरकम भेगा छन	45
नामिका भाक छन	2.0
নিকোচক কল গুণ (বাঙাশা	7
क्ल (इच)	
मिट्टनकन छन (वाजामानि का	
নিম্বোদ্ শুন্	30P
नियाम रेजन रान	89
निष्कत अन् (क्रिक्शिक्त का	म्थ)
নিম গুণ	20
भिष छन (चित्रिके (एस)	
नियभूका अन्। तकत्रकामित	dest.
थन (१४)	
नित्रम ७. ७ इ छ। (४९मिछका	40
(म्थ)	
নিসিদ্ধাপুত্ৰ ওণ (সিজুবার	(甲甲)
न्। यक्त धन	46
नीक्रम्मप्रभा छन (क्राना	-
द्वाच) •	
नोनर्भेष्यपूष्ण छ। (उदलनपूष	3
्.(सच)	
नीन एक अन (क्रूडि जानि रेक	5 cq
ु (मथ)	
नीनरगात्र रेक् अन	83
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	310

प्डीभव

मिर्च ं छे	প্ৰাষ ।	নিখ ট	6月1
নৰ্ন ভঞ্চলায় জন	3.8	পাকা হেঁতুৰ গুন (পক	ভন্তি(ড় দেখ)
নূতন তথ্য লায় গুণ নূতন মদ্য গুণ	89	পাকিমকার গুণ .	\$ 202
सुजन मधु अन	80	পাকুড়ফল গুণ (সীরত্ব	क कन (स्थ)
देनगानी हेकू छन	82	পाट्टान छन (मछ् भनी	(मथ)
न क हेक्ट्रम छन	82	शरहोनश्रुष्टा छन	26
পক ভিডিডিফল গ্ৰন	95	পार्किन मश्टमत्र छन	bt
প্রকৃত্যের দৃধি গুণ	رد	পানী আমড়। ফল গুন	99
शक मध् छन	80	পাণীফল গুণ (কন্দবৰ্গ	ও স্কাটক
পক্রসঞ্চাত শীধু গুন	34	(দেখ)	•
भटिंग छन	20	ণাভিলেবুৰ গুৰ	90
शद्दोनभव मध्युक मश्रम	T	পাদীবৰ্গ বিজ্ঞ।ন	98
वाक्षन छन	93	পায়স গুণ	3.8
পত्তत्र अप (व्यानिकामि व	(4)	পারাবত ফল গুণ	96
ाथ) मारम	33	পারাবত মাংস গুল	63
পথ্য কলাই	(de)	পাক্ল গুল (সপ্তলা দেব	()
প্ৰ্য শাক	22	পালঙশাক গুণ পালক	(मृथ)
প্ৰস্ফল গুণ	52	পালকাশাক গুণ (তত্তি	नयर्क चामि
পদাপুত্র গুন	>t	(मर्थ)	
পদাবীজফল গুণ (পুষরবর্ণ	है. कल(म्थ)	পালন্ধণাক গুণ	22
পায়ু বিভান গুণ	30€	भागम छन	215
প্ৰম্প বিজ্ঞান	৬০	পিচুকল গুন (বাতামাটি	रंकन (मथ)
পর্বিমাশংস গুন	ঐ	পিতপ্রকোপকর দ্রব্য ব	
शर्भा हेक छन (मण् केनी	न्मानि	शिवालू क छन (कम वर	र्ग (मर्थ)
(প্ৰ)		পিণালুক ওণ	৯৮
अर्था हेक छन	20	পিতপ্রকোপকর ক্র্যা	छ जगानि ३ १
পরিতাজা অন	4 353	পिও वः भगनी वर्ग	5 6
পরিবেশনীয় পাত্র বিজ্ঞান		পিণ্যাক এবং তিল ৰুল্ক	ইত্যাদির :
शलव छन (क्लीब्रह्मणामि		/ 399	29
পশা अन (शिक्तिला मि (न्थ)	लिश्वगामि वर्ग छव	. 64
ननाम सन (निम्मानापि	(म्थ) /	निर्मानी छन	. 69
প্ৰাণ্ডন্তু গ্ৰন	20	निन्ना का मध्कना	
भनागमां डेस्टिन छन	99	শিরাল ভৈল গুণ (চিরা	। भारि देखना ।
श्रमामामि छे छिन वर्ग	۵ ،	(मध)	•
गगाम (छम छन (मह्रकारि	में टेडम	পিয়াল ফল গুন (রাজা	দান ফশ
(मथ) 🖟	•	(न्य)	
श्रुप्रवेषक छन	. 50	निवान कन छ।	96
श्रास्त्रक भवर क्लिक्स क्रि	4767 232	शिवान वक्ता छव	5/8

নিৰ্ঘ'ট	প্রাঙ্গ	বিশ্বন্ট	প্ৰাম
শীভবিণ্টি গুৰ (লোনিক	कि (कथ)	धमह मार्ज छन	, &o
भीगरेकन छन (हिंद्र अपि		প্রসহ মাংস বিজ্ঞান	80
श्रीनृक्त छन	e.4	अहीन व्यंभनक कत छन	96
भू जियर मा स्वत	એક્	क्षतमाध्य छन	68
श्चनवामि छन	22	शिवगारम विद्यान .	98
পুনর্বা গুণ (বর্ষাভূ রেখ)	मही छन। इक्कू आमि एम	
পুনৰ্বা গুৰ	\$3	क हों। इस	20
পুরাতন কুল' গুন	49	क क्षांकल श्रेत श्रेत्रमक कल	
পুরাতন গুড় কুন	ટ્રજ	শ্ৰু বিজ্ঞান	98
পুৰাজন সূত্ৰ ১১	~* **	, , ,	bra
श्रीकन लग्ल १४	388	फर, प्रारम किंग किन अप	ব-
श्रीर कर में में हों। " न	108	वन छे त्रा छेन्सरक	उ ङका
श्रुवर्ण्य १५,	w ₂ sq.	477 600	220
双京作品 如	Po to	क नहीं नरश शब	હ છ
· 本生、美、土土	. .	(一一) 清 蒙蒙	3.5
र प्राथा भ		· 下写 海子 题》(「FI. FP)	मि (मर्थ)
ध्लन्दर्श	> 唯	ा∘ नि ॰ रेक्ट्बटमत छन	8\$
*** 	b j	कर्ण । म अन (क्रूबिक्स	(१म (मच)
্ৰতপ পত্ৰ-ফল, লাল এবং		ं नक हेकू कन	82
কিরপে গুৰু এবং কির	ल ख्रांते ।	বংশকরীর প্রজা এন (ক্ষ	वकामि (मर्थ)
ুলভয়া কর্ত্তব্য	वर्द	बन्मकरोत छन	20
পুইশাক গুণ; প্ৰাক্তকা	F4)	বংশকরীর গুণ্	29
श्रीकन एन	₽8	दक्ष्र्रक्ष छन	þť '
পুত্ক মাংস গুণ	ક શ	বৰপূজা গুৰু (আছে পুজ	
পুভিকরঞ্জের পত্র গুণ	38	বকপুজা ভৈদ্ঞা (এ)	ক্ৰিকা
প্ৰতিকা গুল (চুৰ্ফ আদি ।		टेडम. ५४)	
পোতিকা গুন (পিপেন্যা	मि (मर्थ) 🦼	वक्त यना श्रा	84
পোতিকাশাক ওন	ه هم		હત
পোত্ক ইকু গুণ	82	বুকুল ফলগুন	pre
(भि. जिक मधु छन	چو	বলী সমূহের পৃথক পৃথক	बञ्जान
প্রত্রদমাৎস গুন	≥8	শ্বিজ্ঞান	229
विञ्चान विष्यः न	*	वहूक छन	24
बार्डा ए छन (.मण् कर्ना	ाँ ज्यामि -	विकिक्त अर्थ (कर्ने ब्रह्म क	म (मर्थ)
দেশ)	ı	वृद्धेक श्रम	202
প্রাক্ গুণ	29	वैध्माम्नी अन (श्रानिश (
विভাতে अभी कि रमवन श		वण् मृत्युक मश्रमत वाक	
ब्रीगरै ४९ (ठूक, चाहि ११	₹) .	द्रम्त्र यन श्रम	

निर्च '	পর্বাক।	निर्च' छे	
वम्र छन	• 99	वामकभूष्ण छन (त्रवन्त्रका (प्रव	4) .
मनगुमा छन	40	नामक कन स्थल (महें त रक (म	
यवा कृत्रवन्त्राई छन	€ 8	वानी हेश्रवन छन	. રક
यर्थि मरुमा छन	, 69	বান্তক তথ তও লিয়ক আদি	
ৰৰ্ষাভূ গুৰু পিশুপুৰু	(पि (मर्थ)	বাস্তক শাক গুণ	23
वर्षाष्ट्र छन	64	বিকৃত অস গুণ	₹8
वक्ष छ।	30	বিটলধন গুন	300
रक्त छन	20	বিভক্ষ কল গুৰ	৮ 8
বয়ড়াকল শুন (পক্ষ	क्न (१४)	विम तिकम छन	અહ
बहाइक्स छन	۵۵ ۱	विक्षीकरी मक्ता अन	b ·t
वत्राष्ट्रमाध्य छन	6.0	विश्वाकिका छन (ठूक जानि (
यमा (मन अवः मक्क	विकान ७৮	विश्वीकम श्रुत	b3
त्रभीत कन श्र	F0	বিশ্বীফল গুণ	P.3
वस्यारम अन	65	विजुणाकामि छन । श्रूव्यामि एम	
বজ্ঞ ধ'রপ	31	विरल्भव मारम छन	\ \ \\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\
बटब क्षा देखन खन (ति	इत्रजा निटेडन	विकास संदन्त विकान	90
দেশ		निम स्मन छ।	375
বংছতা কল গুৰ	98	বিষ্ণির মণেস বিজ্ঞান	49
बर्ड ड़ावील भना छ।	9 4	निव छन (कष्मवर्ग (मर्थ)	- '
বাইন মংসা গুণ (বা		निय छन	৯৮
স্বাইন মংসা গুণ	66	बीक्र शूरक मि चड्डा सन	bK
বাক্সীকরণ ভাস্তর ম	4 8	(रत अन (निश्ननामि (मध)	
वादेश्वरमा छन	89	বেন জ ভ ডগা ওদ	৯৭
वाहे। अन	330	ৰেতেৰ ভগা গুৰু (বেজকবীর	দেশ।
ৰাভসংশ্যনী ৰগ	۵۶ ۵۶	লেতে পাক গুল (ব'স্তুক লাক	
बाक मानि करमर्भ	62	(राजकती त छन (मधुकलनी ना	-
ৰাদামকল গুণ (বাড	. 1	८ (मर्थ)	",
(मर्थ)		'বেত্রকরীর গুণ	స్థిత
बालीत सम क्रम	71.6	বেটুডর মর্মা বিজ্ঞান	3
বাপীকাৰ মৎসা এৰ	669	(बर्त मधुना छन	ં હવ
বাখনহ জী গুৰ (ফঞ্	रम्भ)	বেসবার গুণ	309
याननी जनाव छन	6.6	टेवमण छ।	358
ं य ब्रुष्टीरकोशकत्र कार्व	्र क अवार्षि ३१	द्याद्राम मल्दमात्र छप (शार्किन	মৎস
वाञ्च । ४७०१०।	ا ھ	(मर्थ)	
वाडाक् अन (में क क	ाभी जामि (मेथ)	वाक्षन छ।	3.4
वाडाकी छन	. 20	वाश्वन श्रीकद्रव	ં 🥳
वाकाना छन	हर राज्यक्ष ३३	कामान छन	30
	-	•	

ए ही नज

নিষ্'ট	পত্ৰ হ	নিষ্ঠ	প্ৰায় ৷
ব্ৰহ্ম কৰ্মনা তথ (ৰত্	कशनी जामि	मरमात मरधा उधिकाक	200
CH4 P	4 1	यध्राष्ट्र का जनी श छन	84
जीशीय ना अन	£2.	मधु रिष्ण न	َ ۾ ف
त्रवाणि भूष्ण वर्ग छन	>€	मधुत वर्ग	28
রব পূজা গুণ	, 24	मधूर इस छन	20
त्रशिक्षम छन	28	मधूत द्वामत माण छेरक्क	304
রুহংকুপ জল গুণ	29	মধুলিকাজাত সুরাত্ত্	8%
রহতি গুন , মণুকপনী	आं कि (क्थ)	मधुनकता छ।	89
রুহতি কগ গুণ	20'	मधुन्धि छन	৮৯
রকাদনি গুণ (ফুট্ আদি	(नथ)	मधुनिता गामि छन (किन्मिन गा	मि (मध)
ব্লকাদনি গুণ ু	\$0	मध्रानिता, अवर करीय छन	અહ
खराकन छन	e by	मधुनिला । पि श्रेष्ण छ।	24
ভল্লাভক গুন (চুচ্চ আদি	(मथ)	মধু শিত্র পূজা গু।	÷t
ख ल्लाङक, टेडन छन े	99	मधूक कल अन	62
ভালাত্ত্ৰ জন	304	(62
ভ ক্ৰ ইক্ ওন	82	মধক পুজ্প জাত ফানিত গুণ	89
ভূতবিদা ভিংস্তা মন্	હ	মধুকাদি ভেল 😝।	७१
ज्व, व छन (शिक्लाना मि		নপ্ত ন্থ্ৰ প্ৰ ক্ষা)
ভূত থণ	(d)	मध्मत छन	89
जृ मृक्ष' ७ छन (कष्परर्ग	(可對)~	মন্নাফল গু । (বা ভামাদি	(দ্খ)
जू में बाज छे छिम श्रेन	29	मञ्तम भ ७०	48
ভেডার হগ্ন গুণ (মেধী হ্য		यिक कु (लिक्क् ना मि	
(क्षमानी मार्ग अन	4.2	মলিল প্ৰক্ৰং ওণ (মান তী	अंक्य
ভৌমজন গুণ	₹8	(দেখ)	
जामर नधु छन	رد	মদলাদি ঘুক্ত ভাগুল গু ৷	250
ज् ष्टीस छन	30t	मस्ब कनाई छ।	6.5
म अर्थ। छन (मण कमनी		महाद्वम खाउ बरम छ।	55
	मर्थ)	महिस भ ९ म छ ।	69
মণ্ডপ্ৰী আদি গুণ	3	मार्ज शकरन	. 30€
মত্রপণী গুণ	<u>.</u>	मारम विष्ण न	- e y (
মত্কপনী গুন	89	बार्रमद्भाषा प्रकृष	302
মংস্থিকা খণ্ড গুণ মংস্বৰ্গ 4িক্ষান	9 €	পথ চসর ঘূব গু। মাগুর মৎস গুণ	89
बरमवरा १२००१म बरमार्गाम मध्यकुर बाधान्त	1	म जूलुक कम छन	99
गरन)।। ग नक्ष्युक्त नाजरनत्र गराजद्र व्यक्त खेत्र	७५ ७५	म। म। त कम 😻 । (त कू र कम	
मर्मित्र याचे छन	42	मः ही क मना छने ः	88
মহ ওণ	330	मानक धर्ग	. \$5
भेग्रे (दे ण [न	88	मनिक ७६ (च ना मिनर्ग (म	

म् ही माज न

ीं तर्भ के	4 2 1	নিষ্ঠ প্ৰা	* 1
मु:मकर् छ । (भागक (स्थ)		मुगमाएकाहि म'र म छ।	49
ৰাচ্য মূল গুৰ	40	मुनाम छ। (कम्पत्र (प्रथ).	
मानको भूका छ।	20		. 89
শাষকলাই সংযুক্ত লিপ্তক গুৰ	275	यक्क प्रश्न कन छ। (क्ली ब्रह्म कन	
माधिय शुच छन	0 E	चन्न विक्री जिन्हे क्तूद्रमत् थ्य	. 82
भाविष मधि का	ି ୬୦	चन खन	+ 2
नाहिन इस [°]	25	यत. (क'अ धतः कृत्रदर्वत यूव छ	
মহিষ মূত তেপ	85	वनकान सूर्र अन	88
माकिक गध् छन	80	यत जिल्हा विम श्व	9P
মিরিগ মৎস গুণ	89	মাৰ্মণ্ডেল	3.8
মালিত জবা	21.	यत्रक्ताता मरन् छन्	305
डेक' मि छ ।	258	चनामि छन	+8
মুদরা আংশিত হংল	€ ⊃	ঘন'স শক্তিৰ গুণ	80
স্থাপার আমনকের যুদ গুণ	2.4	মান্দ্রশীয় শাক বা গুণ	६०
মুদর্যুব গুণ	3-9	যুদ বিজ্ঞান	309
गुरशे मरम छन	94	(য বে বেশা গ জেক বলেভেয়	७९
মুক্ষ মপুষ্প 😵 । (রক্ত ব্ল কাদি পুণ	가 (파 익)	সে যে রোগো দিশি সাব স্থ	૭g
মূর বিজ্ঞান	8>	বক্তকাঞ্চন প্ৰসেগুল (ক্বিদ'র ৫	平 划)
মূলক গুণ (পিপ্পাল্যাদি দেখা)		रक हमान छन	34
म्नक छ।	42	্বক্তৰন্থণ (ভিল্পণী দেখ)	
म्नटकड् यूव छन	2.8	বক্ত ঝি'টে গুল (কুলবক দেখ)	ı
मूना मः युक्त भरतमत वाक्षन अ		रकात्रका निश्रमा नर्भ	at
मिमयोरम छ।	હર	রক্তদজনা পূজা গুন (মধুশীএ	
्राविमारमञ्जा (उत्रजामारम		श्रुष्ट्र (मश्)	`
মেৰমূত গুণ	40	; दक्क स्नुक छन (तस्म वर्ग (नर्थ)	
(ষ্ ষী স্থ ছ গুৰ মেহীদ্ধি গুৰ	28	বশুন গুণ	62
(मरीकृक्ष छ।	97	রস্তাহিত মাংসের গুণ	<i>و</i> ه د رر و
रमधून छ।	22	রসায়ন ভল্লের মর্ম বিজ্ঞান	
, रिमण्डब चामर छ ।	39	রসূলি। প্রকরণ র্মাৎ গু (ত্রপু দেখ)	2.5
মোটা এলাইচ গুন	86		.\$0 9
ट्यामक छ।	329	त्राणाचाल्यक्षन(कमनर्गद्वतकः लूव	
श्रीचालू १० (कमत ६ मशालू व	234	त्राक्षकरक छन	38
(म) हरून छन्	, ε44.) ₽ \$		60
শেলফুলজাত কাতিত জুলি ম	रं क	त्राक्षिका श्रुन (लिश्लुना कि तिर	
প্ৰভাৱত কাণ্ডি (মুখা)	a, r	द्रावि जागद्रभ छन	26
স্থানাতি গু।	. 44	द्रीयन्दमा छन	
इग्बिम् म, ६म् छन	. 53	क्क्मारम् ७ ।	W. 2.3.

मृहीभज ।

· (\$46)	शकाय ।	मिर्च है	44 f P
क्रभा धन	203	मजावतीकम छन	
दिलेखिन छन (बहुत (बहुत	न (मर्थ)	नमी कन छन (मित्रि जिक्रा	मा म मिन
त्राभाषि त्राभा भागा छन	42	भगोकन छन	64
(तामक नरम छन	, 200	শর্করা ৪০	1 85
রোণিত মৎস্য গুণ	७ ₹	नलक मारम छन ।	* 63
मकू हकन छन .	96	भागार्ख उत्तर मग्रा विकान	*
লভাৰ জুরিকাফল গুণ	18	শস্ শ ওব	3:2
भार क छन	520	णनाय, ६म छन	90
अवसम्भ ७१ (काडिएक न	ह (मुच्च)	ममा छन (ख्रभूकम छन (मर	1)
yr, r	રૂઝ	मना मरपूक वर्णम वावन	थन नद'
^९ यम् व ^{८१}	120	4 × 4 4 4	20
^१ । तम वर्ष		न के देशके क्षेत्र	Soc
'त्र्वित्रक अ	وي	भा क वर्श	> C
नवटन्त भा ति । प्र	ا د ه د	। भाक मध्युक मल्यमात्र बाध्यम	5. hB
3 % र कि प्रेम्सिस (40	}	न(एकर भर्ध) संस्कृत	200
मांड क्षत ' मन'तू का म		শাকর শার্ ওপ	84
का छित्रत शामन दिल्ली मरा	इ.स्ट	" प्राप्तिक । अवस	220
大家 阿爾 F	44	ना,शह्रक कम खन (ज्यापुरन व	Por
माज ३२०	228	(भर्थ)	
नाजम ७ १३ व	300	শাব্দ ওণ (চুচ্চু আদি দে	(थ)
माञ्चलक् सन	ا 8 د د	नावागात्रका छ। (देन।वन।	și.
लावगरम छा।	e 9	न्याम श्रल्म (मर्थ)	
नानक्षण छन (कर्ता । छन	(F)	• १ में • . जुन मम् । वे छ। न	2
বেপত ভাগিক অনু 🗥 ,	308	सावाबाना यान	45.
শোনিকাদি বর্গতন	>8	ामाख्य स्वत (। भारत्यामा। म तम्	
मानिका भाक धन	58	મિલું છા,	
-नोर् छ।	2 5	3	وم
भक्त मरमा छन्	৬ ৭	िना इस्त क समा (क्यों इस्क व	4 al
मध्याःम छन्	**8	(44)	
मधान्त्र उंत	RG	শীণ্যত গুণ	44
यक्त मेरमा छन (नकत पर्	गु (इथ)	मक् । वस्काम	8>
भक्न भरमा छन	3030	केल करकामक बाध्य छन	48
, भग क्षन (इक भागि (मर्थ)		० । छन	69
भग छन (हरू भागि तम्भ) भा श्रुष्ण छन (द्वांतिमोत्र श्रु	(भ्य (म्य)	, अस्मी मायुक्त मद्दमत मान	4
चनवारकत्र १७० छन्	49	84 3 3*	71
भाग्रात रेक् छन	182	एकपूर्ण नव्युक्त मर्द्रम् द।	所可
भड प्नी क्ल २५	. >5	031 N 04	3·#
अणुष्या अन् (कंप्यूनर्ग (नव) 2 10	मूलक् मरुगा छर्ग -	97

पूरीलंख ।

প্ৰাস্থ	নিঘট	刘祖[年]
वर्ष अर्ग (हुन्ह व्यक्ति (मक्ष)	সভাহ প্রস্থা গাড়ীর হয় এং	اد.
दलात् विष्युन ३		0.
क्षां विकास स्था १	 मगुजका ७ मश्मा मर्भा 	63
শুলাগৰা ভৈল গুল (ডুম্বি আদি ভৈল	সমুদ্ৰজাত মংস্য গুণ	60
্ৰি (প্ৰ')	সমূদ্রের জাল গুণ	29
क्षिकक्षण। छन् (श्रृष्ट्रकल (मध)ः	मिथारम छ।	63
	৭ সমপ্রামার শক্ত, গুল	228
	न निर्माय भारत एक गाम छन	ક્ર
	৪ স্পাহশান বৰ্গ বিভান 💪	222
'अ न्यमर त्व अन (। १९१७ भगानि । मण)	मध्य थ।	•
अपूषाहिक श्वन (कस्पर्ग (६५)	भवेश वाक अन	৮১
শুসাইক ভণ ১৮	1	96
४.३ च। वि ख्वान		৬৬
শ্লেমাতক ফল ৬ ব		
শৃত্ ঋণুব সভাব (১ছঃ,ন		
ষ্ড্ৰা । বৃজ্ঞ ন		
যডরস বিজ্ঞান ২	০ সরে বর ভড়ড গজ;তশংস গুণ	७৮।५৯
ৰতিশান্য গুণ e:	সংবাৰবের জল গুণ	ર
স্খিনা ভৈশ গুন (হুদ্মি খাদি ভৈল	मयम ट्रेंडम खन	39
(দ্ধ)	সিতাকী গুন	29
সংস্ত এবং অসংস্ত যুধ ৩৪৭ ১০	চ সিস্কুর'র পুষ্প শুন	20
मः नभेभी जवा कथम 📉 🔩	সাখা তকাফল গুন	৭৬
मर्दमाधनो ज्वावर्ग (दक्त)	नामक अन	308
সকল প্রান্ধ আক গুল •	त द्रशक्षक (शिल्लेन) पि (प्रक)	
जिन्म धानात थारम त्र छन 🗼 🚓		24
मक्ल श्रीकात थारनात यूर छ। ১0b	, रिनगन्नकथन (मधकल्बी जा।	P
স্চীশ্বি গুণ শুন	(निर्थ)	
माजीन छन (मणु कलानी कानि	श्रीन्यम् भाक्सन	42
(मर्थ)	অপারি ওণ (পুগফল দেখ)	
সভীন কলাই গুণ	True falogons net 1 7 de fe	न (म्थ)
সভান শাক শুণ . " ১১	क्य वर्ष अवस	202
সাদ্যোজ্যত নগনীত গুৰু	C Street as 2 / const	
मादमार्गदर्शकां वा अव		303
मृत् ७१	STEROL RIAL For DOLLARS	
मखना कन मधुकलनी भाम	হয়ৰ গুণ	55
(मथ)	শ্বঃস শুণ (সুরুষ, শুক্তক এবং	
मखना रेडन धन (जूबि आमि रेड्न	्र पूर्व (सर्व)	4
(1 %)	प्रतमा के । शिल्लामि तम	

ernal,

विर्च है	প্ৰায় ৷	मि र्य के	POTTO E
(वम छन	46	र तो जनीवी अभग छन	
(বা-গুণ •	48 ,	হরিমস্থাক গুণ	>8
(त्रामव छन :	80	र खिनी गृङ छन	10 K
ह्दास्त्रक्ष अन	26	क जिल्हा अन	• 2
ह्रभूतीमाक छन (छ ने ":	(m=)	शिखन हम स	\$ 5
हेकू छन	8	\$ 7.420	t o
वर्ष वली टेडन छ। (रिज	34 Fr	त ता का अवन्ती	८मथ)
है इन (म्थ्)		(((NEW CH))	
इत्न कि किन्ति । ।	1 (F ,	- 4-1 (fer 1 1# (H*)
स्रम राम	37	1-84 541	P P4
সেহ কুল দল		कार्क व्यार्थ कर सार्व	
टेमसा मर्ग धर्ग	20		, .HQ)
्माम्। निद्या शक्त नः ई द मह	27514	30 g	29
४, छ न ७१	40	AEL 24	હેઇ
(भीम न मैंडका न		1 1 1 1 2	
(१ स्व ७ । अवस्र १	4 1	1 1 2 21	.૩૧
भिवर्कत रतः ।	3.	Andala 1 mm Int	2.2
मित्रिक छन	de	क्योदद्रभाग्य भग	4
(मोदावकन छ।	ey	कौरहरू न। (कौत्रहरू	
मित्रिय छन	309	कौद्रहक्कण वर्ध	93
ভুগজাত ধান্য ধুন	4.5	को । त्रक छेशाला पित्रम	
ভুল বেত্ৰকল ওগ (বাত্ৰি	it of the Contraction	क P कृष्णा रु भश्मा छन्	
सूत्रकम धर्ग	ž.	र र जन ध।	29
के नामि वर्ग	-	' দ ৷ নির্ জা ল গুণ	29
अर्ग छन		'জ • চর (স্ চান ।	
স্ব জাকা কার গুন	3 -	(करना । जात धन (भन	
चल्ला खनजा च मर्जा कन	1 66	ক্ষেত্রের জাগ ওন	29
अत्र माश्म ७।	83	(क्षी अभ्य १३१	23
र्दिमारम छन	. 49		
् इती उनी समस्य	As	स्टीलंड मगार	H,

বাভাষ। বাদার্যী

বাল্লকন। বেভোশাক।
বিলারিকন। ভূমি কুমাও।
বিজ্ঞান। পালা।
বিজ্ঞান। বেলকন।
বিলা পালা দির মুগাল।
বীজপুরক। টাবালের। '
বেজকরীর। বেভের ভাগা।
ব্রেগেব সন্ধাব। কাটা খা ঘুক্ত হয়।
র্ষপুষ্পা। বাসকপুষ্পা।
র্কাননী। গারগাভা।

জবা। চালজা। ভূমিজাত উদ্দিন। ভূমি হইতে হতা-কার যে উদ্দিদ জংশে। ভূস্ত্র। ভূস্ত্র। মুডী চাউল ভাজাই হাদি।

मक्षं। कलाई विस्थित।
मधुक्तां। मंद्रिकी।
मध्मिछक, थछ। सिद्रम छण्।
मम्मछक, थछ। सिद्रम छण्।
मधुक्तिण्। उद्यम्भ छन।
मधुक्तिण्। मछेल ११०।।
मधुक्तिणा। मछेति।
मधुक्ति। भणि स्त्री।
माधुक्ति। भणि स्त्री।
माधुक्ति। सिष्कि।
माध्मिक। माधकन।
माध्मिक। माधकन।
माध्मिक। स्त्री।
मुद्रम। स्रोशिकन। दुर्खा।
स्रोहाकन। कमनी कन। दुर्खा।

রক্তরক। নয়, মুক্তক, অক এবং আসন। রক্তালুক,। রাকাঅংলু।

রাজক্ষক। রাইস্রিষা শাক। রাজাদন ফল। পিয়াল ফল। রাজিকা। খেড স্থপঞ্জ नकूर कन। मानात कन। नतनी कन। तोह ए कन। नाख थेहै।

भाषाल्क। भाक भारा ।
भाषाल्क। भाक भारा ।
भाषावती। भारा गी।
भाषा का । मा मा ना।
भाषाकी। भामा।
भाषा। भाषा।

্ৰেখাৰক। বছবার ফল।

স্তীন। ক্ষুদ্রমটর।
স্থলা। পাকল।
স্থা। সর্ধা।
সিরুধার ওজা। নিসিরাগুজা।
সিবিতিকা। শ্নীফল।

स्विद्यक स्विति भाक। स्वक्रमा अउगी। स्वमा। धे

ख्रुण। उल। भौगीत। सहायम्बर्कन।

হরেণু। কলাই বিশেষ।
হরিমন্থ। হোলাপাক।
কলবক। অপানার্গ আপাং।
কৌংর্কা। বুট বজ্ঞ মুর, , অনুর্থ,
শিরীৰ এবং পাক্ড।
সমাপ্তঃ।

ञ्डन

. দুবাগুণ-দর্পণ

त्वन अवः ।शिरकेरमञ्ज्ञ भर्षः ।

বৈদ্য বি প্রকার। যথা, — ঋক, যজ, দাদ এবং অর্থবর। বেদশান্ত প্রে এবং এক এত এত প্রান্থ প্রান্থ প্রথমতঃ হই ভাগো বিভিক্তঃ যুগা, — মন্ত্র এবং একিল। ঋকু এবং এক দাম প্রেই তিনকে মন্ত্র ভাগে যাল। যে সকল মন্ত্র বেলেবং বিশ্ব এবং এক দাম, এবং যে ভাগা উক্ত হই প্রকার হই ে পুথক ভাগাকে বজাং বলে; যেছেতু ভাগা ছন্দো-বিশিক্ত পাদবন্ধ মথবা অর সণ্যুক্ত গীতিবিশিক্ত নছে।

বেদশাক্ষেব দ্বিভীয় জান ে রাজান, তাহা ভিন আংশে বিভক্ত অথম বিধিরাপ, দ্বিতীয় অর্থবাদ এবং তৃতীর উভা বিশক্ষণ অর্থাৎ না বিধিনা অর্থবাদ।

বিধির চারি প্রকার বি.ৰ সাচ্চেত্র ব্যক্তিংপতি এখিত স্থিকার বিংধ বিনিয়োগ বিধি এবং প্রয়োগ, বিধি।

বেদে জে বাগ প্রভৃতি কর্মের অঁকপ বোধক বাকের নাম উৎপত্তি-বিধি,
আযাগাদিব ফলসম্বন্ধকে বাক্য অধিকারবিধি, ক্যের অল্পমন্তর্ধক ক বিনিয়োগ-বিধি এবং উক্তব্রিধ বিধির ঐক্যের নাম প্রয়োগ-

শর্থবাদত এক প্রকার বিধিষ্ণরাপা, কিছু ভাহাতে প্রশংশা শাণা নিন্দা মাত্র প্রকাশ পার। ঐ অর্থবাদ তিন, প্রকারে বিভক্ত, যথা, — গুণবাদ, শহবাদ এবং ভূঙার্থবাদ। বাহাতে লগর প্রমাণের বিকল পর্য ব্যা বার ভাষার, গুণবাদ-যাহা প্রমাণান্তর দ্বারা প্রাপ্ত অর্থকে বুঝার, ভাহার নাম অহবার এবং প্রদানান্তরের সহিত্ত কিন্দা কিন্তা তৎপ্রাপ্তি বজ্জিত কর্ব ভূতার্থবাদ।

উপ্রোক্ত প্রাক্তিন ভাগে অপর একটি মতন্ত্র ভাগ আছে। সেই ভাগ কেবল পর-জাহা উপনিবদ শব্দেও কৰিত আছে। সেই ভাগ কেবল পর-এই করি প্রতিপাদক। বদিও ভাহা বিধি ও অর্থবাদ, এই উভান হইতে বিশক্ষণ, অথাচ বেদ্ধিংগণ ভাহার ভাগ বিশেষকে বিধি বলিয়াছেন এবং কোন কোন ছলে অর্থবাদের মধ্যেও ভাহার গণনা আছে।

দত্ত এবং ব্ৰাহ্মণ এই ছিবিধ স্থান্ত সমুদার বেদ কর্মানত ও ব্রহ্মাত এই ফুই ভাগে বিভক্ত ছইনা ধর্ম অর্থ, কাম এবং মোক্ষ চতুর্বপের সাধক ছই-ক্লাছে কর্মানত ছইতে ধর্ম, এবং কাম সিদ্ধ ছইনা থাকে, এবং ব্রহ্মাত ছইতে প্রম পুক্রবার্থ মোক্ষ লাভ হয়।

শর্থবর্ষে কর্মবিষয়ে উপধোগী নছে, উহাতে শান্তিক, পৌষ্টিক। শতিচারিক, আদি কার্যাই প্রতিপন্ন হন।

অধর্মবৈদের অন্তের অজ যে অংয়ুর্কেদ, ত্রনা লোক সৃষ্টিন পূর্বে উহা লক্ষ প্লোক ও সহত্র অধ্যায়ে রচনা করিয়।ছি.লন। ঐ অঃয়ুর্কেদ অউ ভাগে বিভক্ত যধা। শল্যাত্র, শালাক)ভন্ত্র, কায়-চিকিৎসাভন্ত্র, ভূভবিদ্যাভন্ত, কৌমারভূভাতত্র, আদভন্তর, রসায়নভন্ত, এবং বীজীকরনভন্ত্র।

मनाउस ।

ি বিবিধরণ ত্ন, কাস্ক, পাষান পাংশু ও সর্প্রাঞ্তি ধাতু, ইউকপ্রভৃতি
ক্ষুদ্র অংশ, অন্তি, কেশ, নথ ইত্যাদি দেহ যথে। প্রবিষ্ট হইরা ও পূর প্রভাবাদি শরীরে বন্ধ হইরা ক্লেশ প্রদান করে, তাহাদিগ,ক দুব ভূত করিবার
জনা যন্ত্র, শক্তার এবং অনল প্রস্তুত কু প্রয়োগ করিবার উপদেশ এবং
নানারপ রোগের নির্বার করিবার উপদ্রেশ শন্য চন্তে বর্নিত আছে।

শাকাল্য ক্র'।

ক্ষম সেরির উপরিছিত রোলাদির (অর্থাই প্রবংশ ক্রির নয়নে ক্রির আণে ক্রির, মুখ জিকা, দন্ত, ক্রধর, গণ্ড, ত লু এবং আলজিকাদির) ছানে যে সমূহ রোলাংশল হল, তাহাদিগের প্রশাসের উপুদেশ শালাক্য ভালে বনির আছে।

কার-চিকিৎমাতন্ত্র i

সর্কাল, ব্যাপ্ত ব্যাধি সমূহের (অর্থাৎ জুর, অতিদাব, রজপিত, শোষ, । উন্মাদ, অপমার কুঠ, মেহ প্রভৃতি ব্যাধি সমত্তের) উপশ্ব করিবার উপার কায়-চিকিৎসাইত্রে বণিত শাছে।

ञृ अविमाध्य ।

অমর, মহার, গলার, যক্তর কোন, পিড়লোক, পিশার, ওক্ষকাদি নাগা, ভাকরাদি-নবএই ও প্রনাদি প্রহঃ ইণাদিগার হারা চিত্ত আবিই ছইলে বে সমূহ মানসিক রোগভার হয়; সেই সকল রোগের উপশম করিবার উপায় (গাভিকর্মা, মন্ত্রলণ, দেব হাদিগোর পুঞাবিধি, উবধধারণ, রড়াদিধারণ, এবং দেবতাদি,গর উদ্দেশে ১ড়াদি প্রদান) ভূগবিদ্যা তাল্লে বর্ণিভ আছে।

কৌমারভূতাতন্ত্র।

সদ্যোদ্ধর বাদক-বালিকার গ্রান্তিগালনার্থ, ধাত্রীগণের শুন্য সংখো-ধনের বিধি, মুফ্ট ঃম জন্য বাাধি সমুছের এবং ক্ষমানি গ্রহণমনে বায়ু স্পর্শ জন্ম, এই মনুছের উপশ্ব করিবার উপার কৌশার ভ্রাত্তরে বর্ণিক শাহে।

অগদ ন্ত্ৰ !

সপজাতি কীটজাতি, উর্নাজিজাতি, রুন্চিকজাতি, ও মুবিকজাতি, প্রভৃতি বিষয়ক্ত প্রাণি নকল গকোন প্রাণিকে দংশন করিলে, দেই বিষ কোন জাতির তাহা জানিবার উপায় এবং ঐ সকল বিষ স্পর্শ করিয়া কিছা দ্রবা সহযোগে ভক্ষণ করিয়া প্রাণিগণ মৃত্যুপ্রায় হইলে, তাহার উপ-শম করিবার উপায় অগদ চড়ে ব্রণিত আছে।

রসায়ন উন্তে।

ৰয়:তাপন (অর্থাৎ মহবোর মুবার সম বিশৃষ্ঠ হওনের উপায়) ও পার-মায়ু, বেধা, বল প্রভৃতি উল্লিড করিবার উপায়, ও শরীর বাহাতে রোগা-ক্রোক্তনা হল; সেই সকল রসায়ণ তল্পে বর্ণিত সাছে।

क्षित्र क्षित्र के

বাজীকরণতন্ত্র।

অপপ কিষা শুষ্ক শুক্রের উর্নাত করিবার বিধি, যে শুক্র বিক্রত হইনাছে ভাছার পুনর্বার অভাব সম্পাদনের বিধি, ক্ষরপ্রাপ্ত শুক্রের উৎপত্তির বিধি, ক্ষীণ শরীরে বলর্দ্ধি করিবার বিধি এবং চিত্তেতে অভ্যন্ত আনন্দ উৎপত্তি হওনের বিধিঃ বাজীকরণ ভক্তে বণিত আছে।

্ এই ওলবাবিজ্ঞান, পুশুক্ধানিতে আয়ুর্কেনাত্র্যায়িক ার্সমূছের ক্রণাদি লিখিত হইবে বলিয়া প্রাধ্যতঃ দেব এবং আয়ুর্কেদের মর্ম জ্ঞান লিলিন ছইল।

खयशी दिख्लान

আছার, প্রাণী সকলের শরীরের বল, বর্ণ এবং ভেজের কারণ । । । সেই আছার কটু, ভিক্তা, ক্যায়, মধুর, অল এবং লবণা এই ছব রূপা রুসে মিলিভ ছইরা থাকে;

ি দেব্য সমূহ এবধি নামে কথিত আছে, সেই এবধি সম্বাচ্ছ প্রকার। যথা ।—ছারে এবং জ্লম।

খাবর ওমধি চারি পানার । ষধা।—বনস্পতি, রুক্ল, বীক্ষ্ এবং
তৰধি। যাহাদিগের ফুল না হইরা কেবল কল উদ্ভব হয় ভাহাদিগকে
বনস্পতি কহে। যাহাদিগের ফল ও ফুলুন্টভয়ই হইরা থাকে, ভাহাদিগকে
রুক্ক কহে। যাহার কেবল ভূনের গোছার সম কিখা তুলার নাায়,
ভাহাদিগকে বীক্ষ্কহে। যাহা ক্লেল ফলের পরিপাক কাল অব্ধি জীবিত
খাকে, ভাহাগিকে ওম্ধি কহে।

जनम ७ गितिकार्गात् । वथा। - जतायुक्त, जशकः त्यम्ब जिवर छे जिका। बहे मिति व्यकादत्र मध्या मञ्जात ज्ञात ज्ञात श्रीमि जतायुक्तम वर्षेट जिस्स्र व वह, बक्कना जानिगदि जनायुक्त कहा। शकी मस् व मस्मानि जले दहेर्ड मार्या, उच्छन। काक्षानिगरिक अस्त्रक्षकरका श्रामीत म्वाम के मनामि लिति-शांदक य उप आरणः काक्षांदक स्थम करका मिर्ग क्रियम क्रेट्ड क्रिम, की हे स लिली निकामि उद्यक्षम इद्या उच्छना काश्मिमिक स्थम करका वर्षा सञ्चल जिका क्रेट्ड ममूदलम मुख्यम् एकान मम आकान विभिन्न देखारागल नारम जिम की है अवर स्थमामि (১) शिंदका स्थम कित्रिश छेरलम इन्न उच्छन। काश्मिन नगरिक छ। स्टब्स करका

हारत रहें(छ,-छुक, श्राह्म, श्रुष्टा, क्षेत्र, स्थित हा क्षाह्म, कस्म, आहे। ध्वर तम श्राह्मा-विभीत। समाग रहेंद्रक, एक, सम, श्राम ध्वर भौतिक श्राह्माक्षमीत।

शार्थित वश्चम् ८४) भूवर्ग-(त्रीम) होत्रकामि, मूक्ता, मनहान এतर भत्नामि

का जनमकी म छ । िछान।

কাল সম্বন্ধে প্রাক্তবার্যু, নির্নাশ, রৌজ, ছারা, জ্যোৎস্না, অন্ধবার, লাভ, উঞ্চ, বর্ধা, অংহারাজ, পক্ষ, মাদ, ঋতু, জ্মন, এবং সম্বংসর ইহার। স্বভাবভই বায়ু িত প্রভৃতির সঞ্চয়ের, প্রকোপের, প্রশংমর এবং প্রভিকারের কারন; ভজ্জনা এই সক্ষপ্র প্রয়োজনীয় জানিতে হইবে।

কাল ও ঋতৃবিজ্ঞান।

কালই পরস্কু। স্থ্য গতি বিশেষের দ্বারা সেই কালের সংবৎসররূপ দেহকে, অকি-নিমেষ, কাষ্ঠা, কলা, মুহুর্ত্ত, অংহারাত্ত, পাক, মাস,
ঋতু, অয়ন, সংবৎসর এবং যুগ ; এই সীকল অংশে বিভক্ত করিয়া ধাকেন।
একটী লঘু অকরের উচ্চারন (২) করিতে বৈ সম্মেরর আবশ্যক হয়, ভাহাকে
অকি নিমেষ বলে। পঞ্চদা অকি-নিশেষে এক কাষ্ঠা বলী যায়।
ত্তিংশাৎ কাষ্ঠাতে এক কলা। বি০শতি কলাতে এক মুহুর্ত্ত। ত্তিংশাৎ

⁽ ३) वहें कुल मृत्व चारह।

^(2) लघू-मक्त यथा "क ,

मूहाई जिक काहातांक। शक्षमण कर्णातांक अक शक्का शक्क इहे क्ष-कात्र। स्था। एक जिर क्षा छहे शक्क अक अक मान। प्रामण मारम जक-बरमत्र। प्रामण मारमत इहे इहे मामरक जिक अक के अक वेना यात्र। अकूत मर्था। हत्र। माघ । काह्यनमाम,-भिनित अकू; दिख के विभाशमाम बमस मकू, देनाई के प्राचाएमाम, जीवा अकू; जादन के जात्र मान, वर्षा अकू, प्राचिन के कार्डिकमाम, भंतर अकू; जिल्ल के स्थिमाम, र्या सकू, प्राचिन के कार्डिकमाम, भंतर अकू; जिल्ल के स्थिमाम, रहमस्य अकू; वित्रा कथिक प्राह्म। भीक, छिन्न जिल्ल कार्यन्त सक्ष प्रामण कार्याक हिर्दा।

कान, हस्स जर प्रश्निक विख्ळ रहेश। इहें ने असन उर्शानन करन यथा। मिलासन जर उठतासन। वर्षा, भर जित्र रमस्य जह अपूज्य मिलासन जर उठतासन। वर्षा, भर जित्र रमस्य जह अपूज्य मिलासन अपीन। जहें कारन हस्स उठाल हस्स उठाल हर राम, जित्र न मिलास जित्र हस्स जित्र प्राप्त उपि विश्व कर जित्र हस्स जित्र श्री विश्व कर जिलास हस्स जित्र श्री विश्व कर जिलास विश्व कर जिलास विश्व कर जिलास जिलास विश्व कर जिलास विश्व कर विश्

ছন্দ্র পৃথিবীকে আজ এবং ভূষা ভাছাতে শুক্ষ করেন। বায়ু ঐ উত্তরকে আশ্রেম করিয়া প্রানিগুণকে পালন করিয়া পাকেন।

কোন২ পণ্ডিত কছেন, যে ছই অয়নে এক সংবংসর পাচ বংসরে এক যুগ সংখ্যা হইয়া থাকে। সেই নিমেবাদি যুগ্পর্যন্ত কাল চল্চের সম পরিবর্তিত্ত হর বলিয়া কালচক্র নামে কথিত হয়।

আয়ুর্কেদমত, বর্ষা, শরং, ছেমন্ত, বসন্ত, ত্রীখ এবং প্রার্ট; এই বড়ঋড়ু দোবের স্থান্ত দক্ষরের, প্রকোশের এবং প্রশানের কারণ হয়। এই বড়ঋড়ু ভাদ্র মাস অবধি ইই ছাই মাস ভোগ ক্ষরিয়া থাকে। ভাদ্র এবং আখিন বর্ষাঋত্র ভোগ, কার্তিক এবং অতাহারণ শবংখড়ুর ভোগ পোষ এবং মাঘ হেমন্ত্র্য ভোগ, ফার্রণ এবং চিত্র বসন্ত্র্যান্ত শ্রুত্র ভোগ বৈশাধ এবং ভেট্ ত্রীখ বড়ুর ভোগ এবং আবাচুও প্রার্ণ প্রার্টি শ্রুত্র ভোগ।

हव अब्द माधा वर्षाकारन खर्मी अस्य नृब्द छिल्ला हर, अहर करें मालानी वा (कार्या कारण मात्र विनिष्धे) मिलान (अप्त क्षान वा कारण मिलान कारण वा कारण वा

শরৎ ঋতুতে শাকাশ্যগুল মেখনীন হইলে এবং কর্দন সমস্ত শুক্ষ ছইলে দেই সঞ্চিত পিত্ত পুর্ব।বিবন দার। সকল দেহে ব্যাপ্ত হইরা পিডজ রে গ উৎপাদন করে।

হেমন্ত ঋতুতে সেই সমন্ত ওবলি কাল গোণ আনা নিগক এক গলবান কইলা থাকে, সালিলও নির্মাল কয়, ত্যাব কিরণ মানদা হয়, সহজেই হিম এবং শীলেল বালু কানুক ত্রানিগালো দেহত জাতীভূত হইয়া থাকে। হেমন্ত ঋতুতে পুর্বোজ নিয় এবং গুজ্গাক ওবলি ভালন এবং জাল পান করিলো আমাজান হয় অর্থাহ গুজ্গাক জনা সমাব্যালণো পরিপাক হয় না। দহজেই সেই সিন্ধ, শীভিগ, গুজ্গাক ও শিচ্ছিল ভাগি এবং জাল ঘারা হেমন্ত ঋতুতে শারীরে হোজার সঞ্চার হইলা থাকে।

ৰসন্ত আহৃতে প্ৰাণি নিক রর কংশবর অংশ জালী গৈ থাকে। স্থাকিরন ছারা ছেমন্ত ঋতুর স্পিত শেখা সম্ভ দেছে বংগু হইছে শেখাজন্য ব্যাধি স্কল উৎপন্ন হয়।

জীল ঋতুতে সেই সমস্ত ওয়ধি নিরস, কক্ষ ও দ্যু এবং জনত লগু হয় ।
এবং স্থাকিরনে প্রানি সমূহের শরীরও শুদ্ধ প্রায় হইয়া থাকে, সহজেই
এরপ ভ্রমি ভক্ষ ও জনপাল করিশে নিঃস্কৃত্য এবং লগুড়া জন্য
প্রানিনিকরের দেহে বায়ুর সঞ্চয় হয়।

প্রায়ট শতুতে ভূমি জালে আর্ফ্রান এবং প্রানিনিকরের কলেবরণ আর্ফান দেহস্থ প্রীম শতুব সঞ্চিত বায়ু বাহিফ্রে দীতন বায়ুব এবং বর্ষায়-প্রাজ্বে প্রানিনস্থিত পরীক্রের বাশুও হইয়া খাকে, ভাহাতে বাতিক জন্য ব্যাধি সূক্র উৎপাদিত হয়। সকল প্রাকার দোবের (অর্থাৎ বাঃ শিত ও কক্ষের) সঞ্চয় এবং প্রাকোশের হেতুবলা ছইল।

বর্ষা, হেমন্ত এবং গ্রীত্ম গড়ুতে যে সমস্ত দোষ সঞ্চিত হইয়া থাকে সেই সমন্ত সঞ্চিত দোষের — এবং শারৎ বসন্ত এবং প্রার্ট ঋতুতে সে সমস্ত দোষ কুপিত হয় সেই সমন্ত কুপিত দোষের প্রতিকার করা বিধেয়। শাং জ্বাত পিতিক জান্তা বসন্ত ঋতুতে শোলা জান্ত এবং প্রার্ট ঋতুতে বাতিব জানা ব্যাধি সকলের প্রতিকার করিবে।

দিবারা জির মধ্যে ষড়ঋতুর ভোগ বিজ্ঞান।

প্রাভঃকালে বসভেব লক্ষণ, মধ্যাহ্যকালে আত্মের বক্ষণ, অপরাহ্য প্রার্টের লক্ষণ, সন্ধানে বর্ষার লক্ষণ, অন্ধরাত্তে শরভের লক্ষণ এবং শেবঃতিত্র হেমন্ডের লক্ষণ জানি ত হইবে। সন্ধংসরের সম দিবারাত্তি মধ্যেও এইরাপে শড়গুড়া লক্ষণ দেখা গিরা থাকে, এবং সেই সেই সম্মের বাত পিতা এবং কফের সঞ্জয় প্রাক্ষণ এবং উপশম হয়।

ষভ্ঋতুর স্বভাব বিজ্ঞ:ন।

হেমন্ত খতুতে, — উত্তর দিক হই.ত শীতল ব'য়ু প্রাহিত ছইলা থাকে।
সকল দিক পুলি ও ধূদে বাগিও হল, রবি হিমকণাতে সমাভ্য হন, এবং জালা।
শাল সমূহ হিমে আরেত ছইলা থাকে। কাক, গণার, মহিষ, মেষ এবং হতি
আ'দি বলবান হইলা উঠে। রোধ্য শিল্প এবং পুলাগরক্ষসকল পুস্পাদার।
সুশোভিত হল।

লিশির ঋতুতে অতিশর শীত হয়, রভির্তিতে সকল দিক আফুলিত হইতে থাকে এবং হেমন্তর্গালের লক্ষ্ণ সকল ও এ ঋতুতে দেখা বার।

বসন্তা ঋতুতে, দিক্ সকল নির্মাণ হয়। পলাশ পদ্ম, বকুল, আ এ এবং আশে কি দি প্রাফটিত হয়, জমর এবং কোকিলাদি পক্ষীগণ নিজরবে গাম করিতে থাকে। চারিদিক্ স্থাণোভিত হইরা উঠে দক্ষিণ, হইতে ব য়ু প্রবাহিত হয় এবং জলাশয়াদির ও পে,ভা সম্পাদিতা হইরা থাকে। "

প্রতিষ্ঠাত কর্ম বিশেষ তীক্ষ্ণ হয় এবং নৈশ্ব কোন হইতে অন্ত্র্যজনক বায়ু প্রবাহিত হইতে থাকে । তুনি উভগ্রা, নদ নদীতে অপা জল, দিক সমন্ত প্রজ্ঞানিত সম, মৃগ সমূহ পিপালিত, তৃনাত লভানি শুক এবং সমূহ প্রশুনা হইয়া পড়ে।

প্রার্ট্ঋতুতে, লাশ্চন দিকত বায়ুদারা মেঘ সন্তিত হর্তনা আকাশ্ব-মণ্ডলকে আছেন করিয়া থাকে এবং ভড়িং ও তুমুল গজ্জন সহকারে স বারি বর্ষণ করে। এই কড়ুতে শাদ্তেশ কোষল শলো এবং কদন্ব, কেলি-কদন্ব, কুটজা, শাল্ এবং কেত্নী আদি বৃক্ষদারা কিভি বিশেষ শোভানিতা হয়।

বর্ষা ঋতুতে, — নদী সকল সনিতে গরিশুলা হরীয়া থাকে, তারছ রক্ষ সমূহ প্রিত হয়। সরোবরাদি প্রাকৃষ কুমুদ ও নীলপায়াদিতে শোভিত হয়। ভূমির উপরিশ্রাণ সনিলে পরিপূর হওয়াতে উচ্চ এবং নিম ভূমির নিদর্শনি রচিত হল্মা পড়ে। কিভি বতবিধ শাসাযুক্তা হয়। মেঘ সমূহ হুণা গজ্জনি করিয়া বর্ষণ শরিতে থাকে। দিবাকর প্রার আছের হইয়া থাকেন।

শরৎ ঋতুতে দিবাকরের কিরণ প্রেণর হিইয়া থাকে, শেতবর্গ মেঘ জনা আকাশমণ্ডল প্রায় নির্মান দেখা যায়। সরোবরে পদা প্রেফাটিত হয় এবং ছংসগণ ভাহাতে জীতাকরিছে শাকে। ভূমি ভঙ্কা হয় এবং ভাহার স্পর্যনেই ছাতিম, বঁপুলি, কেশে, আসন প্রভৃতি রুক্ত উৎপন্ন হয়।

প্রত্যেক ঋতুতে যে সমুহ ককরে ছইরা পাকে, কোন করুতে সেই সমুদায় ককন অধিকতর হইলে কিয়া বিপরীত হইলে অথবা কোনরপে ভাহার অন্য রূপ ছইলে, প্রানিদিণের দেছে বাত, পিত এবং শ্লেষা কুপিত হয়। একারন দেছে বাত, পিও এবং শ্লেষা ধিকৃত ছইবার অত্যেই তাহার উপশম করা বিধেয়। বসত ঋতুক্রে শ্লেষার শান্তি, শ্রেহ ক্তুতে পিতের শান্তি এবং বর্ষাঋতুতে বায়ুর শান্তি করা কর্তব্য।

বায়ু বিজ্ঞীন।

পুর্দিক হটতে ব'য় প্রবাহিত হইরা শাকে, তীহা মধুর এবং লবণরসবিশিষ্টঃ স্থিত ভার, অস্ত্র-পিতজনক এবং রক্তপিতবর্ত্তনকর। বিশেষ্তঃ

বাহার। কভরোগ, বিষরোগ কিমা এণরোগবিশিষ্ট কিমা যাহাদিগের দেহ লেমাবিশিষ্ট ; পুর্ঝদিকছ বায়ুদার। ভাহাদিগের রেগা রুদ্ধি পাইয়া থাকে এবং এগের পুরাদি বাড়িয়া উঠে। যাহারা বায়ুরে,গবিশিষ্ট, প্রান্ত কিমা যাহাদিগের দেহে ককের অংশ শুক্ষ হইরা যায়, ভাহাদিগের পকে পুর্ঝদিকস্থ বায়ু বিশেষ উপকারী।

দক্ষিণদিক হইতে যে ৰায়ু প্রাবৃত্তিত হুইরা থাকে, ভাষা, মধুর এবং ক্ষায় রসবিশিষ্ট, লয়ু, নেজের দীপ্তিকারী ও বলবজনকারী। দক্ষিণদিগের ৰায়ুতে অসপিত অখায় না এবং বারুবও প্রকোপ উত্তব হয় না।

প্রতিমাদিক ছইতে যে বায়ু প্রাবাহিত ছইরা থাকে, তাহা বিশদ, কক্ষ, কঠিন, থরজফর্শ, তীক্ষ্ণ, কফ এবং মেদ শোষণকারী এবং দেহের চিক্রণতা এবং বলক্ষ্যকারী। ইহার ছারা দেহ শুষ্ক হয় এবং জীবন নটত ছইরা থাকে।

উত্তরদিক্ ছইতে যে বায়ু প্রাবাহিত ছইয়া থাকে, তাহা স্থিয়, মৃত্ন, মধুর ক্ষার রসবিশিপ্ত এবং শীতল। এই বায়ুবারা কোন দেহেবর (ব্যায়ু শিত ত ককের) প্রকোপ হয় না। বরং বল র্জি হয়, বিস্তু দেহেকেদ জ্বায়ে। ক্ষীন এবং ক্ষারোগ ত বিষরোগবিশিষ্ঠ জনগণের প্রতি এই বায়ু বিশেষ হিতকারী।

আহারীয় ভ্রব্যের পথ্যা-পথ্য বিজ্ঞান।

धाना।

রজবর্ণ ধান্য, বর্ত্তিক (বার্ট ধার্ম) গজক, বুরুল, পাতু, পীত, প্রমোদ, কাল, অশন, পুজা, কর্মদ, শাহ্রনাছত, প্রগন্ধ, কল্মা, নীবার (উড়ি) ও উদ্ধালক ; এই সমত্ত প্রকার ধান্য শামাবাস, গোপুম ও মব্ প্রভৃতি স্বামান্ত: সক্লের শক্ষেই প্রশ্ন জানিবে;

मार्ग

সকল প্রশার ম্বা, কালসাব, ক্রকর, (ধৈরী,) কপোত, শলাব (ছাতরা তিভির, কপিঞ্জল, বত্তী ও শবন্তী, এই সকল পশু এবং গাণীদিগের মাংস সামান্তঃ সকলের পক্ষেই পথা জানিবে।

कलाई।

মুগা, বনমুগা, ছোলা মন্থার হাবেলু। অনুহর ও সভীন (তেওড়া) এই সকল কলাই সামনেতঃ পথা জানিবে।

इस अह

চিলি, বেচেনা, অ্যনি, জাবন্তী। নটেও ধুবস্কুটী; এই সকল শাক সামা-নাডঃ প্রাঃ জানিবে।

হুগ, য়ভ, তৈরা, দ্টোম ও আ্মাশকী; নাগানাংঃ প্থা থানিবে। ব্সাস্থ্য অংচরণ, করুশুন্য ছানে শ্রন, উ.ফান্কে শ্নি রাজিনিজা এবং ব্যারাম হিভক্র জানিবে।

> কোন কোন জ্রায় কোন কোন দ্রোর সহিত ভোজন নিমিদ্ধ।

বল্লীকল (লভাগাছের ফল কর্থাৎ লাউ কুমুড়া প্রাভৃতি) করক (কলবিশেষ) অল ফল (চান্ডা আমড়া প্রভৃতি) লবন, কুন্থ কলাই, পিনাকে
(ভিস কিমা স্বিমা বাটা) ভৈলে ভক্তি ভি পিন্তুক, শুদ্ধ-শাক, গাছ কিমা
দেমমাংস্ট্য মদ্য, জামকল, চিংড়ীমংস্ট্য, গোধামাংস্ত ব্যাহ্মাংস্ত ই সকল
দ্বোর মধ্যে কোন দ্বো হু স্কের সৃষ্টিউ ভে'জন করিবেনা।

ভূষ কিন্তু মধুর সহিত্ত রোহনী (কটকলশাক) কিন্তা জাতু (হিসুশাক ভেজিন কুরিবে না। কাঞ্জী, কিমা, জুরার সহিত বৃদ্ধকার ম'ংস (বাসহংসের মাংস) লিম্পিরী কিমা মরীচের সহিত কাকমাচী (গুড়কামাই) কিমা নাডীভঙ্গশাক, ক্রি-মাংস এবং দ্যি একত্রে ভেজিন ভ্রিবে না।

মধূ পান করিয়া তৎক্ষনে উঞ্চল পান করিবে না। পিতের সহিত মাংস পাক-কবিয়া,ভোজন করিবে না। মদ্যা, তিল-মিশ্জিত পিউক ৬ পায়স ভোজন কবিবে না।

ুকাঞ্জির সহিত তিলের পিষ্টক সুমৎস্যের সৈহিত গুড় চিনি প্রভৃতি ইক্ষু-বিশার, গুড়ের সহিত কাক্ষাচী, গণ্ড সহিত ম্লক এবং গুড় কিছা মহুর সহিত বরাছ মাংস ডোজন করিবে না।

ভূষের সহিত মূলক আন্ত, জাত, গুকরমাণ্স, গোসাগি কোন প্রকার
মংস্য বিশেষত চি ভূমিংস্য এবং এফ এফ কিছা ভালফলের স্থিত কালী
ফল ভোজন করিবেনা

হুয়া, দ্ধা, মাস্কলায়ের দ্ভিশা মধু কিমা ধ্রতের নহিভ শকুসকল (গাদার) ভোজন কবিবে নং

বে সকল এবা ৪% গছা যাগে পান ভোজন করিতে নিবিদ্ধ সেই সকল দ্বো ভূমপান করিয়া তদতে গান-ভোজন করিবে না।

কপোত মাংস সরিধার তৈলে ভালিয়া তে;জন করিবে না।

কপিঞ্জল, মহুর, ছাঙ্গা, ডিজির এবং গোসাপ; এই সকলের মান্দ্ এরওকার্ডের শ্গ্রিত পাক কিছা এরওতিলে ভাজিয়া ভোজন কবিবে না

যৃত কিমা মগু দশবাত কাঁ দাব গাতে রাখিলা পান করিবে না। উষ্ণ দেবার সহিত গুদকামাই পাক করিমা ভে'জন করিবে না। তিলবাটার সহিত কল্মীশাক পাক করিমা ভোজন করিবে না।

নারিকেল এবং বালছংলেব মাংস একত্তে শূক্তের চরিবিকে ভালিমা ভৌজন করিবে না।

কুক টুমাৎস প্রেক বিধিয়া অলাব্রের শ্মিতে পাক করিয়া ভোজন করিবে না।

মধু এবং জল কিম্বা মধু এবং খৃত তুলাপরিমাণে পান করিবে না।

হই প্রকার স্থেহ জকা, মধু ও কোন প্রকার সেহ জ্বা। এবং জল ও কোন

প্রকার সেহজবা একত পান শুরিবে না।

क्याखन-मर्भन।

্মধু কিমা কোন প্রকার স্নেছ পান করিয়া তৎপরক্রেই বর্ধার করিবে না।

भधु व अर्रः चल्लतम अकिष्ण इहेता द्वारा ७ वीर्ट्स दिनक इह ।

মগ্নর এবং লব।রম ; ও মগ্নর এবং কট্টরম এক বিচ ২ইলে রনে। বিবিধ্য এবং পরিপাকে বিক্তম হয়।

মধুব এবং ভিক্তরস একত্তিত হইলে, রসে এবং পবিপাকে বিৰুদ্ধ হয়।

মপ্রর এব কর্মরেসঃ এব ক্লান্ত ব্বনরস্থাক্তিত ২ইলে রসে বিক্লাহয়।

আন এব° কটুরস একজিত ছইলো, রসে এবং পরিপাতেক বিস্কা হাট আনতিক্ত এবং আন্তাহধায় একজিত ছইলে রসে বীটো এবং পরিপাতিক বিকাম হয়।

লবন এবং কটু-রম পরিপাকে বিকল হয়।

नत्न এवर फिक्क-द्रमः अवः नत्न खक्यांस दमः ज्ञान मो(मं) अवः अदिशादक विकक्ष २मः

কটু ও ভিক্ত-রুম।—বসে এবং বীর্বের বিকন্ধ হয় ।

কটু এবং ক্ষায়-রস এবং তিক্ত ও ক্যায়-রসে বিক্ল ক্য়। জানিবে।

পুর্বোক্ত যে সকল নিষিদ্ধ এবং বিশ্ব পানাছারের কথা বলং হৈইয়াছে ভাছাতে অন্ত্যাস থাকিলে, পরিমাণ অপ্প হইলে • " হিন্ন দীপে থাকিলে, তক্তন বন্ধত্ব হইলে, দেহ স্থিন্ধ থাকিলে কিছা ব্যাস্থান অ্থবা বলিন্দ্র হৈ বিষদ্ধ পানাছার ক্লেণ্যাক হব না।

ব্যায়াম গুণ।

 কৈশসহা, বাভ, পিত এবং ককের সমতা, অগ্নির।ক এবং বিক্স ভোজন করিলেও সহজে পরিপাক হয়, রক্তপিত রোগী, কুখাতুর বাজি, ভুক্তবান মাজি, স্ত্রীবোক এবং ক্ষীণ কাজি: ইহাদিণের ব্যায়াম বর্ত্বা নহি।

প্রভাঠে অগ্নাদি সেবন গুণ।

প্রভাতে অমি সেবন করিলে,—বায়ু শুন্তিত বফ, শীত এবং কপে। নক হয়; এবং শাম ও বক্তপিতের রুদ্ধি হুইয়া থাকে। প্রম সেবন করিলে,— বায়ু এবং পিতের রুদ্ধ হয়। হিম সেবন করিলে; কফ এবং বায়ুর রৃদ্ধি হয়। শিশির সেবন করিলে,—শীত্স, থাতুপ্তি, কফ এবং বায়ুর রুদ্ধি এবং কোয়াস। সেবন করিলে,—শতান্ত কফ এবং কফ ও পিতের রুদ্ধি

टेजनाजाम खन।

ভৈল মর্দ্দন করিলে, শরীর আতে হয়, কফ এবং ব য়ু নই হইরা থাকে এবং ধাতুপুটি, তেজা ও বর্ণ প্রায়ন হয়। পদাছ,ল্য-নিজাকর, চক্ষুর। হিভকর অথচ পাদরোগয় কিন্তু কফরোগবিশিই ব্যক্তির পাকে হিভকর নহে। তৈল মর্দ্দন করিয়। আন করিলে, বয় রিলি হয়, এবং লোমকুপে এবং লিরমুখে তৈল প্রবিট হইলে নাড়ী তৃপ্ত হয়। তৈল হায়। মন্তক আতে করিয়। রাথিলে, লির শুন, খাল ধরা, মাংসলোসিত এবং টাকরোগা উৎপল্ল হয় না; কেশ, অন, শক্ত এবং য়য়য়য়র হয়না; কেশ, অন করিলে, কর্বরোগা বিশের হয়ন করিলে, কর্বরোগা বিশের হয়ন করিলে, কর্বরোগা বিশের হয়ন করিলে, কর্বরোগা

न्यानक्षेत्र ।

আত্হতল, — শরীর দীতিল এবং পবিত্র হয়, আম এং মলা দুর জ বল রাম হইরা থাকে; ক্য ব্যক্তির ও তেজ, উৎপত্র হয়। উষ্ণজনে আন্ করিলে, — শরীরে সেক এবং মলা দুর, সম্ভব্রের এবং চক্ষুর হিত্যাধন এব বলাধান হয়। উষ্ণজনৈ মস্তর তুবাইরা আন করিলে, — তৃষ্ণা তালু ও ওঠ- ' ধশাষ নিবারিত হয় এবং কণ্, শিলোৱোগে এবং পিত্রসনারোগ নাই ছইয়া থাকে। বচ বালা এবং নিখছাল দিয়া জল উক্ত করিয়া আন করিলে-শ্লেমানট এবং নৈজের জ্যোতি হয়। ক্ষতিল দিয়া জল উক্ত করিয়া আন করিলে, – চক্ত এবং কেশের উপকারী এবং বাল্ল উপশ্মিত ছইয়া থাকে। জ্প্রাত ব্যক্তীর শরীব সর্বাদা উষ্ণ থাকে, আন করিলে শ্লীর স্থার এবং জ্বি দীপন ছইয়া থাকে।

वर्कि इटहाती, निजदाती, मूचदताती, वर्गदताती व्यक्तिनामदताती अवश् विक्रीन्द्राती; हैबानियात शयक आन निमिक कानिया।

গাত্রমার্জন।

জীজফতা, ভুগ্র, গুৰুতা, মদা, কণ্ডু এবং সর্ম নই হয়।

वख्यांत्र खन ।

নির্মাণ বজা ধারণ করিলে, —কাভিযুক্ত, যশসী আনশ্যী নাট এবং হয়। উৎপান হয়।

मुनिक्षिप्रवा (लशन छन्।

প্রীতিযুক্ত, ধাতুপ্তি এবং বর্গ, হুর্গন্ধ, পাপ এবং প্রাণ নই হয়।
চন্দ্র অলা।

শীতদ এবং তিক্ত শরীরের উত্তাপ ও রক্ত পিখন ই হা !

অগুরু চন্দন গুণ।

উक्ष, ভिক্ত, कर्रू, जन, क्क এবং বায়ু नर्श्ट इय ।

রক্তে চন্দ্রন প্রাণ।

রক্তপিত্তন্ন, বলর্ছিকর এবং চল্টের হিতকর

क्रम्क्य खन।

भत्रीदत्रत्र विवर्त्डा, क्ष्ट्र अतर क्षत्र।

মুগনাভি গুণ,।

হুর্গন্ধ, রক্তপিত তবং জ্বস ও উতাবী দ্যী।

কন্তরী গুণ।

मानाहत, भीवन, विकारम् अत्र मूस्तार्शत दिवनत ।

(कारिया खन।

क्षांत्र, मधुत्र এवर मांच छ द्रक्तिशिखनां भक।

অসকার শুণ।

ভাষায়ক, ভিক্ত এবং দৃষ্টিনাশক।

দিবানিদ্রা।

শীতল এবং অজীব রোগাদির মূল। তৃষ্ণাযুক্ত শুনী, হিষারোগী, অজ্ঞাবরোগী এবং অভিসারী; এই সকল ব্যক্তির প্রতি দিবানিজা হিতকর জানিতে হইবে।

র।তি জাগরণ।

কৃক্ষ এবং নিজাতে ক্মিয় হয়। ক্ষরোগী, মেদরোগী এবং বিষরোগীর প্রক্রেরাজ জ্বাসরণ হিভকর জ্বানিবে।

रेभथन खना

ধাতুকর এবং আপদজনক। অতি দৈখনে, – খাস, কাস, এবং রুছত্ত্ব। উৎপর হর।

শ্লেষ্মা বিজ্ঞান।

শ্লেষা, - গুৰু, খেতবৰ্ণ, বিশ্বন, লিচ্ছিল এবং শীতন। সেই শ্লেষা মধুর-রসবিশিষ্ট হইলে অবিদাহী এবং লবণ্-রসবিশিষ্ঠ হইলে বিদাহী হয়।

শোণিভ বিজ্ঞান।

শোণিতের স্থান থক্ত ও প্লীহা। শৌণিত উষ্ণ কিষা শীতল নহে '
প্লিয়ে রপ্তবর্ণ, গুৰু, মাংসগল্পবিশিক্ত এবং পিতের সম বিদাহী গুণ্বিশিক্ত
হর্। ত

वाश्रु श्राटकाशकत कार्या ७ एवं गीन।

যলিতের সহিত বারাম, অতান্ত বারাম, জীসংসর্গ, অধার্ম, পতন, ধাবন, প্রপীতন, অভিযাত, লভ্যল, প্রবন, (জিল থাকা) সম্বরণ, রাজি জাগরন, ভার-বহন; গ্রাক্ত, অধ্য রথাদি বাহন কিছা পদরজে গমন হটু-ক্যার, ভিক্ত কিছা কক্ষ্মবা; লঘু কিছা শীতল ভেজবিশিক্ত অবা, শুক্ষশাক, শুক্ষমাংল, কোন্দালক, কোর্দুষক শামাধানা, উভিধানা, মুদ্দা, মহুর, অরহর ও কলাই; এই সকল অবা ভোজন, অল্পন, বিশ্রীত ভেজন; অবং কাত, মৃত্ত, প্রীয়, শুক্র, ছাদ্দি, হাঁচি, উদ্দার এবং আজি আজি বার্গ প্রাদির বেশ ধারণ; এই সমস্ত কারণ জনা বায়ুর প্রাক্তেশ হর্মাধানে।

পিত धारमानकत नार्वा ७ सनानि।

क्कांध (भाक, खंद्र, हिना, खेश्रामा खंद्रामार, देश्यान, खेश्रामान किया के हे कला, लवन, खेळू, खंद्र, खंद्राहो, डिल टेडल, शिनाक, कुलथ, प्रवंश मिना इतिहर्ग भाक, त्यामाश, मध्या, इतिहर्ग भाक, त्यामाश, मध्या, इतिहर्ग भाक, त्यामाश, मध्या, इतिहर्ग साम दिक् उत्वर कला क्रम विश्व कर्म क्रिया किया कार क्रम खंद्रा साख्य खाद्रा शिष्ट्र खंद्रा शिष्ट्र खाद्रा शिष्ट्र खंद्रा शिष्ट्र खंद्रा शिष्ट्र खेर्क्य क्रिया करित्व क्रिया खेर्क्य क्रिया करित्व क्रिया खेर्क्य क्रिया क्रिया क्रिया खेर्क्य खेर्क्य क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया

ক্ষ প্রকোপকর কার্য্য ও দ্রবাদি।

দিবানিদ্রা, শ্রমাভাব, অলস, মন্তর-রস, জন্ন স, লবণ্যস, লীতল, ঝিঞ্চ, গুৰু, পিছিল-দ্রব্যস্থ, হৈমভিক ধান্য, যব, মাধ্, গোনুদ্য তিলিখিক দিনি, জ্ঞা, কুলারা, পাছসা, ইক্ষুবিকার, মাংসা, হবসা, মুগাল, কেশুর, শানীকলা, মধুর-রসবিশিক অলবু, এবং কুলাও প্রভৃতি লভাকল; সমাক ভোজন ব্যাবা অভ্যন্ত ভোজনা; এই সমূহের ধারা ককেব প্লাকোন হট্য। ধানে। বিশেষ্ক দীতল কিরা করিলে, কিলা দীত অধ্বা বসন্ত গড়ত এবং প্রত্যহ

প্রাভঃকালে, সায়িংকালে ও পাছারের পরক্ষনে কক্ষের প্রাক্ষান ছই।।
ংখাকে।

खर्म गर्धारार्थ जूमि विकान।

যে ভূমি শর্করা, প্রান্তর বল্মীক, শাণান, শাধূনিক দেবায়তন ত বালুকাদির দারা দোষয়ুক্ত নহে এবং হিজে বিশিষ্ঠ, লোনা ও ভদুর নহে অপচ
ক্রিয় রক্ষণতাদির শক্ষুর বিশিষ্ঠ, কোষল, ভিরু, সমতল এবং কৃঞ্ বিস্থা গৌরমর্প বিশিষ্ঠ, এমত ভূমি হইতে উষধ গ্রেছন করা বিধেন।

ভষ্ধ সংগ্রহের লক্ষ্ণ।

দোষ হীন ভূমিতে উষধ উৎপত ২ইলেও রুমি, বিষ, শস্ত্র স্থাত।প বায়ু, অগ্নি ও জনত্ত্রত আদির দারা অনুন্দত, আভাবিক ব্যুয়ক প্রত সুন ও অব্যাতৃ মূল বিশিষ্ট উষধ এহেন করা বিধেয়।

राष्ट्रभाधनीयर्श विकास ।

भवनाकना, कुष्ठित, (५४) छ, ७ किना छ, प्राणा , (४। णा । १०००), नर्थ । विष्णा, विश्व । कार्या, कार्य । विष्णा, विश्व । कार्य । कार्य । विष्णा । विष्ण

তেউড়ি, শ্যামণতা, দত্তী, মুনালীপড়া, গ্ৰহণ, তেওঁ, গ্ৰহণ নেইশ্না, বিষধড়ক, মনসাসিঞ্জ, বর্গকারীলিক, চিত্রক, শ্বংশাং, কুনা, কাশ লোধ, কমলাগুড়ি, পটোলমূল, পাইলে, গুরুজ, ছাতিম, শুরুলিকী, জাললকা বিত্তী তকী, নীলী, সোদাল, এরণ্ড, কর্জা, পাঁকুড, ছাতিম, শুরুলিকী, জাললকা বিত্তী এই সকলের হারা শ্রীরের, মুখোভাগ সংশোধত হয়। ইহাদিগের মধ্যে ভেউজ় হইতে কাশ পর্যান্ত, সমূহের মূল এবং লোধ হইতে পাইলি পর্যান্ত অব্যের ত্বক, কমলাগুড়ি চুণ, গুরাক হইতে এরগুপ্রান্ত জাগের কলা, করঞ্জ এবং সোলের পত্র, এবং আবশিষ্ঠ রক্ষাদির শীর লওমা ব্যবস্থের।

কোশাভকী, সপ্তলা শশ্বিনী, দেবদালী ও করলা ; বিভাদিগোর দ্বারা উর্জ্ব এবং অধ উচ্চয় ভাগা সংশোৱিত হয় । ইহাদিগোর রস গ্রহণ ব্যৱস্থা।

िश्लिमी, विख्ल, खाला, गिल्ना, भ्रांच्याल नित्रमी, मांत्रक, कत्रवीत, विश्वी जलदाक्रिका, खाला, देव, नक्रवेशी क्रिका, क्रक्री, क्रिका, क

अवस्थानी जना कथन।

गाउ-मर्भवनी पर्य।

न्रमानः, कूके, हितिसा, वकनः स्थम कि, (च्रुट्वट्डमाः विद्याद्याः) मिन किनी, शिन्द्वाइका, अवाणका, शलकी, शाक्का, प्रक्रित्वाइका, भीविक वि युम्धा, এव छ, शायव-त्काड, अन्, श्वापका कमा, भारमूमी, श्वाप्ता, माखाइ-मदमः शक्त शिक्षानी, काक्ष्रमहक्क, वामनहाधी, काशामः, विष्टू के, मालिका-माक, यव, काल, कूम्ब व्यापि এवः विमादि ग्रसामिशन, ख्वाप এवः हुह्ह शक्ष मुमेरे এই मकल माम साकः व ज-मूर्थम्मीवर्ग।

शिख-मः भमनी नर्ग।

क्रमन, त्रक्रकमन, 'लाला, रश्वामून, मां छो, कार्तानी, जूबक्षाछ, भक्षम्ती, लिक्षक, रिगरान, स्वक्षेमी, क्रमूम, शत्रा, कमनी, शत्रातीक,

ভিক্ত-রস গুণ।

ভিজ্ঞার, - চ্ছেদনকর, কৃচিকর, দাখিকর, শোধনকর; কণ্ড, কোঠ, ভৃষ্ণা, মৃত্ত্বি এবং আরের শাভিকর; শুন্য-শোনকর এবং বিষ্ঠা, মৃত্ত, ক্লেদ, মেদ, বসা ও পুরের শোধনকর

এই তিক্তরস অত্তর্গ দেবন করিলে শরীরের স্পন্দরিছিত, মনাওজ, ছত্ত পদাদির আক্ষেপ, শিরশ্ন, ভ্রম, ভোদ, ভেদ, ছেদ ও মুখের বৈরস্য উৎপ্রাহয়।

कशांत-तम छन।

ক্ষাইরস, নমল, মূত্র এবং রক্তাদি ক্ষাকর, প্রশের পূরণকর, ভ্রেকর-শোধনকর, লেখনকর, শোধনকর, পীড়নকর ও ক্লেদশোবনকর। এই ক্যায়-রস অভ্যর্থ সেবন, হৃৎপীড়া, মুখলোষ, উদগ্রাগ্রান, বাক্রোধ, মনাতেন্ত, ক্ষাক্ত্রণ, কর্নে চুম দুম শব্দ এবং আক্ষেপ ও আকৃঞ্ব প্রভৃতি রোগ উৎপন্ন হয়।

यफ्-वर्श विकान।

मधुत-दर्भ।

कारकानग्रामित्रने, इस इड, रमा, मच्छा, भाविधाना, यादिधाना, यतः, राधिया, मायकनारे, शांभिकन रुख्यं, भागा, राधियं, कर्कारे, व्यवाद्, उद्रमुख्यं कडक्यन शिरनाष्ट्र। (अधीद्रितिश्वयः) शियान, श्रम्यतीख, शांखाद्रीकन, र्मान-धांका, श्रद्ध्यं, कौशारे, जान, नाद्रित्वन, रेक्ट्र विकाद, श्रीकररण्या, श्रिक्यां, श्रिक्यां, श्राम्पत्री, प्रकावदा, महित् अक्ष्यां व्यानः, श्रिक्यां व्यानः, श्रद्धां व्यानः, महित् अक्ष्यां व्यानः, वर्षे भागाः, श्राम्पत्री, प्रकावदां, महित् अक्ष्यां व्यानः, वर्षे भागाः, श्राम्पत्रीः, महित् अक्ष्यां व्यानः, वर्षे भागाः, श्राम्पत्रीः, महित् अक्ष्यां व्यानः, वर्षे भागाः, श्रामानः, स्वर्षं वर्षे स्वानः, वर्षे भागाः, स्वर्षं वर्षे स्वानः, वर्षे भागाः, स्वर्षं वर्षे स्वानः, वर्षे भागाः, स्वर्षं वर्षे स्वर्षे स्वर्षे स्वर्षं स्वर्षं वर्षे स्वर्षे स्वर्षं स्वरं स्वरं

अञ्च-वर्ग।

দাভিদ, শামগনী, জামীর, শামড়া, কপিথ, পানিমামগা, বড় কুগ্ বিজ্ঞি, কোপাজ, কৃমি, জ, ডিল্ফুদ, বেজেকল, মাদার জ্লবেতস, জামীর (গো,ড়ালের) দাধ, তজ, ম্রাবিশেষ, সাধারণ জলরস; ক্রিট্র, ডুল্লে দক শ্রান্য, লাব্রি; এই সকলকে সাম, নৃঁ)ভূঃ অলব্র্য বলা যাব।

प्रवाखन-मर्भन।

नवर्ग वर्ग।

तिह, भागा माखते, मागूज, भारत्म, याकात, जे कात्र ए स्वक्रिकामि এই मकलत्क मामानाण्ड नवनवर्ग वना या। कहे दर्श।

পিপ্পন্যাদি, হারপাদি, শিগু মধুশিগু, রশুন, পুরুষ (খেচ তুন্দী, মৌরী, কুড়া, দেবদাক, রেণুক, সোমরাজীফল, মুথা, কাঁচড়, মুবাকানা গুর্গুল, সোণাপাত ও গালু আদি, এই সকলকে প্রায় বটুকা বদা বায়।

जिक-वर्ग।

क्याग्र-दर्भ।

नाट्याधानिशन, व्यवस्तिनशन, निव्यक्त व्याप्तिशन, द्राक्षानिशन, विकला, व्याप्ति, व्यक्त, विकला, व्याप्ति, व्यक्त, विकला, व्याप्ति, व्यक्त, व्यक्त, व्याप्ति, व्यक्ति, व्यक्ति,

खनविज्होंन।

আকাশ হইতে যে জাল বর্ষন হয়, ভাহা অমৃত তুলা, জীবনীর ভৃত্তিকর, ধার্ক্ আগ্রাসজনক, শমন্ম এবং ক্লান্তি; ভ্ষা, মৃত্, মৃত্ত্রি ভল্লা, নিজা এবং দাহের শান্তিকর এবং একান্ত হিতকর জানিবে।

(छोमजन।

ভোগজন, — সাতপ্রকার। যথা। কুপের জাল, নদীরজ্ঞল, পরোবরের জাল, পুকর্নির জাল, প্রাথ্রবন্ধে জাল, উদ্দিদজাল, এবং ক্ষুদ্রকুণেরজাল। বর্ধা-কালে — আন্তরীক্ষা এবং উদ্ভিদজাল সেবন করাই বিধেয়, ইংগ বিশেষ উপকারী জানিবে।

খা इ ভেদে জলগুণ।

বর্ষ ক'লের জ্বল;—গুকুপাক, মধুব এবং সারক; শবংকালের জ্বল,— লঘুপাক; হেমন্তকালের জ্বল,— স্মিঞ্জ বলদারক, ধাতুপোশক, এবং গুক্-পাক; শিশির কালের জ্বল,—কফ এবং ব য়ুন্টকর এবং হেমন্তকালাপেকা লঘুপাক; বস্তকালের জ্বল;—ক্যায়, মধুর এবং ক্রক্ষ এবং জ্বী,মকালের জ্বল,—পাচক।

শরংকালে – সমত জাসই নির্মাল হয়, শরংকালে স্কল জাসই সেবন করিতে পার। যায়।

হেমন্ত শালে, – সরোবর এবং পুছবিনীব জল সেবন করাই বর্জনা। বসত এবং এই আকালে, – প্রস্তাব ও কুপের জল সেবন করিবে। প্রার্ট-কালে, – ফুদ্র কুপের জল এবং নূতন বৃত্তির জল না হইলে সকল জলই সেবনীয় হইলা খাকে।

বিক্লতজন।

কীট, মুক্র, বিষ্ঠা, শব কিখা বিষ, দ্বারা ত্রন্ট অথবা তৃণ প্রাদির দ্বারা দৃধিত যে নুতন জল; তহাতে যে ব্যক্তি অবগাছন করে কিখা দেই জাল পান করে, তাহার বাহ্নিক এবং আড্রিক বিবিধ প্রাকার রোগোৎপ্রহর।

-- य जन निर्वाल शक्ष, जुन । श्रामश्रामित घारा आह् । जार्था । देशी अ अर्थः वार्या प्राप्त पात । स्विष्ठ निर्वाण अर्थः । वर्षः व्याप्त पात अर्थाः । स्वर्यः ।

क्तिगुक्त-मर्भन।

ছেব অস্ত্র শ্রম শ্র লবণাদি কোন প্রকার আফ দ থাকাই রস দেব, কোনরপ নার থাকাই নার্মদোষ; পান করিলে, — পিশাসা, গুকতা, শুল এবং কক-প্রদেক জানিলে বার্মদোষ, এবং অধিক বিল্বে পরিপাক ছইলে কিম্বা ভার হইয়া থাকিলে বিপাক দোষ জানিতে ইইবে। আন্তরিক্জল – সর্বা প্রকার দোষ রহিত।

শোধিত জল।

দোবিত জল হইলে অগ্নিতে কিয়া প্রিষ্ঠ কিরনে গ্রসিন্ধকর তপ্ত লৌছ-পিগু বালুকা, কিয়া ইংপিও তাহাতে নিকেপ করিরা শীতল করিবে, এবং নাগকেশর, চম্পক, উৎপদ এবং পাটল প্রুপ, দির দারা তাহা অধিবাসিত করা বিধেয়।

জলের লঘু গুরু এবং দোগাদোষ কথন।

থে নদী পশ্চিম বাহিনী ভাষার জাল লঘু বলিয়া সেবা জানিবে। যে নদী পুর্বাণাহিনী ভাষার জাল গুরু ব লিয়া সেবন যোগ্য নছে। যে নদী দক্ষিন বাহিনা ভাষার জাল লঘু কিছা। গুরু নছে।

যে সমস্ত নদী সহা-পর্মত হইতে উংপার ইইয়াছে, তাহাদের জন্ম সেবনে কুঠ রোগ উৎপার হয়। যে সমস্ত নদী বিদ্ধাপর্মত হইতে উৎপার হইনাছে, তাহাদের জন সেবনে কুঠ ও পাও রোগ উৎপার হয়।

ষে সকল নদী মলয়-পর্মত ছইতে উৎপন্ন ছইন্নতে, ভাছাদের জ্ঞল দেবনে ক্রমি রোমোন্ডব হয়।

্বে সকল নদা মহেন্দ্র পর্বেড ছইতে উৎপন্ন লইনাছে, ভাছাদেব জ্বল দেবনে শ্লীপদ এবং উদর রোগে দ্বেব হয়।

हिमवान शर्ज इन्हें एवं प्रमाने छिष्ण इन्हें हैं हि, छा इन्हें हिन हिम वार्य का स्था। का प्रमान का का प्रमान का प्रम

ं निर्मी (বগৰত) হইলে কিছা জল নির্মাণ হইলে লঘু হইয়া থাকৈ।
সন্দামি এবং ওজ্জনা শৈবাল সঞ্জিত হইয়া দেখিত হইলে জল মুক

হয়। যে নদী মকভূমিতে প্রবাহিত ভাহার জল প্রায় ভিক্ত এবং লব রস্মুক্ত, স্বহক্ষায় ও মধুর রস হইয়া থাকে এবং ব্যুত বলের পক্ষে দিশে উপক্রী।

জল গ্রহণ করিবার কাল কথন।

ল্কপ্রকার ভৌমজল প্রাতে গ্রহণ করাই বিধেয়, যে ভেড় ভংকার আৰু নির্মাণ এবং লীঙল খাকে। নির্মাণ এবং লীডল, জন্মের এই ড্রইং পরম গুণ জানিবে।

যে জনে দিবারাতে স্থা এবং চ.ক্রের কিবন প্রিড হয়, দেই জল কম কিম্ব নের্হোগ্রারী নহে। সেই জলকে বর্ষার জভ্য সম গুনকারী ব্যাযার।

त्रिके जन खन।

র্থিঞ্জল তি দাবের শৃশ্তিকর, কলপ্রাদ, রসায়ন, মেধাজ্যক রক্ষোচ, শীঙল প্রফুলকর এবং জুর, দাভ এবং বিষরোগের আভিকর জানিব। র্থিবিজল গবিত গাতে এহন করা বিধেয়।

চক্তকান্ত (প্রানিজ মান বিশেষ) ছইতে বে জালোৎপার ২র, সেই জাল পিতার এবং বিমল , এবং মূচ্ছা, পিতা উপ হইরা দাহ উৎপতি ছইলে, বিষ-রোগ, রক্তস্বস্কীর-রোগ, উত্থাদ বোগা, আন, রান্তি, তমক্ষাদ বমন-রোগ এবং উদ্ধানত রক্তপিতা, এই সকলে শীতল জালই প্রশন্ত। পাশ্ব শূলে, প্রতিশ্যায়ে, ষাতবোগা, গলালেশের রোগে, আল্লানে, মৃহ্নোতার্ত এবং নবজ্বর ছইতে সদ্যমূক্ত হইলে, হিক্লা-রোগে অথবা স্বেছ জাল পরিতাগ করিবে শীতল জাল পরিতাগি করা বিধেয়।

निषेत कल, - व युवर्षनकत, कक, व्यक्षित ही शिकत्र, मधु এवर रमधन-करः निषेत क्रम मधुत-द्रमविभिक्टि এवर गाए स्ट्रेटल निक द्रांगकाती, शुक এवर द्रिया वर्षनकत क्रानिट्य।

সরোবরের জল, - পিপাদা-শান্তিকর, বলকর, কবার, মধুর এবং লঘু।
ভড়াগের জল, - বায়ুবর্ছক, স্বায়ু, কবার এবং কটুপাক।

কাপীর জল, - বাও লেখার শান্তিকর, সক্ষার, কটু এবং পিক্তবন্ধনি-

কু.পর জ্বল, – সক্ষার, পিতির্জন্কর, কহুর, জ্মির শীপ্তিক্র এবং রু।

কুম কেপের জান, - অগ্নিকর, কান্দ, মধুন অপাচ খোলাকন নাছ বারণার জাল, - কফার, মান্নিক দা প্রিছর জাদ াং লাছ। জ'ডেন-জাল - মধু , শিক্তম এবং অনিদ্যোগ ব্রহ্ম কুণোর জাল, - ক্টু, সাক্ষার, কাল্ম, লাগু এবা স্থানি দ্বিকর। জন্ম এবং শুলা, - মধুণ, ওক ও দোবদার ।

कृत श्रक्ष विशेष कला, - यथु , अक ध्वर (प्रशिक्षिक)

সমু আল জাল শাসা-গলে, লাবন্ত গবিদিতে এবং ক্রাপ্তে এ এছি। জান করে।

শাইপাদশারে জাগ (সালাস্থানির জাল) – ব্ল প্রাস্থার দে(যোকর, সামেরাগোদ কর এবং গী হিচিত্

জন্দ প্রান্তশার জন্য – পুরের কে সর্প্রেক্তার ১০ তিক, ন্তান্তর ওপর বিশক্তি, বিদ্যুষ্টি ও চিলাস্থা-শাতিকর প্রতিকর, দিলের কাল, শাতিকর প্রতিকর, দিলের কাল, শাতিকর প্রতিকর, দিলের কাল, শাতিকর প্রতিকর কাল

डेम अस भग्ना

ষাজ্ঞাল পাকি কাংবেক, ভাষ্ট্য ক্লেটি ক্লিণ্ গণন্ধলিট ক্লিণ্ শাস্থ্য ক্রিলে, ভাষ্ট্রে উফোণ্ট কলে :

देशकरन्त्र छः।

भंभशीय छ स्थानक, - त यू. महेकतः विशानक है स्थानक, - लिख मैं केतत थरः शानविभक्ते छिरस्थानक, - कक मस्टेकतः, व्यूशीक अरः व्याप्त त्र विक् कतः। भिनित कात्न, - शानवीय छरस्थानकः वमस्र कात्न, - शानवत्मवः, अरः भात्र छ खीद्यकात्न, - व्यक्षातृ निक् छ स्थानक वावस्थात कता वित्ययः वित्यवक्षात्र विवास कत्र वित्यवक्षात्र कता वित्ययः वित्यवक्षात्र विवास क्षात्र वित्यवक्षात्र वित्यवित्यवक्षात्र वित्यवक्षात्र वित्यवक्षात्र वित्यवक्षात्र वित्यवित्यवि

ি দিবাপক, জনু দিবাতে এবং রাত্তিপক জন রাত্তে পান করা কুইবা। উফোদক দুকল ঋতুতেই পথ্য। উফোদক –কাস, জুর, কোটবজ, –কফ, বায়ু এবং সামদেশ্য নুষ্ঠকর; পাছক, কোটভজিকর, সকল প্রকার স্লেখা। নাশক এবং বাছুব সমভাকারক। রাজিকালে উক্লোদক পান করিলে, ও এবং আভ অজীর্ণাদ বোগ উপশ্যিত হয়।

উল্ফোলন সিদ্ধ इहेश विश्वीन, क्लाहीन, निर्मान এवर नम् इहेटन এः ठकुर्याः भित्र এका भ अविकोशाकितन अवकाती इह।

वानि উঞ্জল, जल कुछ इहेबा क्वबरमाला हाचात्र मध्य करत्।

गा तिरकल कल खन

লিয়া, স্বাহ্ন হিমা, মুখপ্রিরা, আমিকরা, বস্তি:শাধনকর, র্ষা, তেয়াকর পিত্রসন্সিপালার শাতিকর এবং গুকা।

কোমল নারিছেল জ্বল, – পিত্র অথাত ভেদক। পাক অর্থাৎ ঝুনা নারি কেলের জ্বল, – গুকুপাক, পিত্তর্দ্ধিকর এবং কোন্তংগ্ধিক। শীক্তকালের নারিকেল জ্বল, – নদমন্ত গা, ছর্দি, মূচ্ছণি, পিত্তন্ত্বর, আমজন্য প্রানি, ভ্ষেণ্ড দাহ এবং বিশ্বনাশক; বিশেষভঃ অজীর্গরোগে নারিকেল জ্বল মহোস্ধিব লম হয় এবং জ্বনিভেও ফলনায়ক ছইলা থাকে। আহার কালীন নারিকেল জ্বল পান করিলে বায়ুব সমতা হয় বিস্তু নিশিভোজনান্তে অজ্বাভের পরে গান করা বিধের নহে।

छु अ विख्वान।

গো, ছাগী। উল্লী, দেবী, মহিবী, অধিনী, নারী এবং ছন্তিনী; ইহাবা নানারপ ওমধ ভক্ষণ করে, ভত্তন ইহাদিগোর হুদ্ধ প্রাসন্তন আমাসজনক । গুফ, মধুর, পিছিল, লী চল, স্লিন্ত, নির্মাণ, সারক, এবং মুহু হইবা থাকে। হুদ্ধ, —বিবিধ রোগ আন এতং ক্ল্যাদির শান্তিকর, পাপনাশক, বলকর, রুষ্য, বাজীকর, রসায়ন, মেধাজনক, সন্তানস্থাপন, ব্রস্থাপনী (শরীর জীব হন্ন ন) নায়ুকর, জাবনীর প্রকর্ম, ব্যন এবং বিরহনের ভুগা হিতকর এবং ওলাবর্জন কর।

ना जिल्ला खन ।

গাডীছয়, - নেতের দোকারী নহে, স্কিন, গুকার রসাংন, রক্তপিতার,

ছातीइक्ष खन।

ছ'গীহর্ম,-গাভীহ্ম সম গু'বিশিষ্ট, সক্ল রো:গর বিশেষতঃ শোধ-রোগে বিশেষ হিতকর।

डेकी इक्ष खन।

উটী হয়,—কক উষ্ণ, কিঞিং লবন রসবিশিষ্ঠ, জাত এবং ব্যু। শোক, গুলা, উদর, মান, কুমি কুষ্ঠ এবং বিষ, এই সকল রোগে উচী হয় বিশেষ হিডকারী।

(यशी इक्ष खन।

মেধী হুগ, — মরুদ, থিকা, গুক ও পিত্ত- ছাত্মাজনক। মেষ্ট্র কেবল বাভিজা ক(সরোটা বাবত্যার।

মাহিষত্ত্ব গুণ।

মাহিষত্য, -- আহিশর নেত্রোগকর, মধুর, আগ্রিনাশক, নিজাকর, স্পীঙল কর এবং গ্রাভ্যাপেকা স্থিত্তী।

একশক গুণ।

ং বাহাদি, গর খুব দ্বিং শুভ নহে, ভাহাদিগকে একশক করে অর্থাৎ গদ জ, আয়া, আয়ভর, গৌর-শর্ভ এবং চমনী। যথা।

> থরোহখোহখতরো গোর শরভশ্চমরী তথা। এতেটেকশফাঃ ক্ষত্ত শূলু পঞ্চ নথান্ পশূন্!

একশক জন্তর ভ্রষ — উষ্ণ, বলকর, ছন্তশাদের বাছরোগয়, মধুর ল এবং পশ্চাৎ লবন-রসবিশিষ্ট, কক্ষ এবং লঘু।

नाजीइक खन।

নারীজ্ঞ, – মধূব পশ্চাৎ ক্যাল, হিম, জ্ঞাবনীল, অযুভ জ্ঞান দীতি ক্র।

হস্তিশীহ্ম গুণ।

ুহতিনীত্ত্বা, — মধুর প্শতাৎ কষ্যা, তেজ্ঞান্তর, গুক্, ভ্রিষ্ক, হিত্যাকর, শীতল, চন্দুর হিতকর এবং বলকর। প্রাভিংকালের ইন্দ প্রায়ই ভার ও দী চল হয়। অপর হিকালের হ্যা বায়ু অভানকর, প্রাভিনাশক এবং চকুর দী গুকারী।

ক্রিছিল প্রায় ভার এবং বৈজের রোগকারী। ছ্র অগ্নিতে সিদ্ধ কবিলে দায়ু হয়। অপ্ন ছ্রেব মধ্যে ধারোক্ষ ছ্রেই গুনবিশিক্ত, দোহনের পশ্চ.এ শীতল হউনে বিপ্নীত গুন হইয়া থাকে।

নারির হ্র অপক বস্থায় (ছভকর।

সকল প্রকার একা অধিক সিজ করিলে তাব এবং পুর্ত্তিকর ছয় !

হু দ্ব শনিক গন্ধ কিমা অভারস জামিলে অথবা তাহ। বিবর্ণ, বিরম, লবধ-মুক্ত কিমাবিতাথিত (ভিডে বাগুরা) হইলে পরিভাজ্য জানিবে।

पशि विकास

দধি জিবিধ। যথা; মধুব, শ্বান এবং শহানা। সর্বপ্রকার দ্ধিই প্রতাৎ ক্ষার। দধি,— স্থিন ও উষ্ণা পীনস, বিষম স্থা, স্মতিসার, স্মৃতি এবং মূত্র-ক্বান্তেবোগের পাতিকর, স্থান, প্রাণকর এবং মন্ত্রনক।

मधूत-द्रम पृष्ठि, – निकादिशो छि००। पर এवर कक ও प्राप्ति हिमान्त्र है क्यान्त्र हिमान्त्र है क्यान्त्र है क्यान्त्र प्राप्ति । द्राच्याः द्राच्यकत्र , এवर ष्याः हालान्त्र है क्यानित्य ।

দ্ধি মন্দ্রজাত হইলে অর্থাৎ উত্তমরূপে না বসিলে, - বিদাহী হর অর্থাৎ বালা জুল এবং মল, মূর, পিছ ও কক রুলি ছুইরা খাকে।

शरामधि खन न

গাবাদধি, – স্নিগ্ধ, মধুর, অগ্নিকর, বলকর, কচিকর এবং পবিত্র।
ভূগিদধি গুণ।

ছাগদখি, – লঘু, ৰফ-লিজ এবং থাতজকর রোগত্ম, অর্থা, খাস এবং কাস রোগের হিতকর এবং অগ্নি বর্জনকর ধ

মাছিষদ্ধি তাণ।

माश्चिम्यि, - मध्त, (क्षाच्हतू, वायु शिख्त मालिकत्, कक्षाम नक्त्रं अत्थ चिष्ये।

ভিট্রী বৃধি গুণ।

के हो मि.- शांटक कर्रे मा कारयुक्त, धक्यांक এ१९ एकमत्त, वाक, कर्य, क्रिंग छ उनती त्रागंध।

दमयनचि छान।

মেষদ্ধি, — বাজজোলা এবং অর্শনের প্রেকোপকর, রাসে এবং পাকে মধুর , চলুরোগের এবং দোষেব বদ্ধনিকর।

व्यभिने मिंध खने।

অস্থিনীদ্ধা,— অগ্নিকর, নেডারে অভ্ভিকর, বাতবদ্ধান্সর, নাশান, উক্তির্ কথার এবং কফ ৩ মুড্র।

नाजिन्धि खन ।

নারীদ্ধি,— রিষ্ণ, বিপাকে মধ্য বসকর, জুপ্তিকর, ভার চল্লুর হিভকর ও দোষসাঃ

रु खिनीत निधि तन।

হস্তিনীর দধ্যি – ল্যুপাক, কফনাশক, উষ্ণবীর্ঘা, জ্ঞানিকর এবং মূল, বন্ধনিকর।

গব্যাদিযে সমন্ত দধির বিষয় হলা হঠল, তাহার মধ্যে গ্রাদ্ধিই সর্ক্ষরিষ্ঠ। গ্রাদ্ধি, – স্বাহ্ত পরিভাত অর্থাৎ বজ্রে ছাড়িত হই ল শ্ীরের প্রক্রিশাধন করে, বায়ুর শান্তি, করে, হোলা হৃদ্ধি করে বিদ্ধু পিত রুদ্ধি করেনা।

भक्तइरक्षत मध्यन।

সিগ ছথে যে দ্ধি উৎপ্র হয়, তংহা যায়ু প্রিয়, কাঁচকর এবং ধাতু অগ্নিও বলের বন্ধনিকর।

मित मत ख्रा

দ্বির সুর, – গুরুপাক, তেজকর, বায়ুর শু।ডিকর, জায়কর এব বফ ও ভক্তের বন্ধ নকর।

जगांत मधि खन।

দ্ধি অন্ধি ছইলে অথাং ক্রেড্গা ন। থাকিলে – বক্ষ, মলরোধক, বায়ুবন্ধ নিকর, অগ্রেকর, সমুক্ষায় এবং কচিকর জানিধে।

দ্ধির মাত গুণ।

দ্ধির মাত অথবা দ্ধি নিঃপৃত জল, — ভৃষ্ণা এবং ক্লান্তিছারক, শুখু শারী রর মার শোধনবর অল, কবায়, মধুর; বাতকফল্ল কিন্তু র্য্য নছে। প্রাহলাদকর, মনেব ভেদকব, বলকর এবং ক্রিকর।

দধি যদিও তিবিধ বিশ্ব প্রকার ভেদ সপ্ত প্রকার জানিতে হইবে যথা; স্বাহ্ন, আঙ্গা, আভালা, মদাজাত প্রভ্রাজাত, দ্ধি-রস, এবং শাসার দ্ধি; এই স্প্রশ্রেই শিখিত হইবা।

দ্ধিবিজ্ঞান সমাপ্তা।

তক্র বিজ্ঞান।

তক্র, — মধুব এবং অস রসংশিষ্ট এবং পশাং ক্যার। শুক্র, — উফ্লবীর্য্য লখু, কক্ , অগ্নিকর; গণল শোফ, অভিসার, গ্রহণী পাতু, অর্শ, প্লীহা, গুল্লা অক্চি, বিষণজ্বর, ভ্যা, বমন, প্রসেক, শুল মেদ শ্লেখা ও ব য়ু; এই সকল রোগয়; পাকে মধুব, মুখপ্রিয়, মূতর্জ্ ও পান কিয়া জক্ষণ জনিত রোগ ছইলে ভাহার শান্তিকর; তে, জর উদ্দাপক নতে।

তক্র গুণ।

4

আন্ধি জল মিশ্রিত যে দধি হবতে নবনীত এহণ করা যায়, সেই দধি আনত নত গাঢ় কিম্বা আতান্ত ভলে না হয় তাহাকে তক্তে কহে।

জ্ঞানর হিত দ্ধি মন্থন করিয়া নবৈনীত প্রহণ করিলে, সেই দ্ধিকে যোল কহে। সেই যোল ক্ষতরোগে, প্র্বল শরীরে, এবং মৃত্যু, ভ্রম, দাহ ৩ ২০ছ পিতরোগে এবং প্রীআ্কালে সেবা নহে। শ্রিমান্দো, কফ জারো গ, ইন্দিয় দারের অবরোধে পর্যাৎ মল মুক্ত প্রভৃতি ইন্দির কার্য্য সর্ল না ধারিলে প্রবং বাসু স্থাইইলৈ ৪ শীতকালে ব য়ু সেবা জানিবে। শুক্র মধুব হইলে, — শ্রেষা কুপ্রিত পিতের শান্তি হয়; জ্ল হইলে, — ্রিয়ার শান্তি ভাগিতের রজি হয়।

ৰায়ুৰ প্রকোপে অলবস বিশিষ্ট তক্ত দৈয়ে বন সহিছ সেবন বিধেষ। ডিভে প্রকোপে মধুব হল বিশিষ্ট তক্ত শর্করা সংযোগে দেবা এবং কংগর কোপে শুঠী, পিশালী, মরিচ এবং যবক্ষার যোগে তক্ত দেবন বিধেয়।

टर्ककृष्ठिका खन।

ভর্নকুচ্চিক জর্পাৎ ছানা, নমল মুত্র রোধক, বায়ুরুজ্কির, কক এবং মতিশন্ধ গুক্ষাক।

ভক্তাপেকা-মণ্ড (ঘোলের) এবং দ্বানা ক্ষণেকা নংনতে প্রত্তর। কিলাটি গুণা

(অর্থাৎ ক্রীর) গুরুস্কে, বাহা পুরুষত্ব র্লিকর এও নির্মাপ্রদ্য সপ্ত হ প্রস্তুত। গাভীর চ্পা প্রবং মারট গুল। মধুর, পুঞ্চিষর, এব ভেজসং।

गति । भाक न नि उप।

ममू (काभन, मधुन, कषात, जेनर पञ्च, भी ठल, ्तिन, ५ शि श्रिक्त कर, सूथिता, मन्यू ब्रम्थाकिक, नांबुलिख्य, टक्क्या, श्रिमिशी क भग्निमान, भाषाम, खन এবং ध्यानिद्धार भा खिकत, कण এवং यि एत व्यक्ति न ध्यान कर, बराकत; श्रुक्तिन अवर भागदराशमानक। महमान्या । नन्यो क नामकि वामकि शिहा श्रिक विद्यास विकार कांनिता।

অপক হগ্ধজাত নৰনীত গুণ।

অভ্যন্ত ক্মিন্নকর, মন্ত্র শাভল, কোব্রতা স্থান্নত, এলেব দুর্গিনির মলের সংগ্রাহক, রক্তপিত্ত এবং চক্ষুরোগের শাতিকর এবং প্রায়কর।

5८क्षंत्र "त १९ ।

বা মুনাশক, ভূঁ গুকর বলকর। শেজজন, বিশ্বকর, কিচিকর, আ'হ্, শিকি-গাবের মধুন, বক্তাগিতের শান্তিকর এবং গুকানাক। পুর্বেশিক্ত দ্ধি, তক্র এবং নবনীত প্রাভৃতির মধ্যে গ্রাই উৎর্গ্র ; ছাগমহিষাদির হ্যোবে সকল দ্ধি ইত্যাদি উৎপদ্ম হয়, সেই সেই ত্রবা অংশ হ্যের গুণাহ্রণ ক্ষি,কর জানিকে।

যে যে রোগে দধি দেওয়া যার।

গীনসরোগে, অহিসার রোগে, শীত-ভুরে, বিষম-জুরে, অফচিতে;
মূত্রকুচ্ছে, এবং কীণ রোগে, বিবেচনাহসারে দধি দেওয়া ঘাইতে পারে।
শরংকালে, গ্রীম্মকালে এবং বসন্তকালে প্রসন্ত, কিন্ত রক্তপিভাধিকারে
এবং কফেতে দধি দেওয়াবিধেয় নতে।

যে যে রোগে ভক্ত দেওয়া যায় !

শোপরোগে উদরীরোগে, অর্শরোগে, এইনী রোগে, মুরাখাভরোগে, অফ্চিতে, পাঞ্রোগে এবং বিষরোগে বিবেচনাম্সাবে তক্ত দেও। বাইভে পারে। ক্ষরোগে এবং মুর্বল রোগে তক্ত দেও। ক্র্রেগ নিছে। লীভকালে, ক্ষরিখান্দা, ক্ষরোগে, উদরকম্পরোগে এবং মুফ্ট ব্য়ুজন্য পথরোধ রোগেও ভক্তবিবেচনা পূর্বক দেও। বিধেয়।

ঘৃত বিজ্ঞান।

হত - সেখি। শীত্রীর্যা, মৃত্রু মধুর, অংশা, অভিযান্দ, ব্রিষ্করর, উদাবর্জ, উমাদ, মৃথী, শুণ, জুর, আনাহ ও বাত-পিত্তের শান্তিকর, অগ্রির
দীন্তিকর, ম্মৃতি মতি, যেধা, কান্তি, অর, নোবণা, সৌকুমার্থা, ওজঃ, তেজঃ,
বল এবং আয়ুর ইর্জনকর পুরুষত্ব হন্দনকর, প্রিত্ত, বরঃছাপক (শরীর
সবল থাকে) গুরুপাক, দৃন্তি-রহিত্কর, দেআ্বর্জনকর, পাপ ও জাং ক্রী
শান্তিকর, বিষয় ও ক্র নাশ্রি।

भवाश्व खन।

পরিপাকে মধুর: শীতল, বাত-শিত ও বিষয়, দৃক্তির (হতকারী রদকর এবং গুণো সর্বপ্রধার সভাপেকা উৎকৃষ্ট।

ছागाञ्च खन।

শামিকর, দৃষ্টির ছিতকর, বলর্জনকর, কাস, খাস এবং ক্ষরেরাগের উত্তম পথ্য এবং লঘুণাক।

মাহিষয়ত গুণ ।

ু মধূব-রদ গুক্পাৰ-রক্ত-পিত্তম কেখাকর, বাচলিতের পাতিকর এবং নীঙল।

মেষী মূত গুণ।

শ্রু, পিছের প্রকোপকর নছে; কফরেরাগে, বায়ুরোগে, যোনি দোষে, শোষরোগে এবং কম্পো-বিশেষ ছিডকর।

একণফ জন্তুর মূত গুণ।

लघु, উक्क नीर्या कथाव्य, कक्का, अधिव मोश्यिकत এবং মূত্র রোধকর। নারী প্রশোর স্মত।

অমূচ তুল্য, মগ্লি ও শরীবের বর্ধনকর, লয়ু এবং বি,যর শান্তিকর। হস্তিনীর মৃত্ত গুণ।

ক্ষার, মল-মূত্ররোধক, ভিজা, অন্নিকর, স্মৃত্তা, ক্ষা, ব্যাও ক্মির হিভকারী।

ক্ষীর মূত গুণ।

মনরোধক, রক্তু পিতা ভাম এবং মুছ্ছার শাতিষর এবং চতুরোগোর হিড়কর।

সুভেরেমল গুণ।

মধ্ব, সারক, যোনিশুল, কর্ণশূল, নেতৃশ্ল এবং শিরংশুলের শান্তিকর। মতের মল, —বভিজেমা, নস্ত এবং আকিপ্রণে উপদিউ হরু।

পুরাতন ঘুত গুণ ৷

সারক, পরিপাকে কট্-রস, তিলোকনাশক, মৃক্ত্র মেদ, উন্থাদ, উদ্বিদ্বিদ্যা, জুর, গারল, শোফ, মৃনী এবং যোনিশুল, কর্ণশুল ও নেত্রশুলের শান্তিকর এবং অগ্নির দীভিকর। প্রাচন হত – বৃত্তিকেরা, নস্য এবং অকি-পুরবেও উপদেশ করা গিয়া থাকে।

পূরাতন হত, – তিমির, খাদ, শীনস ও জ্বর-বাসের শাস্তিকর, এবং মুক্ষা, কুঠা, বিষ, উথাদ, গ্রহ এবং অপকারনাশক।

একাদশ শত বংসরের রক্ষিত প্রাতন যুতকে কুইসপি কহে, ভাষ রক্ষোম ; উহাপেকা অধিক কালের রক্ষিত যুতকে মহাযুত কহে। মহাযুত ককম এবং বায়ুপ্রাধান বাজির পক্ষে পোর। ইহা বলকর; প্রিত্ত, মেধাজন্ব এবং তিমিরনাশ দ°; এই যুত সকল প্রানির শান্তিকর।

रेडन विख्वान।

শ্রেছ, — আংগ্রা, উসঃ, তীক্ষ্ণ, মগ্রর, পাকে মগ্রর, প্রক্তিকর, ভৃত্তিকর, দ্রামাধ্যের উ ওলক, স্থান, নিশদ, গুক্, সারক, বিকাসি, তেজজ্ব জ্বের প্রানম্য সম্পাদক, মেধা, দেহের কোমলগ এশং মাংসের দৃত্তাকারী, বর্ণকর, বসকর, দৃষ্টির হিতকর, মূর্রোধক, লেখনকর, ভিজ্ঞা, পালাত ক্ষামা, শাচক, বাত্রোমাগ্রী, রুনিনাশক; শীত-পিত্তজ্বক নছে; যোনিশুল, শিরশ্রেল এবং কর্ণশূলের আজিকর, গর্ভাগ্রের শোধনকর, ছিল্ল জন উহিলিই, বিদ্ধা, চৃত্তে, মধিত, ক্ষতা, পিনিচত, ভগ্ন, স্ফুটিত, ক্ষাহদ্য, অগ্রিদ্য বিল্লিই, দারিত, অভিহত, ভুর্ভাগ, হ্বা, ব্যালাদি কর্ত্তক দংশন; এই সমূহ ভূলে ও পরিষ্ঠেন, মর্মান্ত জ্বানাহনে ভিল্পতিকই ব্যব্দ্যে।

বভিজিমাতে, পানে, নলো, কর্পুর্ণে ও ফল্পানের সহখোগ ও বঃ জমনাথে তিল ব্যবস্থে।

এরও তৈলগুণ।

মধ্র, উষ্ণ, উক্ষ্ণ, অধিকর, কটু পশ্চাৎ ক্যায়, স্ক্ষান নাড়ীশোধনকা ত্ম.কর হিতকর, র্যা, পাকে মধ্র এবং বরঃস্থাপন (দেহ শীপ্র জীর্ষয় না ্যানি এবং শু ক্রের শোধনুকর আরোগা, মেধা, কান্তি, স্মৃতি এবং বলে উংগাদ্যে, বাত, স্থোধ ও দহের শেধোজাগের দোবহারক।

নিয়াদি, তৈল গুণ।

, নিস্ত, অতসী, শৃণু, কুম্পু, মূলক, দেবতাড়, যোষ্কার, আর্ক কল্পি।
আল, বড এংগইচ, শীলু, করঞ্জ, ইন্সুনী, শিলু, সর্থপ, স্থবর্চনা; (ভিসী
বিভঙ্গ এবং জ্যোতিমতী; এই সুমুক্রে বীজের এবং ফলের জৈন।

ভীক্ল, বহু, অন্ত্র্য়-বীর্ষ্য, রনে এবং পাকে কট্ট, সারক এবং বাত স্লেখ্যা কুমি, কুষ্ঠ, প্রামেষ এবং শিরোরোগের শান্তিকর।

मन नी: खत रेजन छन।

বাচল, মধুন, বলক্র, কটুপাক, নেত্রের অহিত কর লিছে । উষণ, গুৰুপাক এবং প্রিপ্তান্থাপর।

मार्चल टेडन छन।

ক্ষিন শক, কণ্ড এবং কুষ্ঠনাশচ, এছু, বক, মেদ এবং বায়ুর শান্তিকর,, শেখনকর, কটু এ। আহর দী শুচর।

हेजूरा रेजन खन।

কৃদ্নি। শার জালপ ভিক্তা, লঘু, কুঠার গে এবং বৃদ্ধি, ওকে এবং বঙ্গের ক্ষাকর।

কুসুদ্বীজের তৈল গুণ।

পরিপাকে কটু সার্যপ্রকার দেখার্রন্দর, রক্তেপিওজনক, তীকু, নে তার অভিতকর এবং বিদাহী।

िशंडापि टेडन खन।

চিরাতা, তিনিশ, বহেতা, নারিকেল, কুল, গীলু, জীবন্তী, পিরাল কর্ম্বার, স্থাবলা, জপান্ত, এর্মাক্তক, কর্মান্ত প্রস্তৃতির তৈল। মধুব-বার্থ্য এবং পাকে মধু, বায়ুপিজের দমনকর, শীত-বার্থ, নেজের অহিতকর মলমুক্তজনক এবং অর্থানাল্য কর।

মগুকাদি তৈল গুণ।

মধুক গাভারী এবং পলাদের তৈন। মধুর ক্যায় ও কফ-পিডেয়।

তুবরক এবং ভল্লাতক তৈল।

. पे का, मध्त, क्यांत्र, श्रमांत जिल्हा, वात्रू, वक, स्मा, क्र्षं, स्पट्ट अवर कृतिक, अवर जिक्क अस्य जाति हिन स नामक ।

সরল ও দেশদারু আদি তৈল গুণ।

্ সর্ল, দে দ.ক. গান্তীর শিংসপা এবং অগুক ; ইছাদিগের সাহের তৈল।

্ তিক্তা, মট্টা, ৰখায়া, ভ্**ষ্টাত্রণেকর**, শোধনকর, ক্রমি, কফা, কুষ্ঠা এবং বায়ু-নি.শক।

ভুষি আদি তৈল গুণ।

पृथी, (काव'ज, वर्षी), अवसी, भगभा, मश्रमा, भीता, कालाल व मश्रिमी हे इंदानियात रेजन।

ভিক্ত, কট্, কলায়, দেহের আধোভাগের দেবিয়া; কুমি; কক, কুষ্ঠ এবং ব য়ুব শান্তিকর গুড়ইত্রণের শোধনকর।

या जिल देवन छन।

সর্বপ্রকার দোষের শান্তিকর, জ্পাতিক্ত, জ্গ্লির দীপ্তিকর, লেখনকর, প্রাণ্, প্রিত্র এবং রসায়ন।

এনৈ ধিকা তৈল গুণ।

একৈ বিকা তিল অর্থাৎ বৃদ্পুর বিষ্কৃতন, — মধুব, অতি শীতল, পিত্তম, ৰায়ুর জিহর এবং শ্লেমার বৃদ্ধিকর।

- আম্বীকের তৈল এ।।

জ্পতিক্ল, শতি হুগলি, বাতলেখার শান্তিকর, কক্ষ, মধূর, ক্যায় এবং ইহার রসের সম্ভাগন্ত পিতকর।

अक्त रिज्ञान मर्या जिनरे जन्हे छेरकू है सहित्य ।

वमा, (मपः वगः मर्ज्ज। विक्कान।

গ্রান, অনুপ এবং জলচর জন্তথ বসা, মেন এবং মজ্জা,— গুৰু; উষ্ণ,
মধুব এবং ৰাজনাৰক ম

এক-পক্ষ, মাংসভো জী ও জালল প্তমিগের বসা, মেদ এবং বজ্জা, ল, শীতল, ব্যায় এবা কুক্তপিত্নাপুক।যু প্রতুদ আর্থাথ শীকারী পাকী কিছা সাধারণ পাকী সকলের বদা, দেল এবং মজ্জা, – লেখানাশক।

ण्ड, रेडन, तमा, रमन अवः मञ्जाः अहे मनन উक्टरहा इत श्र्यांक अवः वायूत मास्तिकद्र खानिस्त ।

मधु विख्डान।

মধু, -- মধুর পশচাৎ ক্ষায়, কক্ষ, শীত্র, অয়িকর, বর্ণকর, বলকর, লয়ু, কান্তিকর, লেখনকর, আংল, তার্করের, লেখনকর, আংল, কান্তিকর, লেখনকর, আংল, লেখনকর, দাংগ্রাহী, দৃষ্টীর হিত্তবর, স্ক্ষাল্থগামি, পিতে, প্লেখা, মেদ, মেদ, হেকা, খাল, অভিসার, ছর্কি, ড্ফা, কুমি এবং বিষয়, প্রক্রমকর এবং জিদোষয়। মধু, - লখুতা হেডু ক্ষম্ম এবং পিছিল্ডা, মাধুর্য ও ক্ষাম্ম ভাবপ্রযুক্ত বাত-পিতিয়।

মধু অফীবধ। যথা; পৌতিক, নামর, কোন্ডা, মাকিক, ছ'তা, জার্য্য, ব উদালক এবং দাল।

পৌত্তিক মধু গুণ।

ইং। পিজন বর্ণ পতিক। নামক হৃহৎ মন্কিক। স গৃহীত; ইহার বর্ণ মন্দিস্তের ন্যার, এই পৌতিক-মধ্ সকল প্রকার মধ্ অপেক্র, কক্ষ এবং উঞ্চ, কার বিষ সংযোগজন্য বাতঃক্ত এবং শিতের প্রাক্তির, ছেদনকর, বিদাহী এবং মাদক।

ভাষর মধু গুণ।

ইং। জনর স্থিত ; এই জানর মগু - শিচ্ছণ এবং অভান্ত মধ্ব জনা গুক্পাক।

क्कि मधु खन ।

हैही शिक्त वर्ग क्या मिकश्कृत हैं हैं। त्र किशा এहें कि अ मधुक को वर्ष गया अवर (तक्षमकत्र)

মাফিক মধু গুণ।

ইছা নীলবর্নধান মক্ষিকাকৃত, ইছার বর্ব তৈলের সম এই মাজিক মধ্, ব্যুতর এবং কক্ষ; ইছা সকল প্রানার মধ্র সংগ্রুকা উৎকৃতি, স্থাসাদি রোগ ইছা বিশেষরা, প্রযুক্ত হয়। সাত্ত গুক্তিণ কি, হিন, পিছিল এবং ক্তে-পিছেল।

क्षित्रश खरा ।

ইং! বোলভাব চাক সঞ্চিত; এই বংটীজ্জ মণু নংবা প্রকার মেহের শান্তিকব, ক্রমিয় এবং অভান্ত ভিতকারী।

व्यार्थामध् छन ।

ইহা ক র্য নাদক দীঘ ক'বিশিপ্ট আন্তর সদৃধ নিক্তিত। ইহা নেজে বিশেষ দিতার, বধায় ৺ৡাচিত না নথাত বায়ুল্লিকর নহে।

छेकानक भर् छन ।

ইংগ উইপোকার্ড : কচিকর, স্থারের হিতকর, কুর্তু এবং বিশ্বর। দুর্খ দি উষ্ণ, মন্ত্রপিত্রতার এবং পাকে বটু।

मान ग्रां खन ।

ইং। ইন্দ্রনীললের সম ক্রম্ম ম'ক্ষণা টুৎগর, ব্ল ক্ষব কোইরজাত ; এই ক্রম।

सू उन मधु खन ।

পৃথ্
কিন্ত, সারক এবং সমধিক শ্লেখানাশক ২ছে।

পুরাতন মধু গুণ।

(मृत व खून क न भिक गः शि व (तथन कर ।

পক মধু গুণ।

ভিদেশ্বর পাত্তিকর।

ত্ৰক মগুপুৰ।

जिल्लास्य अ क्षकत्र।

মপু নানা, প্রকার দেবেরে সহযোগে নানকিও বোগ এট করে।
নানবিধ দেবেরে সারাংশ মিলিভ জান্য ইহা অভ্যন্ত উৎকৃষ্ট দেবা। দেবা,
সা, গুল, বীর্ষার, এবং বিপাকে পরত্যার বিক্ষা; নানাপ্রকার প্রত্যাব বস
হাত্য উৎতর হল বলিয়া এবং সবিধ মিলিকা হইতে জাভ হেতু হইতে
নত্যান উল্লেখ্য মার্থার স্মান্ত স্থাভার প্রেফ অভ্যাকার কহে।

भक्तिकात विष म स्वान खना मर्का श्रीत भन्ने छिन मध्यात विकक्ष एन श्रीख हा। जान्य छिन इनेटल किया छिन भिलित करेटल हैन। तिस्त मध हैना थाटक। ज्यून्यात नोहल बत्य विभिक्ष खेराधव तम करेट हैं छिन्ल्ल हमा छिछ महत्यान हैश्रात विश्वति छन्। हिन्द खाल्त भवित नद प्रक्षित इनेटल हा अस्त विश्वति इनेटिक। छिन्द्रना भिल्य में त्यान कार्या नविद्यत मानिकार छन्। ज्यून प्रमास विश्वति स्वानिकार विकास विश्वति स्वानिकार विकास स्वानिकार स्व

है कू विख्वान

हे कू - महून, शांटकछ मधुर, धकुशांकः भी उत्तर १८० (११०) हुन , १६ इकिन्द्र, उक्कशिखंद कृषि अवर कक क्रान्तन ।

हुँ जिन्द्र, বক্ত গিতাই কৃষি এবং কফ জানক।

है क् বিবিধ প্রকার। যথা।— পোতুক (গুডিইফু) ভীকক, বংশক
সোম-শাড়া ইকু) শতপোরক, কান্তার (কাজনীইফু) ভাগদেলু,
কার্ডেকু স্চী প্রে, নিপাল, দীর্ফারে, নীলপোর এবং কোল্যহ। কেবল
ছুশতার ভারতদ্যে ইকুর জাভিভেদ জানা যায়।

পৌণ্ড ক এবং ভীক্ষক ইক্ষু গুণু।

অপ্রতিশ, মধুর, ঝিন। প্রিকর শ্লেম্ল সারক, স্বিদাহী, গুলাণাক

यः मक हे क्कू खुन ।

পুর্বোক্ত ছই প্রকার ইক্ষুর সমতুল্য গুণবিশিষ্ট, এবং কিঞ্চিৎ সক্ষার। শতপোর ইক্ষু গুণ।

वश्मरकत्र मम छन विभिन्ने, किथिए उछ धवर व यू मास्तिकत्र।

কাজলি এবং তাপদ ইক্ষু গুণ।

এই উভন্ন প্রকার ইক্ষ্ট বংশকের সম গুণ বিশিষ্ঠ। কাঠেষ্ঠক্ষু গুণ।

আঞ্জি ও ভাপদ ইক্ষুর তুলা গুণ্মর এবং বায়ুর প্রকোপকর।

সুংগীপতা, লীলপেরে, নৈপ লীএবং দীর্ঘপ্তা ইক্ষু গুণ।

वाश्वत वर्ष्वनकत, ककलिल्डिश, कमाध्र अवर विमारी।

কেশকার ইক্ষু গুণ।

গুক্, শীতল, রক্তপিত এবং কর রোগয়। মূল এবং মধ্যহল অং মধুর।

नकन श्रेकांत्र हेर्क्नुत जगा नरनद्रमविनिष्ठे बानिटत ।

দন্তনিজ্পীত্ত ইকুর্ম গুণ।

ক্ষ জনক, অবিদ।হী, বায়ু পিত্তন্ন, মুখের প্রীতিকর এবং তেজ সর।

যন্ত্র নিজ্পীড়িত ইক্ষুর্গ গুণ।

श्रक्षाक, विमाशी अवः मन (ताधक।

পেক ইক্ষুরা গুণ।

(প্রক্ত অর্থাৎ পান্ধকরা ইস্কুরস) গুক্পাক, সারক, স্থিয়, তীক্ষ

ফাণিত রস।

(কাণিত পর্বাৎ বাতাসার পাক যোগ্য রস) গুরুপাক, মধুর, • নেজা কারী, প্রক্রিকর বিস্তু তেজস্কর নহে এবং জিদোষজনক।

स्वासन-मर्भन।

रेकु ७५ ७।।

সক্ষার, মুধুং, অত্যন্ত শীখন নহে, ব্রিঞ্জ, মুত্র শোণিতের শোধন, কর, কিন্তু অধিক পিঞ্চান্তিকর নছে, বাভ নাগক, মেদ এবং কফ জনক, ব্যকর এবং র্ষা

. ' পূর তন গুড় গুন।

পিতনাশক, মধুর, ভদ্ধ বাতনাশক, শোনিতের প্রাধানকারী অভিশন্ন গুণ বিশিষ্ট এবং উৎকৃষ্ট দ্রবা।

बरमखिकाथछ 📭 । भर्कता i

্মংসতিকা গও অর্থাৎ মাংহীন কঠিন কিছা নিরস গুড়) এবং শেকর।
অর্থাৎ চিনি) – নির্মান, শীতস, স্নিয়, গুকুপাক, মধুর, র্ষা এবং র্জুপিত
ত ভূকানু শক। ইহারা জনশঃ যত নির্মান হর, ততই স্মিয়, মধুর, গুকুপাক, শীতস এবং সারক হয়। মংস্তিকাখণ্ড এবং শক্রা, —সভাবভঃ
যেরপ গুণবিশিক; ইহাদিশকে আবিত করিলে ও তক্তপ গুণ্দারী জানিতে
হইবে। শক্রা যত সারবিশিপ্ত নির্মাল এবং কারহীন হইবে, ততই গুণ্কারী জানিবে।

मध्मक्ता।

ছ দি এবং অভিসার নাশক, কক্ত ছেদনকর, মুখপ্রির, ক্বার-মধুব পাকেও মধুর।

যবাস শর্করা গুণ।

মধুত, কষায়, পশ্চাত তিক্ত, শ্লেখা নাশক এবং সারক !

যাবদীয় শর্করা গুণ।

দাহ এবং রক্ত ভিন্ন, এবং ছুর্দ্দি, মুচ্ছ্ । পিপাসা নাশক ।

মধক পুষ্পাক্ষাত ক নিউ গুণ।

মধুকপুষ্পা (অর্থ মউন পুষ্পা জাত ফানিত) বাত-পিতের প্রকোপকর, ফ্রেন্মালক, মধুর, পাকে ক্যায়, এবং বর্তিদোব নাশক।

मप्र विक्रान।

শারসমূক্ত সর্ব প্রার মদাই পিতপ্রকোপকর; শারিকর, কছিকর ভেদক বাদক বাতলেখানাশক, মুখ প্রিয়, বন্তিশোধনকর, সর্থাক, বিদাহী উন্দ তীক্তু, ই শ্রের উত্তেজ্জ, প্রফুলকর, এবং মলষ্ত্রেব বর্ষনকন্ন।

न चीक भना खन।

भाषीक मना व्यर्थार छाका किया व्याज्यत्रमना, व्यतिनाही, मधूर, कक शाम्धार कथान्न, मधू, जातकः अतः भाषाद्वाभ छ विषमञ्जद नामकः स्ही मधुद बन्निया दल्लिख्टन दर्भ छ नावटक्य छानितः।

स ब्रियमा खन ।

থাক্সরমদা তেশকামদোর সহিত অংশই প্রভেদ জানিবে। বায়ুর বর্ষন-কব, বিশদ, কচিফ্ব, কফনাশক, কৃশক্রি, শ্যু, কষার, মধুব, মুখপ্রির-প্রগারি ও ইতিমধেব উত্তেজক।

স্থার। গুণ।

সামান্যত, কাশ, আর্প, এইনী-দোষ, মূত্রাঘাত, এবং বায়ুব শান্তি-কারিনী, স্তন্য এবং রক্তক্ষরে বিশেষ হিতদায়িনী এবং পুঞ্জিও শ্রির উল্লেখ্যারিনী।

খেতাজাত স্বা গুণ।

ে খোলাজাত হবা (তথাং শকরে। জাত হবা) কাস, শশ, গ্রহনী, শ্ব'স এবং প্রতিশায় বোগে এবং ছর্দ্দি, অক'চ, হৃদয় এবং কুক্ষিনেশের বেদনার এবং শূল রোগের বিনাশকারিনী, এবং মু্ত্ত, কফ, স্তনা, রক্ত এবং মাংসের বর্ত্তনকারিনী।

যবআত সুরা জন।

ক্র দেশবের প্রায়র কারিনী। কফ, বাজ-আর্শ, ও কোর্ছ রোগের শান্তিদায়িনী

এবং পিউ ও অংশ কককারিনী, এবং ককা।

মধুলিকাজাত সুরা গুণ।

র্মুলিকা জাত (অর্থাৎ মউরিক্সাত) স্থা, - পুর্বেজ যবজাত, স্থার' সম্প্রণ বিশিষ্টা, দল মূত্রোধিনী, গুলু এবং শ্লেখাকারী।

আক্ষিকীজাত সুরা গুণ।

আকিনীকাত হার', (অর্থাং তিনিশব্ধক জাতহারা) – পুর্বোক্ত হারা দাদা-লার গুল বিশিষ্টা, কারা; অপ্পানফকারী, তেজোর্দ্ধি এবং পরিপাক-কারিনী।

কোহল মদ্য গুণ।

কোহদকদা (অর্থাৎ তীক্ষু মদাবিংশষ) ব'য়ু পিতে এবং কংকর ইন্দিকরঁ, ভেদক, তেজকর, এবং মুখাপ্রায়।

क्तान भना खन।

(জুগল মদ্য ডাক্ষা নিংস্ত) ইহা নলমূত্ররোধক, উষণ, পরিপাকের, কৃক্ষ এবং শিপাসা, কফ, শোফ্ষ।

वक्ग मना खन।

ছর্ষনক; প্রবাহিকা, আটোপ, আর্শ, ত বায়ুক্সন্য শোভের শান্তিকর, এবং সারক; শক্তিকরে বলিয়াইছা সংগ্রাহক ত বায়ুর প্রকোপকর, অগ্নিকর বিমৃত্ত জনক, বিশদ, অপ্পাদক এবং গুক্সাক।

(त्री फ़-मिश्रु खन

ইহা গুড়জাত হীক্ষ্ম মদ্য, -ক যায়-মধুর, পাচক ,এবং অয়িদীপ্তিকর।

শার্কর শীধূ গুণ।

ইহা শর্করা জাত তীকুমণ্ট, – মধ্র, ক্চিকর, অগ্নিদীপ্তিকর, বাতুর শোধনকর, বাত-নাশক, পরিপাকে মধুর, হৃদ্য এবং ইন্ডিয়ের উত্তেজক।

পরুরসজাত শীধু গুণ।

ইক্রস গুড়, চিনি প্রভৃতি কোন এছে।র রস শগ্রিতে চোয়াইয়া এই
মদ্য প্রস্তুত হয়। একশে প্রচলিত ইণ্রাজী ভাষাতে ইহাকে "রম, কিমা
শিপ্রিট বলিলে বলা ঘাইতে পারে। এই মদ্য, পুর্বোক্ত গুণ্মুক্ত, বল
এবং ক্রির, সার্ক, শোক্ষ অগ্নির দীপ্তিকর, হৃদ্য, ক্টিকর, শ্লেষা এবং
শুনুর হিতকর।

আকিক শীগু গুণ।

দেহকৃপকারী, শীতল-রুম্ফুল, শোথ এবং উনররোগাল, বর্ণকর, জারক, শুর এবং ত্রণের পক্ষে ি পিখোগী, বোউনোধ এবং অর্শরোগের শার্মিকর, পাঞ্ রোগাল, মলমূজের কঠিনত। সম্পাদক, লঘু ক্যাল, মধুর, পিজনাশক এবং শোণিত প্রসাদনকর।

कश्तिन-भीत् खन।

ইবা জামক লের ম্লা, - মংমুজরোধক, কবার এবং বায়ু প্রকোপকর।
সুরালব গুণ।

তাল থজুবাদির রস মাতিয়া উঠিলে এই সুরাস্ব কছে, – ইছা তীকু জনা, মৃত্রুজ্জিকর, কফ এবং ব য়ু-শান্তিকর, মুথপ্রিয়, স্থিনদ অর্থাৎ মন্তত অধিকক্ষণ ছায়ী এবং বায়ুনাশক।

मध्रामय खन ।

ইছা মগ্ল ছইতে প্রস্তুত হয়,— এই মদা,-র্যু, ছেনক, মেছ, কুট এবং বিষের শান্তিকর, ভিক্ত, ক্ষায়, শোক্ষা তীক্ষ্ আছ্ লখ্য বায়ুর্জিকর নতে।

रिभटतम जागन छन।

এই মদ্য ধাত্রীপুল্প, ওড এবং আমানি সহবোগে প্রস্তুত হইরা থাকে। ইহা তীকু, ক্ষার, মাদক, অর্শ, কফ ও গুল্মনাশক; কৃদি, মেদ এবং বায়ুর শান্তিকর ও গুৰুপাক।

श्रृषी के रेकू-त्रमामृत खन ।

এই মদ্য আজুর ও ইক্রস সহবোগে প্রস্তুত হয়, ইহাকে ভিনিগার বিষ্ণা ছিরক। করে। ইহাবল্যর, শিক্তম এবং বর্ণর।

मधुर्भुष्मकां उ. मधु खने।

ইং। মধু পুস্পকাত আর্থিৎ মউল পুস্প জাত ইং। বিদাহী, ভারিকর। বলকর ক'ল, কবার এবং বাঙপিতের প্রকোপকর।

অপর অপের হল, মূল এবং ক্লজাত আসবের গুণ, ভাছাদিগের রুসের ছাঠা নির্লিছ টটবে ।

स्डम मना खन।

নেত্রবোর্গদারী, শুক্পাক, বায়ু পিত এবং ককের প্রকোপকর, অনিষ্ঠ গান্ধবিশিষ্ঠ, বিরুল, অপ্রিন্ন এবং বিদাহী।

পুরাতন মদ্য গুণ।

স্থান্ধবিশিন্ট, অগ্নিকর, মুখপ্রের, ক্তিকর, র নিল্ল, মাড়ীপথের শোধন-কর ব্যু এবং বায়ু-পিতাল।—

व्यति छ।

শরিষ্ট শর্যাথ আরক দ্রব্য সহগোগে সংস্কৃত হত্যা জন্য বিশেষ গুণ-काরী। তজ্জনা বহুদোষত্র এবং ক্লুকল দোবের সমতাকারক, কফ-বাতত্ম, সারক, শিক্তবিরোধকারী, শুল, আধ্যান, উদ্যুরোগ, প্রীহা, জ্জুণি এবং আর্শের-বিশেষ হিতকর। পিশেল্যাদিগণের সহযোগ অরিষ্ট প্রস্তুত করা ছইলে, কফ্রোগের শান্তিকর হইয়া থাকে।

অরিট, আসব এবং শীরু ইহাদিংগর দ্রব্য, গুণ, ক্রিয়া এবং প্রস্তুত করিবার প্রণালী বিশেষরপে জানিরা ব্যবহার করা ব্যবছের জানিবে। বেহেতু ইহারা গাত হইলো, —বিদাহী, হুর্গন্ধযুক্ত, বিরস, ক্রমিকর এবং গুক্তপাক হয়। তক্দ হইলো, অপ্রিয় এবং তীক্ষ্ণ হয়। সন্দ পাতে ধাকিলে— উষ্ণাহয়।

বে মদ্য ব্যাপ শুপা শুষ্থিযুক্ত (ব্যাপার নির যে গ্রিমাণে প্রায়ণ্ড করিতে হয়, ভাহার কোন ক্রব্যের আগো ব্যাগ ব্যাপার ক্রিয়া কোন ক্রব্যের আভাব) পায়ু-সিভ, নির্মাণ ও পিছিল কিন্তা স্বাহা পাতে ব্যবশিষ্ঠ থাকে (ব্যাথাং পাতের ভলার কিঞ্চিৎ থাকে) এমত মদ্য,প্রিভাগা করিবে।

যে মদ্যের উপকরণ দ্রব্য অংপ এবং যাহা তকণ ও পিচ্ছিল সেই মদ্য গুৰুপাক, কফের প্রকোপকর এবং শাশু পরিপাক হয় না।

ষে মদ্যের উপক্ষণ রেব্য অধিক হয়, তাই। পিগুপ্রকোপকর, কুল্ল-ইঞ্জ, বিদাহী, অপ্রিয়, ফেনিল, ভূর্গদ্বযুক্ত, কুমিকর, বিরদ এবং গুক্সপাক হয়। পর্যাদিত হইলে বায়ুর প্রকোপকর বঁল, এবং এদর্বপ্রকার দেষে উৎপন্ন হইলা থাকে।

্থে মদ্য অধিককাশ থাকিয়া জাত রস হয়, তাহা বাত স্লেমার শান্তি-ক্রক্তিকর, দোবরহিণ; স্থান্তিবিশিক্ত রেবনীয় এবং মাদক। রস, এবং বার্ষা প্রভেদে মদা নানাকপ জানিতে হইটের। মদোর মীর্মা,— সুক্ষা, উষ্ণ তীক্ষা, এবং প্রফুলকর জ্ঞানা জঠর নলের সহিত হৃদ্য-দেশত ধ্মনীপথে প্রবেশ করতঃ উ.র্জ গমন পুর্বক মন এবং ই প্রিয়গণকে স্কাণিত করিয়া উন্মাদিত করিয়া।

স্থো প্রকৃতির লোক মদ্য পান করিলে অধিক বিলম্থে মত ছয়, বায়ু প্রকৃতির লোক মদ্য পান করিলে অনতিবিলম্থে মত হয় এবং পিত প্রকৃতির গোক মদ্য পান করিলে সত্মরই মত হইয়া উঠে।

মদাপানে মন্ত হইরা উঠিলে স্বাত্ত্রিক প্রাত্ত্তি লোকের শৌচ, দাক্ষিনা, হ্ব, সৌন্দ্র্যার ইচ্ছা এবং গীত, অধ্যান্ত্রন, সৌ্দ্রাগ্য এবং স্বত ক্রীড়াতে উৎসাহ জ্বো। রাজদিক প্রকৃতি লোকের স্থাপীলতা, সাহদ পুর্বক আত্মনাল, এবং কলছে মন ধাবিত হয়। ত মদিক প্রকৃতি লোকের অশোচ, নিদ্রা, মাংস্ব্যা ক্র্যাম্যাদিত গ্রমন ইচ্ছা এবং অসত বাক্য উৎপ্র হইরা থাকে।

শুক্ত বিজ্ঞান

কোন প্রকার কিয়া মূল লবন মিলিত তৈলে ফেলিরা শুদ্ধ করিবে তৎপর জাহা জালে কেলিরা রাখিলে তাহা মাতির। উঠে, সেই জালকে ছিবনা কিয় জিনিগার অধবা শুক্ত কছে।

ভক্ত-রক্তপিত্তকর, ছেদক, স্বারের বিকৃতিকর জারক, লৈখা, পাঞ্ । ক্রমিয়, এবং লগুলাক।

শুক্ত চোরাইরা যে রস উৎপ্র হয়, ভাহা তী ক্রাফ, সূত্রল, সৃদ, কফ নাশক, কটুপার এবং বিশেষ কচিকর।

ুপ্ডড়,রস অথবা মধু সহবোগো যে সমত শুকু জব্মে, সেই সকল শুকু নেত্রবোগদর। গুড়জাত অপেকা রসজাত শুক্ষ কঘুতর এবং রসজা অপেকা মধুজাত শুকু সমুত্র।

कुरबानक खन।

পয়ু গানত অলের আমানিকে তবোদক কছে ইহা অগ্নিকর আহি করেনা, পাও রোগ এবং ক্ষিরোঞ্জা।

मितीतक छन।

है इप्त मार्गाम विदल्य। हे हा छाइनी अवर मर्गद्रतार्गात मास्तिकत अवर ভেদক।

भानाभा खन।

আমনি অধিক দিন রাখিলে মা^ততয়া নির্মাণ জালের সম যে কাঁজি রতেম, ভাতাকে ধানালৈ কতে ; ইছা অগ্নিকর, দাহনাশক, মর্দ্রনে এবৎ পানে বাত্রেখা এবং শিপাসা নাশক এবং শ্যুপাক। ধান্যাস অভ্যস্ত গীক্ষ্ণ, ডজ্জন্য এক গণ্ডুব পান করিলে তৎক্ষণাৎ ককের শাস্তি হয় এবং (খের বিরস্তা, তুর্গন্ধ, মনেব কঠিনতা এবং প্রাত্তি নিবারিত হয়। (A) अ: अधिकत, जातक, ज्यानक धार जा श्वांशासित शास विश्वांती ামুদ্রতীরবাসী জনগণের প্রাকৃতিসিম সেব।।

গ্লুত বিজ্ঞান।

গৈ।, মহিষ, ছাগা, মেষ, অশ্ব ছতি গদিত এবং উটা; ইহাদিলার ্ত্র, – তীক্ষ্ণ, কটু, উষ্ণা, ভিজ্ঞা, পশ্চাৎ শ্বণ-রস বিশিষ্টা, লঘু, শোধনকর কক্ষ্ণ াত, কুমি, মদ, বিষ, গুলা, অর্শ, উদববোগ, কুষ্ঠ, শেক্ষ, অক্ চ এবং াত্রেরোগের শান্তিকর, হৃদ্য এবং অগ্নিদীপ্তিকর।

त्ता यूज खन।

कर्रे, जीक जिल व कारविभिन्ने स्ना राधुत खंटकाशकारी नटर मध्र গলির দীপ্তিকর, পবিত্র পিতল, বাততে আর শান্তিকর, খুল, গুলা, উদুর-রাগ, আনাহ আদি রোগে'এবং বিরেচর অভাপন আদি মুক্সাধ্য করিব্য विष्कृत वाक्टल्डा

মাহিষ্যুত্র গুণ।

আর্লাণ উদর্বে গ্রাণ, গুল, কুঠা, সেহ, আনাহ, আেফ, গুলা এবংরোগ াছিকর।

ছাগমূত্র প্রণ।

কাল এবং খাদারোগনাশক; শোষ, কামলা এবং পাও হরাগছারী; ক্র্ তিক্ত এবং দ্বং বায়ু প্রকোশকর।

নেষমূত্র গুণ।

কাস, প্লীহা, উদরবেরাগা, স্থাস, এবং শোষবেরাগহারী; মল সংগ্রাছৰ এবং শবন, ভিক্ত ও কটুরসমুক্ত এবং উঞ্চ ও বাতনাশক।

অশ্মূত্র গুণ।

আংগ্রিদ্ধিকর, কটু, ভীক্ষু এবং উষ্ণঃ বাভও চিভাবিকারনাশ্ক ; ক্ষা কুমি ও দক্তেরোগনাশক।

হ স্থিয়ত গুণ।

ভিক্ত এবং লবশ-রসমূক্ত, ভেদক, যাতনাশক, লিজের প্রকোপকর এর ভীক্ষা এই ছতিমূব ক্ষারজিয়া এবং ছুলি রোগো বিশেষ বাবস্থেয়।

गर्म च्यूज खुल।

ভীকু অগ্নিকর, কৃদি, ব.ভ e কক্ষ; হাবল, চিত্তবিকার এবা এছণীরোল হিত্তকারী।

করভযুত্র গুণ।

শোক, কুষ্ঠ উদরবোগ, ভূমাদ, বায়ুরোগ, অর্শ এবং ক্রমিরোগনাশক।
মান্ধ্রমূত্র গুণ।

্পুর্বেজি সমন্ত থাশুক্ত এবং বিষয়। দেশ এবং কাল ভেনে এই সর্বপ্রকার মূত্র রোগ বিশেষ ভবাবাহ

ष्यतामि विख्वान ।

मानिधाना खन।

লোহিত, কমল, কর্মন, পাণ্ড স্থান্ধ শকুনাস্থত, পৃষ্পাঞ্জ, পৃথবীক, ধুশালি, শীত-ভীক্ক, রোধুপুষ্পক, দীর্ঘশুক, কাঞ্চন, মহিষ-মন্তক, ছামন, কি এবং মহাদুষকাদি ; ইহাদিগকে শালিধান্য বলে।

শালিধানা,—মধুর, লীতনীর্যা, লঘুপাক, বলকর, শিশুনালক, জপা বায়ু বং কফ প্রকোপকর, স্মিন্ধ, মলের জপা হাকারী এবং মলরোধক। সর্বাকার লালিধানোর মধ্যে লোহিত ধানাই উৎকৃষ্ট। লোহিতলালি, বিনালক, শুক্র এবং মৃত্রেন্ধিকর, নেত্র এবং স্বরের পক্ষে হিতকারী, বর্ণ বলকর, হান্য এবং প্রান্তিহারক, প্রনের পক্ষে হিতলাধক, এবং জ্বর বিপের লাভিকর। জন্যান্য লালিধানা উত্তরোভার পপ শুন্বিশিষ্ঠ জানিবে।

यकिथाना खन ।

বৃত্তি, কলুক, মুকুন্দ, পীত, প্রমোদ কাকল, আসনপূজ্প, মহাষ্ঠি চুর্ব,
রব এবং কেদ রাদি; এই সকল ধান্যকে ভাষায় ষাট্ধানা বলে।

वाहेशना, - ब्रांस वर शास्त मधुर, याज-शिख्य, श्रांस शासिन।
तिनात ममुन, शृक्तिकत, करू वर शास्त्र त्रिक्षकत्रं। याहेशास्त्र मध्या
किशानाइश्रांशा । यकिशाना - शंकार हैयाव-त्रमधुक्त, मधु, प्रद्र, श्रिक्ष, ब्रांस-त्रमधुक, मधु, प्रद्र, श्रिक्ष, ब्रांस-त्रमधुक, प्रद्र, श्रिक्ष, ब्रांस-त्रमध्क, (प्रद्रत क्विं, अ वजत्रिक्षकात्री, विश क्विं मधुत, मध्यादी वरः।
विश्वास्त्र मध्या लाहिज-श्रांत्र मम् श्रुनकात्री। क्वांन। याहेशाना
ति शत्र श्रुत्वत क्वल्ला क्वांनित्त।

् बोशोधाना खन ।

ক্ষত্রীহী, শালাম্থ, জতুন্থ, নন্দীমুৰী, অবাক্ষ, ছবিত্ক, কুঁক্টাও,

. এই আশুধান্য, — कथाध मधुर, পাকে मधुर এবং শীত-বীর্ষ্য নতে, भूष्ण नेकद्रत्वागकाती, यखिषादनात সম अनकाती अवः महमत সংগ্রাহক। अहें जीक्षाना সকলের মধ্যে কৃষত্রী হীই সুক্ষোহক্ষ। ইহা পশ্চাৎ ক্ষায়

द्रमिति शिष्टे अवः मध्। अन्याना मर्ऋक्षकात बिद्योधाना उपत्राखत अण्या-द्यानात्री।

मश्च चिकां च भागे धाना खन।

বে সমস্ত শালিধানা দশ্ধভূমিতে উৎপন্ন হর, তাহারা শ্যুপাক, কবার, দশ্মু-অন্ন সংআহী, কৃষ্ণ ও লেখাহারক।

खनकाठ धाना खन।

স্পঞ্জাত আর্থাৎ উচ্চতুমিজাত ধান্য, - ঈষৎ ভিজচুক্ত, মধুর, বায়ুও আগ্নিগ্রহিদ্য, কফ এবং পিতায়, ক্যায় এবং পাশ্চাং কটু।

रेकमात्र धाना खन।

ষধুর, র্ষা, বলদর, পিতের শান্তিদর, ঈষং কষার, শংশ মূলদারী-গুকপাক, কম এবং শুক্তের বর্ষনকর।

রোপ্যাতিরোপ্যা ধান্য গুণ।

बश्भाक, अकास धनकाती, व्यवनाथीः (म.सप्त, वनकत्र व्यव प्ववक्त ।

व्यक्षु दिनिक मानिशाना छन।

যে সমস্ত শালিধান্যের অন্তর অক্করবিশিষ্ট, তাহার। কক্ষ, নলবর্জনকর, ডিক্তু, কযার পিতনাশক এবং শ্লেখাজনক।

क्-धाना विज्ञान।

ুকোরদূবক (অর্থাং ছোট মটর) শার্মা (অর্থাং শ্যামাতৃন) নীবার (অর্থাং ঝ্রাধানো যে ব্রক্ষ জন্ম ভাষার শস্য শান্তত্ব, তুরব (অর্থাং আঢ়কী অথবা স্বহর কলাই) কোফালক (অর্থাং কেনোধান্য) পিরজু (অর্থাং কেঁয়েপান্য) মধুলিকা, নান্দীমুখা কুকবিন্দ (অর্থাং কুল্ল কলাই) গবেধ্ক (অর্থাং গড়গড়ে বাক্ক, উদ্পানী মুকুন্দ ও কেন্য্যাদি > ইংলি কু-ধান্য কুংহ। এই সকল কু-ধান্য—উষ্ণ, ক্ষায়, মধুর, ক্ষ্ণ, ক্টুপাক, শ্লেমা নাশক, বিদ্যোধক এবং বায়ুশিভের প্রকোপকর।

ইহাদিনের মন্ত্র্য, কোজব, নীবার, শ্যামা এবং শাশুন্ —ইহারা ক্যায়, ধুর এবং শীত-পিশুন্ন;

প্রেম চারি প্রকার। যথা ; কৃষ্ণ, রক্ত, শীত এবং খেত প্রিম দু। হারা উত্তরোভর অধিক অধিকতর গুণকারী, কক্ষ, বফছ।

मधूनो,-मधूर এवर नौजन।

नामं, मूथी, स्विध।

কর্মক এবং মুকুন্দ, – অতিখন শোবনকারী।

বেণু যব, - কৃষ্ণ, উষ্ণ-বীষ্য, কটুপাক, মূত্রোধক, কফল, এবং বাডের প্রকোপকর।

মূদ্য আদির গুণ।

মৃদ্যা, বনমুদ্যা, কলার, মকুপা, মস্থ্য মলাল্যা, চণক, সভীন (অর্থাৎ মটর) দ্বিপুটক, হরেলু (আর্থাৎ কলাই বিলেষ) এবং আচুকী আদি; ইহাদিকে বৈদল কহে।

এই সর্বপ্রকার বৈদল, - কষায়, মধুর, শীতল কটুশাক, এবং বায়ুব প্রকোপকর, মল মুত্ররোধক এবং পিতক্ষেত্রানাশক।

এই সকল বৈদ্ধের মধ্যে মূলা অর্থাৎ মুগ অধিক বায়ু র্জিকর নহে এবং দ্বির হিতকারা।

বনমুদগগুণ।

🔪 অর্থাৎ বনমুগ্য, – মুগের সম গুণবিশিষ্ট্য

্যপূর গুণ।

মক্র, – পাকে মগুর এবং ভেলোবর্জনকর।
মকুষ্ঠ (কলাই বিশেষ) কুমিকর এবং অভ্যন্ত বায়ুর প্রকোপকর।
আঢ়কী, –কফপিতম এবং বায়ুর প্রকোপকর নছে।

हनक वर्षां (हाना, - वाश्ववर्धनकत्र, मी क्ष्य, मध्त्र, क्षाय, क्ष्म, कुक अवः प्रकृषिक महिष्कत्र अवः श्रक्षक्षाणः। হরেশু এবং সূতীন,- মলর্দ্ধিকর।

মুদা, বনমুদা এবং মন্ত্র ব্যন্তীত সকল বৈদ্দাই আধ্যানকর জানিব।

মায় অর্থাৎ মাধকলাই, — গুকলাক, মন্ত্র ভেদক, ব্রিগ্র-উঞ্চ-বীর্যা, র্ব্যা,
মধুর বায়ুর লান্তিকর, অধিক তৃত্তিকর, অন্যজ্ঞনক, বলকর এবং শুক্র ও কফ র্লিকর। মাষকলাই, — কষার রস্থুক্ত হইলে মলভেদক, মুক্র লিকের এবং কক্জনক হয় না এবং বিলাকে মধুর, গুলবিশিষ্ট অগ্রিনাশক, ভৃত্তিকর, অন্য

जाञ्च छक्षानि छन्।

काका धकन, - पांच धरश्रद्ध मनुन धननाती। बनामाय, - कक, क्यांत्र अनः प्रतिन शे।

क्नथानि खन।

কুলথ কলাই, — উষ্ণবীষ্টা, কৰার, রস, কটুপাক, কফ এবং বায়ুনাশক মলের সংগ্রাহক, শুক্তাশারী, গুলা, প্রীনস, আনাহ, মেদ, কোষ্ঠবদ্ধত হিকা এবং খাদ; এই সমন্ত রোগের পক্ষে ভিত্তকর। রক্তপিতজ্ঞনক এবং কৃষ্ণত নেত্রহোগ নাশক।

বনাকুলথকলাই, - পূর্ব্বোক্ত কুংখ কলাইছের সদৃশ গুণশালী, বিশেষ । উবং কবার, তিক্ত ও মধুর, সংগ্রাহক, পিক্তকর এবং উষ্ণ।

তিল, – পাকে মধুর, বলকর স্মিন্ধ, ত্রণের আলেপনে ছিতকর আমিকু মেধাজনক মূত্তের লাঘনকারী, শুনাবর্জনকারী, দন্ত এবং কেশের পক্তে হিত কর, বায়ুনাশক এবং গুৰুপাক/

ি সকলৈ প্রকার তিলের মধ্যে ক্ষণাভিল শ্রেষ্ঠ্য খেত ভিলমধ্যম, অন্যান ভিল নিহুক্ত জানিবে।

यवानि खन।

যার, নধার, নধুর হিম, কটুপাক, কফ পিতাল, অনুরোগো প্রা, পূর্বে । ধক এবং প্রান্ত নায় জন্য তুলের বৈদনকর, শারীরের ছিরতা, ত্

মেধা, স্বর, এবং বর্ণকব, শিচ্ছন, মেদ এবং তৃষ্ণা মাশক, বায়ুর অহনোম-কারী, কক্ষ এবং হক্ত শিক্তয়।

অভিয়ৰ অৰ্থাৎ অৰ্থবিশেষ্ট – সকল প্ৰকার যৰ টুইই ত কিধিং অংশগুৰু বিশিষ্ট।

গো ধুন, মধূর, বলকর, গুক, ১ছর্ষাকারী, ক্রিকর এবং শক্তের বর্ত্তনকারী, ব্রিশ্ব, শীতল, ব রুপিডল্ল, সন্ধানকর, শ্লেশকর এবং সারক।

निया वर्षा ए छं ही, - कक्क, कवायः वर विष, भाक, एक, द्वाया मृश्चित्र क्कावतो, विमाही करूलांक, मध्त, मलएएकक, उ वायु लिख वर्षनकर। भाग, क्रका, लीज এवर द्रळ्वर्ल एउटा निया वर धाकात ह्या हेहाता वर्षा-क्रम छ। क्षाया । देहाता वर्षा-क्रम छ। क्षाया । स्वाप्त वर्षा वर्षा का हेट्टा छ एल हि हरें साथाटक। हेहाता भाटक अवर द्रष्टम मध्य, वनकत्र भिख्य, आछ विमाही, कक्क, क्षायक्काल हा थाकिया लिखा लिखा क्या अवर वायु द्र्षा करता। मक्स धाकात विमाहित क्या अवर वायु द्र्षा करता। मक्स धाकात विमाहित क्या अवर वायु द्र्षा करता। मक्स धाकात विमाहित क्या विमाहित कर्या वर्षा कर्या कर्या करता।

भड़मी जर्थाए डिमो, - উक्ष, चाइ, वायुनामक, शि.खद वहनकत्र এरए क्रोगाक।

কুম্বস্ত অর্থাৎ কুম্মবীজ্ঞ, – রুদে এবং পাকে কটু, কককাশক, বিদাহী
স্ত্রাং অহিত সাধক।

সর্বপ অর্থাৎ সরিদা-রসে এবং পাকে কটু, এবং রক্ত গিতের প্রকোপকারী। খেত-সর্বপ, – পুরেষাক্ত সঙ্গের সম গুণ যুক্ত শিশেষ ৩ঃ তী, ফু, উষ্ণ,
ক্র এবং কলবায়ুর নাশক।

• य ध्वकात शानाहे रिक, जिम्यूक क्षेत्र, कृष्टिश्व नारहेल, बाधि शाता नके रहेला, ध्वनानो मट इ अर कृष्य का क्षित्व, किया नृजन रहेला अने विभिन्ने रहना।

तृजनभाना, निकटतां गकात्री. এक वरैमदत्व शतांजन भाना मम् आनित्त । भाना रिक्रण रहेरन अर्थार अङ्गत्त ना शांकिरन, विनाहो, श्रुक विश्वेष्ठो अवर पृक्ति अहिश्वतात्री रहेवा भारतः।

मारम विख्वार।

জনদর, সজন-দেশ বাসী, আমবাসী, মাংসভোজী, একশক এবং জাজ এই হয় প্রকার মাংস কথিত আছে। ইহারা উত্রোত্তর শ্রেষ্ঠ অর্থা জন্মন্তর অংগকা সন্ত্র-দেশবাসী শ্রেষ্ঠ, তাহাপেকা আ মবাসী শ্রেষ্ঠ। অপ ক্রাণর এই রূপ জানিবে। ইহারা ছই প্রকার। যথা জালল অর্থাং ব্য অবুং অন্থপ অর্থাৎ সজন-দেশবাসী।

काक्षण दर्श।

জাল্ল-বর্গ শুট্বিধ। যথা। জভ্যাহ, বিদির, প্রতুদ, গুহাশয়, প্রাসহ

যাহারা জভ্যাদার। জ্ঞান্স করে; ভাহাদিগাকে জভ্যাল কহে।

বাহার। প্রারীয় দ্রব্য খুঁটীয়া খায়, তাহাদিগকে বিক্তির কহে অর্থ।

যাহারা বলপুর্বক খাদ। স গ্রহ করে তাহাদিগকে প্রভুদ, গুহাদা এবং প্রসহ কহে, ইহারাও পক্ষা বিশেষ।

এই সকল জালন, দি, গার মধো জভ্যাল এবং বিক্লির এই ছুই উৎকৃঃ জানিবে।

कड्यां मांश्म विड्यांन।

এণ; হরিণ, ঋষ্য, কুর্জ, করাল, কুর্মাল, শর্ত, ঋদংগু । (অর্থ) কুকুরের সম দত বিশিষ্ট পশু) পুষত (অর্থাৎ ঋেতবিন্দু বিশিষ্ট হৃগ) অফ ক্ষু এবং মুগমাতৃকাদি; ইহা দিগকে জ্জ্রাল পশু বলা বায়। ইহারা ক্যায়, মধুর লবু, বাত ও পিরুষ, তীক্ষু, হৃদ্ধ এবং ব্ভিলোধনকর।

ध्वन मार्ग खन।

কৃষ্র, মধুর, হাদ রক্তশিক এবং ক্ফর, সংখাহী, ক্চিকর বুলন্তর এবং, জরমণ্ড

इतिनमाःम खन ॥

মধুর পাকে মধুর, দোৰল, অগ্নিয় জিকর, শীতল, মণ-মূলরোধক, তুণস্থি বিং ললুপাক্।

ক্ষাবর্গতেক এন, ভাষাবর্গ মৃগতেক ছরিন এবং ক্ষাং আধাবং ভাজাবর্ন নছে। বিহাকে আরক্ষ বলো।

মুগণাতৃক। প্রভূতির মাংশ গুণ।

শীভ এবং হক্তপিত্য, স্মিপাভ, ক্ষ্ম, শ্বাস, কাস, হিকা ও অক্চি

विकित मारग खन।

শাব, ভিজিনি, কপিঞ্জল, বজিনি, বর্তিদ, বর্তিদ, বর্তিদ, নপ্ত কা, বাসীক, চকোর, শবিক, ময়্র, জেকর, উপচক্র, কর্তি, সার্জ, প্রপত্তক, কুজিভিরি, কুব্ব হুক্ বং যব্দক আদি; ইহাদিগ্রকে বিভিন্ন জাতি বলে।

বিভিন্ন জ্ঞাতির মাংস, – লঘু, শীতল, মধুর, কধায় এবং দে:বছ /

नावनाश्म खन ।

সংশ্ব হী, পরিকর, ক্ষার-মগ্র । লযু এবং বিপাতক ক্টুরস ও সলিপাতে তপ্রদ

তিভিরিলাংস গুণ

নোর-তিভিরিমাংস গুণ।

ভিজিরি শাংসের তুল্য গুণবিশিক্ট, বিশেষত হিন্ধা, স্থাস এবং বীয়ু-

(b)

किशिक्षण मां म खन ।

কলিঞ্জন ম'ংস অর্থাৎ চাতকের মাংস, – রক্তলিত্তম, শীতন এবং লমুপাক কফল রোগে এবং বায়ুদদ হইলে ইহার মাংস ব্যবস্থেম!

क्वत्रभारम खन ।

বায়ু এবং পিশুল, তেজকর, বেধা, শার্ম এবং বলের বর্ত্তনকর। শুলু ও শ্বান্থ।

छेशहक मार्म खन ।

উপ্রক্ত আর্থাৎ চক্রবাক বিশেব প্রক্রির মাংস্, – ক্রকর মাসের সম-গুন্দালী এবং ব্যায়, আছু ও লবন্-রস্বিশিষ্ঠ, ত্বক ও কেশের র্ছিকর এবং ক্রকর।

मयुत्रगारम छन ।

ষ্মর, মেধা, ষ্মগ্ন দেশনৈ জ্ঞার এবং প্রবনে ক্রির দৃঢ়তাকারক, স্মিঞ্জ, উষ এবং ব'য়ুনাশক, র্ধ্য, স্মেদ, স্মর এবং বশর্ষ করে।

क्क हेमारम खन ।

ৰন কুক্তি শাংস, – রংহণ, বায়ুরোগ, ক্ষা, বনী এবং বিষদ-জ্বয় আমান-কুক্তি দংস সম গুণকর কেবল গুকশাক।

প্রভুষ মাংস বিজ্ঞান ।

কলোড, পারাবত, ভৃদরাজ, পরভৃজ, পরভৃতক, যঞ্চিক, কুলিল, গৃহকুলি
গোলোড়ক, ডিডিন, মানক, শতপত্তক, মাড়নিন্দক, ডেদাশী, ওক, সারিব বস্তুলী, গিরিশাল, আল, দুবক, অগৃহী, থঞ্জরীটক, হারীত এবং দাড় আদি পকীগনকে প্রভুদ জাতি বল্লে; ইহার ক্বার, মধুব, ক্ক ও ক্লাহারী।

প্রতুদমাংস গুণ

প্রতুদ জাতির পশ্চির মাংস, – বায়ুকর, পিত এবং শ্লেমানাপক, শীতল, ু মূলরোধক এবং অপপ তেজস্কর।

ভেদ।শीमाः म खन ।

नर्यादिनायकत्र अवर मालत (मायझनकः)

কানকপোত মাংস গুণ।

কানকপোত অর্থাৎ কাকের ছানার মাংস, – ক্যায়, স্থাত্ এবং লব্দর্স-বিশিষ্ক, গুৰুপাক।

পারাবত মাংস গুণ।

রক্তপিতম, কবায়, বিশদ, বিপাকে মধুব এবং গুৰুপাৰ।

कुलिक गारम खन ।

কুলিক অর্থাৎ ফিকার মাংস, – মধুর, স্লিগ্র, কফ্ ও শুক্রের বর্ধনকর। গৃহ কুলিক্ষের মাংস, – রক্তপিতন;শক এবং অহান্ত শুক্রের বিকর।

खश्रमाश्रम विकान।

निःह, नार्फ्न, हर, उद्गेक्, अर, होशी, मार्क्कात्र, भृगात, पृगु अदः असायक णामि, हेरामिशक श्रदानम श्री रतन।

एं হালয় পশুর মাংস গুণ।

মধুর, একপাক, স্মির্ধ, বলবুরু বায়ুনালক, উষ্ণবীর্ধান্পার এবং চ্ছু এইা রোগীগণের পাকে বিশেষ হিডকর !

श्रहन मार्न विख्वान।

काक, कहा कूत्रत, हाया जाम, जनवाजी जर्गाय गांजशकी, उल्लेक, हिली, भाग छ गृथ जामित क्षेत्रह वरण।

প্রহ্মমাং স তাণ।

এই প্রহস জন্দ সমন্ত সিংহ আদি জন্তগণের সম গুণবিশিষ্ঠ, রস, বীর্ষ্ট এবং বিপাকে, বিশেষভঃ শোষরোগে বিলেষ হিভকর।

পর্ম্গ বিজ্ঞান।

মুদা, মৃষিক, বৃক্ষারিক। বকুশা পৃতিযাস এবং বাসব আগুদি, ইছাদিগকে প্রিয়া বলে।

পর্ণমাণ্য खन ।

মধ্র, গুৰুপাক, র্ষা, এবং শোষরোগ্যের বিশেষ হিতকর। মশমুত্রের র্জিকর, কাস, অর্শ এবং কাস্থ। সমুক্তজাত প্রাণী অংশকা নদীজাত প্রাণীবিশেষ গুণবিশিক্ট।

'বিলেশয় বিজ্ঞান।

भाविध भज्ञक, (गांधां, भभं; त्रवनःभं, (गांशांक, त्यांमण, कर्त्वनमो, प्रगंध्यिषक, भज्ञगंत्र, मर्श, पृथिक, नकूल এवर महत्यज आमि; हेहामिगंदक विद्याभन्न कक वटल।

विष्त्रभन्न भारम खन !

ভেল এবং নৃত্তের সন্ধানকর, উষ্ণবীর্য্য, পরিপাকে স্বাহ্ন, বায়ুনাশক, শ্লেমা এবং পিত্তর্ত্তিকর ও কাস, স্বাস এবং ক্লপতানাশক।

मामार्ग खन ।

क्यात-मध्द्र, शिष्ठ এवः क्कृष्ट अञ्च्य भीत वीद्य नर्द्य, कक्कन, दाशुद जरूका शाक्तुरदा।

प्तवाखन-मर्भन।

(त्राधामार्म खन।

পরিপাকে মধুব, কষার-কটুকী, বায়ু এবং পিতম, রুহণ এবং ব**ল** জিক্র।

मलक्षारम एड

স্বাহ্ন, পিৰেয়, লঘু, জীড়ল এগং বিষ্ণ :

朝日 到日中日 ラ はり

ব যুরোগের হিতকব।

明明好有可提升 神明

আন। নাগের প্রকে হিতকারী।

मर्भारम खन्।

আশনাশকঃ বায়ুন।শা দে সহাবক, ক্রমি এবং দুবী-বিষ অধাৎ
ক্ষেত্র বিষ নিবাবক নেজাবালের ছিড্ছর, পাকে মধুব এবং মেধা ।
ক্ষিত্র বর্জনকর। সপ্নাংশন বংগ্র চক্রীকর অবাং ফলাধারী সপ্রের
ক্ষেত্র আধির্জিকর এবং প্রিপান্ত কটু, মুর্ব নেত্রের শিতকর এবং মলমূত্র ও
বায়ুর স্কানকর ।

গ্রাম্য বিজ্ঞান।

অখ্য অখ্তর, গো, ধর, খরু, উন্টু, বন্ধ, ওরজ, দের এবং প্রচ্ছকাদিকে আম্য বলে।

আ্বাস্য মাংস গুণ।

বায়ুনাশক, বর্জনকর, কফ এবং পির্ক্তর, রুসে এবং পাকে মধ্র, ক্রীঞ্জ ;

बद्धगारम खन ।

বস্তুমাৎদা অধাৎ ছাগমাংদ – অত্যন্ত লীবল এনহে, গুক্পাক, সিধ প্রিত এবং কলের সমতাকার্ক, ক্ষেরের্গ্রের এবং প্রীন্দ্রেশ্বের পাতি-কর।

खेत्रजमार्ग खन।

উর্জনাংস অর্থাৎ মেষমাংস্য-র্ংছন, পিত এবং শ্লেমান্তর এবং ও

(भम এवः शुष्ट्कमाःम खन।

[मर्गार्गार मत्र मम अनि मिके अनर तुरा।

शराबांश्म खन।

খাস, কাস, প্রতিশ্যার ও বিষম-জ্বয়, শম এবং জ্বিক জ্বির পা ভিতকর, পবিত্র এবং বায়ুনাশক।

একশফ মাংস।

গদ্ধত, অখ্ , অখ্ তর, গৌর-গেরিত এবং চমরী আদি অর্থাৎ যাহাদি। খুর বিধঞ্জিত নতে। ইহাদিগের মাৎস সদবন হইলে দেবনাৎসের সম্ভ বিশিষ্ট এবং অংশ দেখাকারী হয়।

জাল্পন-বর্গ আট প্রকার যে বলা হইরাছিল তাহা সমুদার বলা ছইল। বে সকল পশু কিয়া পান্দী লোকালরের কি জ্ঞলাশরের অধিক দূ খাকে: তাহাদিগের মাংস অপ্পালেমাকর এবং যে সকল পশু কিয়া পা লোকালরের কিয়া, জ্লাশয়ের অভ্যন্ত নিকটে থাকে, তাহাদিগের মা লেমাকর।

अकरन चाइलवर्ग चर्थाय मजनदम्यवामी मिट्यत्र कथा वना इहेटव।

আনুপৰৰ্গ বিজ্ঞান।

बान्भवर्ग भाँ छ श्रकात । यथा ; क्रक्तित । क्षान । भागा ।

क्न हात्रेर्ग विख्वान।

থাজ, গাবল, মহিব, কক, চমর, সৃমর, রোহিত, বরাহ খড়রী, গোব শালপ্ত, কোজ, নাজু নাজু অব্লগ্ধ-গাবল শালি; ইহাদিগাকে কুন পুত্ত কুকে!

क्न हत्रवर्शित मार्ग खन ।

वाश्च- शिख्य, त्र्षा, त्राम अवर शाटक अधूत, भी वन, वनकत्त, श्चिक अवर मृब करकत्र त्रक्षिकत् ।

शक-मार्ग खन।

বিকক্ষণ, লেখনকর, উষ্ণ-বীর্ষ্য পিতত্ত্ত্ত্ত্তিকর, আছি, শল এবং শ্বণ-রস-শিষ্ট ও শেলা ও বায়ু নিবারক।

গ্ৰয়মাংস গুণ ।

স্থিয়, মধুর, কাসম প্রিশাকে মধুর এবং জ্ঞীদংর্গের ব**ছন্কর।** মহিযমাংস গুণ।

ধিয়া, উষ্ণ এবং মধুর, র্বা, ভৃতিজনক, গুৰুপাক; নিজা, পু স্থু বল বং শুনার্দ্ধিকর ও মাংদের দৃঢ় গা উৎপাদক।

क्रक्रभःग खन।

মধুর পশ্চাৎ ক্যায়, বাছপিতন্ন, গুৰুপাক ও শুকের ব্লিকর।

ठमत्रगारम खन ।

ব্রিঞ্ধ, মধুর, কামস্থ, পরিশাকে মধুর এবং শায়ুশিতয়।

म्भत्रमार्ग खन।

মধুর পশ্চাৎ ক্ষায়,বায়ুপিতছ. গুৰুপাক এবং শুকো: বুজিকব।

वदार्भ खन।

স্ফোদকর, বর্ষনকর, রুষ্য, শীতল, ভৃষ্ঠিকর, গুরুপাক, গ্রিগ্ধ, আনু গুরুষু

थक्तीयांश्म खन ।

খড়নী গণারকে বলে। গুণারমাংস, – কফ, দ্ব করার, বু'য়ুন'শক, বিরুদ্ধণ, পিতুকর পবিত্র, সামুন্দর এবং একুবোধক।

त्ता-कर्मारम खन।

মধুর, স্নিন্ধ, মৃহ্, কফৰুর, পরিপাকে মধুর এবং রক্ত-পিড়ায়।

भ्रवकी विख्लान।

হংগা, সারস, ক্রেঞ্চ, চক্রবাক, কুরর, কাদখ, কাদখ, জীবঞ্জীবক, বক, বলাকা, প্রভারীক, প্রব, শবারীমুখ, নন্দামুখ কদ ৪. ভিৎক্রোশন কাচাক্ষ, মলিকাক্ষ, শুরুক্তিকা, প্রকরশারী, কাকে নাল কাখু, কুজুটিকা, মেষরাব এবং খেত চরণাদি; ইহাদিগকে প্লব কছে। ইহারা খলে ভ সিন্না কিখা লাকা-ইয়া বেড়ার।

अवदर्शित भारम छन।

রক্ষপিত্য, শীতল স্থি, র্যা, র্ষা, ব য়ুনাশক, মলমূ,তার বর্ষক এবং রসেও গাকে মধ্ব ৷

कि: भञ्चर्श विद्धान।

শুখা, শুখানখা, শুক্তি এবং শাস্থানি। ইহাদিগকে কোশস্কৰ্গ কছে।

, পापीवर्श विख्वान।

त्र्य, क्षीत, कर्कंडेक, क्षककर्कंडेक अदर निश्वमात्र आणि, हेश्मिशाक

শেষ্ডা এবং কুর্মা প্রভৃতির মাংস গুণ।

রুসে এবং পাকে মধুর, বায় নাশক; শীতল, স্মিন্ধকর, পিছের হিতকর, ভেজোর্ছিকর এবং শ্লেমার বর্ষ্যকর।

क्ष कर्करेकमारम खन्।

ঈষ্ত্ঞ, বায়ুনাশক এবং বলকর।

सङ्ग-कर्क्षेमारम खन।

नकात्रुद्ध मनम्बकत अवर वार्ष कालिक्य।

बद्मवर्शिवकान।

মংসা ছই রূপ। যথা; নদীজাত এবং সমুস্তজাত। স্পর কুত কূপ। গত এবং বাপীজাত। সরোবরজাত এবং তড়াগাদি-জাত মংসা জানিতে ইবে।

निष्वाण मद्म वर्जा

রে হিড, পাঠীন, (অর্থাৎ বোয়াল) পাটলা, রাজীব (অর্থ ৎ রুছৎ হিসা বিশেষ) (বর্মি অর্থাৎ বানি-মৎসা) গোমৎসা, রুফাদংসা বাগুঞ্জার, রুল ও সহত্র দংক্ট্ আদি; ইহাদিগকে নদীজাত মৎসা বলে।

ननीकांड भरग छन ।

মধুর, গুৰুপাক, এবং বায়ুন শেক; রক্ত গিতুকর, উষণ, র্ণা, আিও এবং শিশা ভেজাতার।

রোহিতমৎস গুণ।

ম ধূর, অর্থাৎ কৰায়, বায়ুনাশক, এবং অপ্পাশিকার ফ্লিকর। ইহারা শৃপ্পা দর্থাৎ নূতন যাদ এবং শৈবল অর্থাৎ শেওলা ভক্ষণ করে।

পাঠিন মৎস গুণ।

(অর্থাৎ বোরাল মৎসা রোত্মকর) র্ষা, এবং নিজাকর। ইহারা আল পিতকে দূষিত করে, এবং কুর্তু রোগ উৎপাদক। ইহাাদগকে মংগ্লাদী দানিবে।

बुद्रात यह म खना।

ब्रंड्न, ब्रवा, खना এवर (अञ्चकत ।

রায়মৎস গুণ।

মধুর, ধাতৃপোষক, শুক্ত এবং ধাতু রাজিকর।

সরল পুঁটিমংল গুণ।

विश्व अर्थ पूर्धदेशां ७ कर्नदेशा नागक।

ञेषर পाखुत मरम छन।

মধুর, স্থিত, ধারক এবং শুক্রবৃদ্ধিকর।

खित्रलय्दम खन।

স্বাহ্ন স্বিধ, শুক্র এবং কফ রতি হর।

मंक्नमध्म खन।

মধুব, ধারক, কক, এবং আম ও পিত্তের পক্ষে হিতকারী।

মাগুর মৎ গ গুণ।

ৰায় নাশক, স্নিশ্ব এবং গৃহ দোষয়।

विर्मिष्य खन।

ওকপাক, ধাতুপোষক, ক্যার রস বিশিষ্ট এবং পিডয়।

कनदेमदम खन।

ে স্বাদ্, স্বিষ, গুৰুপার্ক, বল এবং শুক্র রু सকর।

विक्राधारमाखन।

গুৰুপাকু, ধারক, মধুররস, বলগ্ধবক, দেধ এবং রক্তপিতের হিতকার ধাতুপোষক, কচিকর এবং কফ ও বায়ুর ব্রন্ধিকর।

वहिन मूरम्खन ।

भद्भ । त्रक्ष, दनकत्, कक এवर व श्रूमां भंक।

(5९ मरमखन।

, লঘুপ্টুচ, বা চরোগের হিতকর, এবং ক্টিকর।

ति इंग्रंट्स खन ।

मध्र, कल, कवास, भी अन अवः नघुशाक ।

भक्दमर्ग छन्।

বাতম, স্নিশ্ব এবং শুক্ত ও বল রুদ্ধিকর।

वाष्ट्रायदम खन ।

স্বাহ্ন, গুৰুপাৰ, স্মিঞ্চ, স্লেখার ছিকর এবং বায়ু ও কক নাশক।

धारमञ्जाभरम खन ।

मधूत, भाकूरशायक, भातक अवर कक ख व सू मानक।

(वरमगरम खन।

लशुश्रीक, कक, এवः वाश्रुहिक्तत ।

हिहिना (तत्नम् न खन ।

লঘুপাক, মধুর, আছে, পিতায় এবং বলকর।

मितितायरम खन।

মধুব, ধাবক অগ্নির পক্ষে হিতক্র এবং গুরুপাক।

म् जकमरम खन।

• मधुत्र, ध्वर वनकत्र।

म्लाक्त्यारम खन्।

শুক্পাৰ, ধাতু প্রিকর, মধুরী, বাডপিড্রের পক্ষে হিতকরী।

माफिकांबरन खन।

ক্ষয়, তিজ্বস, বাত পিজের হিতকর এবং দল্পাক।

किन्नद्र<u>म्</u>य छन्।

किक, भामकात्री, स्कनांभक अवर मध्नाक।

विश्व प्रम खन।

मध्रत, श्रिय, व धुनांभर, अधारत धवः धक्लार ।

थिनिगांगरम खन।

थात्रक, कवात्र, वाश्चव टकाण द्विकत्र।

श्रकाष्ट्रियस्म खन ।

अकीर्न तत, धक्षाक, এवर (श्रंत्रात्रिकत ।

शूँ हिंग छन ।

ভিক্ত, কট্, স্ব ছ. শুক্রারিকর, কক এবং বায়ুনাশক, স্লিয়া, মুধরে গ এব কুষ্ঠরোগের পক্ষেত্রহিতকর।

মৎদ কুর্ম এবং পক্ষী আদির অওগুণ।

व्याद्, व्यजीर्वत, वृक्ष्मिती, क विक्र वांत । श्रीवा त श्रीक दिउकत ।

मक्षेप्टम खन।

সমুদার মংসদত্ত, — গুৰুপাক, ধাতুপ্রিচির শুক্রর্মিকর, প্রাণিশাঃ বৈর্দ্ধনু ক্ষীণশুক্র এবং জ্বরাব্যক্তি ও নিত্য জী সদমকারী বাজিঃ ইহাদিটে পাক্ষে তৈল এবং লবন মিশ্রিত দ্ব মংস্য জ্বলন করা বিধের। সলব মংস্য পাত্রে বৈত্তন করিরা কর্মন দ্বারাণ লেপা দিরা ক্ষাণের দ্ব করিছে ভারাকে দ্বানংস করে। ভারাকিশ্রে দ্বান্ধন্থস ক্ষেন্থস করে। ভারাকিশ্রেস ক্ষেন্থস ক্ষেন্থস ক্ষানিবে।

मद्रावतः छ्रांग कां उभरम खन ।

श्चिकत्र, এবং मध्त त्रम विनिष्टे।

महाइक कांड मदम खन।

ज्ञक्त्र ।

यान जान जांच रहत अने।

विकास नरहा । अवस्था

স্মুদ্রভাত মংস বর্গ।

তিমি, তিমিজিল, কুলিল, পাকখংস, নিরাশক, মন্দিবারলক, মকর। গর্গরক, চন্দ্র, মহামীন, এবং রাজীবাদি, ইংগদিগকে সামুল্লক অধাৎ সমুজ-জাত্মংস কছে।

.ममूक्कां यश्म खन।

গুৰুপাক, স্মিন্ধ, মধুণ, দ্মপা পিত্তর্জিকর, উক্ত, বায়ুনালক, স্থান্ত ডেক্ষের, ও প্লেখা বর্জনকর। সমুদ্রেলাত মংস-স্থল মাংস ভক্ষণ করে। ভক্ষনা বিশেষ বল্লালী হয়।

ক্ষুদুকুপজাত ও কুপজাত ২৫ ।

व्सञ्चनाभक, हेराद्रो नामृधिक मरना जालाका कविक छन विभिन्ने।

বাপী-জাত মংগগুণ।

বিশ্ব, পরিপাকে স্বাহ্; ইহারা ক্ষুদ্রকূপ এবং কুগঞ্জাত-মংস অপেকা অধিক গুণ বিশিষ্ট।

निकां कार्म खन।

ইহারণ মুখ এবং নাজনাভিগ্ন বিচরণ করে, তজ্জনা ইহাদিণের মুখ্যুদশ গুফুপাক।

সরে বর এবং তড়াগজাত মংস কণে।

ইহাদিশের শিরোভাগ অর্থাৎ মুড়ো বিশেষ লঘু।

যে সকল মংস মৃতিকার পুদুরে বিচরণ করে, এবং বে সমস্ত মংস উৎসের পর্বাৎ নিমারের জল পার করিলা জীবিত থাকে, তাহাদিগের শিরোভাগের পুল্পভাগ ভিন্ন প্রথম সকল শরীরই অভ্যন্ত গুরুপাক।

मह्तावत क्रांण मरमगात्मत आधार्षां ममुमावरे, अक्शांक धरः जाराता । উत्तारमण मध्यानन कतिया जनम करता, यादारण जारात्मत शूर्व कर्व वर्षाया सर्व क्रांग मध्यान क्रांनित्त ।

ः जन्मसम्बद्धाने बनास (मन्त्रि)।

অধন মাংস বিজ্ঞান।

মাংস বর্গের মধ্যে শুদ্ধ অর্থাৎ শুটিকি, পুভিগন্ধ বিশিষ্ট অর্থাৎ শচাপীড়িত, বিবাক্ত সর্পদারাহত, বিবলিস্ত, অক্তাদি দারা বিদ্ধা জীল অর্থাৎ
পাকা, রুশ, বাল, এবং যাহার আগন আপন প্রাকৃতির বিক্লাচারী; এই
সকলের মধ্যে অভক্য অর্থাৎ ভক্ষন করিবেনা।

व्यथम मार्म खन।

ৈ শক্ষ মাংস,— জক্চিনর, প্রতিশ্যায়নর, এবং গুক্পান। বিষ অধবা বাাধি দারা হত এরপ জন্তর মাংস ভোজনে মৃত্যু হইরা থাকে। বাল অর্থাৎ ওকা জন্তব মাংসে ছর্দ্দি জ্বে, জীর্ন মাংসে,-কাস এবং শ্বাসরোগ উৎপন্ন হয়। প্রতিত জন্তর মাংসে ত্রিদোবের উন্নতি হয়। ক্রিন অর্থাৎ ক্রেদ্যুক্ত মাংসে,-বমা হইয়া বাকে, কুল জন্তর মাংসে,-বায়ু কুপিত হয়।

উख्य याश्म विकान।

চতুপাদ অর্থাৎ চারিপাবুক্ত অন্তদিগের মধ্যে স্ত্রীর অর্থাৎ মাদীর মাংস প্রেষ্ঠ। পশীদিগের মধ্যে প্রক্রবর অর্থাৎ মর্দার মাংস প্রেষ্ঠ। রহৎ আকার জন্তর মধ্যে কুলাকারদিগের মাংস প্রেষ্ঠ, কুল্র আকার জন্তরদিগের মধ্যে রহৎ আকারদিগের মাংস অ্রেষ্ঠ এবং এক জাতীর জন্ত দিগের মধ্যে মহাশরীর বিশিক্ত ক্ত অপেকা কুলেশরীর জন্ত প্রেষ্ঠ।

कछिपिरगत भारतीय थाजू जवर छाहनत मध्

রক্ত, মাংস, মেদ, অন্তি, মজ্জা এবং শুক্তা; এই প'তু সমূছের মধ্যে পর পার গুরুতর। রক্ত অপেকা মাংস, মাধ্য আপেকা মেদ, মেদ অপেকা অন্তি, অন্তি অপেকা মজ্জা এবং সর্বাপেকা শুক্ত গুরুতর হয়।

क्षेत्र, जना का नितः शाम, केंत्र, वितः शृष्ट्रीयमा, हर्ना, वाटमप्रक, महत्व धर्वे क्षेत्र । धरे अप्रदेश मध्या भितः जना, किंत्र, शृष्ट्र, धर्वे का जनका किंत्र । एवं प्रकार केंद्र प्रकार केंद्र प्रकार केंद्र केंद्र प्रकार केंद्र केंद्र

সমূহ প্রাণীরই শরীরের মধ্যে ম্বাছান গুক্ । পুক্ষ প্রাণীর পূর্কভাগ এবং জী প্রাণীর অধ্যাভাগ গুক্ । পক্ষী জাভির উক্ষ; এবং ক্রীবা গুক্। পক্ষী সদক উর্জে পক্ষ নিচক্ষণ করে, ভজ্জনা ভাছাদিগের মধ্যভাগ সমান। চল-ভৌজী পক্ষীদিগের মাংস অভ্যন্ত কক্ষ। মাংসাশী পক্ষীদিগের মাংস অভ্যন্ত বর্ত্তন-কর। মংস-ভোজী পক্ষীদিগের মাংস পিত রুজি কর। ধান্য-ভোজী পক্ষীদিগের মাংস বাহম।

জনচর, সজন-দেশ জাত, আমা, বাংস-ছোজী, একশক প্রসহ, বিল-ধাসী, জজ্বাল, প্রতুদ এবং বিষ্কির; এই সমূহ জন্ত পর পর লঘু এবং পর গর অস্প শ্লেমাকারী। অধাৎ জলচর অপেকা সঞ্জন-দেশ-জাত, সজন-দেশ-জাত অপেকা আমা, আমা অপেকা মাংস-ভোজী, বাংসভোজী অপেকা একশক একশক অপেকা প্রসহ, প্রসহ অংপকা বিশ্বাসী, বিলবাদী অপেকা ভজ্বাল, জজ্বান অপেকা প্রতুদ এবং প্রস্কা বিষ্কির লঘুতর জানিবে। ইহা ব,তীত জন্ত সমূহ পুর্বে পূর্বে লঘু এবং পূর্ব পূর্ব অপ্প শ্লেমাকারী হয়।

অ অ জাতির মধ্যে প্রমাণাধিক জন্তুদমূহ অপা বলকর এবং গুৰুপাক।
সমস্ত প্রাণীর সমস্ত দেহ হইতে যে সকল প্রাধানতম যক্ত প্রাদেশবন্তী সেই
সকল প্রাহণ করাই বিধেয়, প্রাধান অভাবে মধ্যম, তাহার অভাবে সদ্যোজাত অক্লিফ বাংস বাবস্থেয়।

मारम निष्क्र, न ममारा

মৎস্যাদি সংযুক্ত व्यञ्जन विक्तान।

পটোলপতা সংযুক্ত মৎসের ব ঞ্চন গুণ।

जीर्ज्यत এरर वाज्यहा नामक।

भारतीय मेर्युक मर्दात वाञ्चन छन।

কক এবং পিত্তমু, প্রিয়, ক্রিকর, এবঃ শ্রি, ভৃষণ, জ্বর, মের এবং বিদর্প রোগ নাশক।

ব র্ত্তাকু সংযুক্ত মৎসের ব্যঞ্জন গুণ।
• স্কুপথ্য কল এবং পিতন্ন অমিদ্ধি কচিদ্ধ এবং বাধনাশক।

जिशक्ति-वन्त्री

' তৈলের গছিত নিদ্ধ মৎস গুণ। প্রিয়, কচিকর, এবং শহুপাক

ম্বতের সহিত সিদ্ধ মৎস গুণ।

क्रमाक, धरः अधिमाणक

ক্লার গেড়ে। সংযুক্ত মহদের ব্যঞ্জন গুল। বাতলিত্ব, ধাতু পুঞ্জির ক্যায়, মধুন, ক্তিকর এবং গুক্লাক

मर्रमत घन्छे खन्।

भाजूभुकि रत्न, (माशाकद्र, এवर धक्रशाक।

काठए। मरशुक भरमात वाक्षन खन।

আছে, বাত্ম, ধারক; অগ্নিকর, কচিচর, শুগ্মু, রক্ত মাংস র্লিকর শ্বনাস্ট) বায়ুনাশক, ধাতপুঞ্জির, ক্ষার, ষধ্র, প্রিন্ন, পিত্মু এবং ্ক্চিকর।

भाक मध्यक भरमत्र राखन खन।

ভিক্ত, ক্রিকর, এবং বফ গিতুন। শব।

क्षिशेषा मः युक्त भरमा वाञ्चन छन ।

নামুশ জ্বাং শোধ এবং জ্বয় ; অগ্নি র্দ্ধিকর, জ বিজ্ব নাশক, লঘুপাব লেখা পাত্ এবং মেইনাশক।

क्याल मरयूक मर्टमंत्र वाख्न खन्।

ধারু রৃদ্ধিকর, হক্তপিত, কুন্ঠ, মেছ এবং কি মনাশক।

्रमामः यूक भएरमश व्यक्षत खन।

स्ब ह किन्द्र।

নিমা সংযুক্ত মংসের ব্যঞ্জন গুণ। কক্ষণিত নউকর।

মূল সংযুক্ত মৎসের ব্যক্তন গুণ। কৈ চিলান, আৰং কৈ ও বালনালক।

सम्बागरम्बाद्धाः महामान्यः ।

कण व वृद्धिमानक अवर श जू श्रास्त्रक

वर्षे गर्युक पर्रागत सक्षान छन्। धाष्ट्र भूकिनत, এर९ उक्तिक, क्षे त्यह, क्रिमि, अर्थः विग्रा

भाग जरश्रक मद्दरमंत्र वाक्षन छन्। भूग, उनद्रकका, बाक अचा जर कार्ष्ट्रक नामकः श्रिक, शाहक, जहरू धकता

তে ভূল সংযুক্ত মহুদের ব্যঞ্জন গুণ। উষ্ণ, বন্ধন এবং কলনাশ ; অগ্নিকর এবং ফ্রিকর।

- ইঞ্জাক সহিত মংসের ব্যঞ্জন গুণ। মধ্র, প্রির এবং অজীন জন্য বায়ুনাশক।

ইঞ্গকমূল সংযুক্ত মৎদের ব্যঞ্জ গ্রাণ। ক্রিকর।

• কালকাভ্নাপত সংযুক্ত মংলের ব্যঞ্জন গুণ।
ধারক ও শারি কিকর।

अञ्जी गरयुक्त मर्मत वाक्षव खर्ग। आमवाज्य।

সোন্দালিয়া পত্ত স বুঁক্ত মহসের বাঞ্জন গুৰ। আনবাত, কটুশুল, এবং কোষ্ঠবঁদ্ধ নালক। সংশ্রি ছিতকর।

नाउँ त्रित महिक विश्व का भरति त्रु वाक्षन छन । मध्र श्रेक्षाक, मुख्य किन्द्र भीक्षाक, कृष्टिकत अवर क्ल नाहक।

कांगिम नश्युक भर्टम वाक्षम छन।

थितः किन्द्रः क्येलिक अवर भूगनाथकः क्रिक्कितः अवर वाज्यनः

ं जिक्ति मध्यूक भरतका बाक्षम एन।

अभयक्ष, उत्रक्रम्णा, याज्यक्षा, अवर त्यममा नामकः किकत्र अवः व्यक्तित्रक्षिकत्र।

जाकना कि शेख गरे युक्त मरेटमते यो अने खन । ' जमनामक, जासित किन्द्र, किन्द्र अवर शास्त्र मधूत्।

তামরুল সংযুক্ত মৎদের ব্যঞ্জন গুণ!
কক, ৰাত এবং আমশুল নাশক; ধারক, অগ্নিকর, প্রিয়, কচিকর এব
বায়ুর অধোকারী।

আমানি সহিত মংসের ব্যঞ্জন গুণ। দীপক, কচিকর কফ-বায়ু নাশক, প্রিন্ন এবং স্বাহ।

क्ष विख्वान।

অম্বর্গ।

দাভিম, আমলক, বদর, (১)কোল, (২)কর্বক্সু(৩) সেবির (। নিখিডিকা কল (৫) কলিথ (৬) ম তুলুজ (৭) আত্র, আত্তক, (৮) ক মর্ক্স (৯) লিয়াল, লকুচ (১০) ভব্য (১১) পরাবভ (১২) বেত্রকল প্রাচী আমলক, ভিন্তিড়ী (১৬) নীপ, (১৪) কোলাত্র (১৯) অসিকানারল এ জন্মারাদি; ইহাদিগকে অসবর্গ বলে।

श्रमवर्ग कल खन

कित्रम विभिन्ने, धरुशांक, रखेशवीर्षा, शिख्यनक, वाश्चनांभक, कर खिरुक्रम करा

क विश्व । २ वस्तो कसा । ७ क्या वस्ता । ४ महावस्त । ४ नमीर ७ केटराज्यन । १ होराध्मन् । ७ मामजा । ३ कर्म हो। ३० मानीत १३३ हो ७२ श्रीक्षन । ३० (ज्या ३३ जनम । ४० किल्जा

माजिय कम खन।

পশ্চাৎ কৰার রস, অংশ পিতকর, অন্নিকর, ক্তিকর মুখপ্রির, তেভের । লবরোধ কর। দাড়িম হ্ইপ্রকার। বথা। মধুর এবং অল। মধুর ছইলে তিদোবের অর্থাৎ বায়ু-পিয়াও কফের শান্তিকর, এবং অল ছইলে কফ এবং ায়ুর শান্তিকর হয়।

आमनकी कन खन।

মধুর রদ বিশিষ্ট, অল, তিজ্ঞানার, কটু, সারক নেত্রের হিডকারী।
কল দোবের শান্তিকর এবং স্থা। আমলককলের অলভার দারা বায়ুর
নিতি হয়, মাধুর্য্য এবং শীতলভার দারা পিতের শান্তি হয় এবং কৃক্ত ও
যার তাবের দারা লেখার শান্তি হয়।

এই भामनकी कन मकन क(नत म(४) उँ e कुई।

আমলকী বীজনাগ্য গুণ। ক্ৰায় মত গজনক এবং আমলকীর গুণ বিশিষ্ট।

হরিভকী ফল গুণ।

हती जर्भी मश्रक्षिकात। त्यह भारम जीवश्री, क्यारहार्या (द्राहिनी, मंतन मि विकास, त्यारम श्रुवना, विरवहत्म अप्रवा, त्यादतार्या अख्या श्रवहरू हार्ष्य, किन्से वावहात कहा विरक्षता हती हती नवन मर्यूक हहेत्य वाश्रू है, मध् मर्रवार्या शिखन्हे, जमर छुडी मर्रयार्था क्या मस्च जबर श्रुक त्याय, मर्द्याकात्र वार्षि नस्च कर्त्र।

हतो जिने बिन्न मासन।

हक्त (इंक्कारी अवर व कि शिक्ष ।

रहिए। कन खुन !

ভেনী, তীক্ষু, এবং উষ্ণ ; বিৱস্, এবং জেদিনাশক, চক্সুর বিভকারী এবং

वर्ष्ण वीक्यमा खन्

िशिशामा, रुक्ति, कक अवर याञ्च नाणक, अवर यूनेशीकी

The same

विक्रमा खः।

ब्रिप् वन्न, अवर मन (खनक्र)।

कुल ध्वर (महाकूल कन खन!

কক এবং ব'রুনাপক; প্রুক্ত ছইলে, – বিশ্ব রু রুস বিশিষ্ট এবং পিওর হার। শুক্ত ছইলে, – বায়ুরোগ নফকরে এবং পুরাণ ছইলে, ভ্রয়াও এন মালক এবং অমি ও লযুপাক হয়।

कूनदीसमा खन।

मशूर तम विभिक्ते, शिख, इकि, धर एका नामक।

कर्कक्रु, क्लांग ध्वरः वनत कन।

অপক কর্মু, কোল, এবং বদর, - পিত ও কক বৃদ্ধিকর। এ স্ব প্রু, ছইলে, - অন্ত কগুব, সারক, এবং বায়ুপিতের শাত্তিকর হয়।

পুরাতন কুল তাণ।

তৃষ্যার শাভিকর, প্রম নাশক, অগ্নিকর এবং সমু।

मोतीत ७ वमत खन।

ব্দিষ্ণ, মধুর এবং বায়ু পিতের শান্তিকর।

সিমিতিক। কল গুণ।

व्यर्वार जमीकृत। क्याव, व्य इ, जस्वाही, वर भीवत।

कर्निथ कन खन।

শ্বাৎ করেতবেল। অপক কপিখ,—খরের শহিতকর, কলনা লাওাহী, এবং বায়ুর্বাধিকর। পক কলিখ,—বাতদেখার লাভিকর, ব শ্বারক, এবং বায়ুর্বাধিকর। পক কলিখ,—বাতদেখার লাভিকর, ব শ্বারক, এবং ক্ঠা লোধনকুর।

GARAGE FAR

मार्म्य-मग छन।

वर्षाद है। बार्टियू । नयुभाक, क्षेत्रज्ञिकि, व्याप्त व्याप्त

পাতিদেবু ফল গুণ।

সুগন্ধি, স্বাহ্, অঙ্গ, কচিকর ছর্দিনাশক এবং স্পিত্ত র।

(गाँजारनवु कम खन।

কিঞ্ছি মধুব, অভ্যন্ত পিতত্তকর, গুৰুপাক। প্ৰক্ষোড়ালেবু, – সন্মি ৰজ্ বায়ু এবং কে, প্ৰশ্ব নন্ধকর।

कमनारमञ् कुन खन ।

শীতল, শ্রেমার প্রকোপকর, মুখের বৈজ্ঞাত,হর, কচিকক, স্বাহ, ওক-

নারান্ধা লের গুণ!

श्चमाक, ज्थिकत, नेयर वश्व तम विभिन्ने, वनकत्र, धवर वाश्चमाणक।

काम कन।

ক্তিকাজ, – পিত এবং বায়ু র্জিকর। যে কাজের কেসর বিশিষ্টাই।
পিতকর, মুখপ্রির, বর্ণকর, ক্চিকর, রক্তমাৎস এবং বলর্জিকর, মধুর, পালার্ছ কবার, বায়ু নাশকঃ তেজার্হ কবর এবং গুক্পাক। প্রক্রাজ পিতের বিরোধী, শুক্তর্জিকর, তেজের ব্রিকর, মধুর, বলকর, ওক, এবং বিভিন্ন, শুক্তীন করিয়া আপ্রিজীন।

আমৃতিক ফল ত্রা।

विष्णु, - তৃথিজনক, रनक्त्र, क्षण्डताग এवर वालीन्कात्रक।

শানী আমড়া ফল গুণ। "

शांतक, याञ् भन अवः क्रिक्ता

कार्यत्राञ्च। खन ।

তীক্ষ্ণ, উষ্ণ, কটুপাক, অম এবং পিতকর।

লকু5 ফল গুণ।

(वर्षा भागात कन) बिट्नांच अवर विकेसकत्र ६ एकनामक।

कत्रमिक्न खन।

(অর্থাৎ কর্মচা) অল রসবিশিষ্ঠ ভ্ষণানিবারক, ক্চিকর ও পির্ক্তকর।

পিয়াল ফল গুণ।

वां यू शिख्य, इया, एक अवृर भी जन।

ু ভবাফল গুণ।

্ (অর্থাৎ চালতা) মুগপ্রির, আহ্, করার ও অল রসবিশিপ্ত এবং মুখ-ইশাধক, পিতলেখানাশক, মল সংগ্রাহকর, গুক, বিফল্পী ও শীতল।

পারাবৎ ফল তুর।

(वर्षार शांत कन) मधूत्र, किन्द्र, अजाक्षि, धतर व श्रू नामक ।

नीय ७ थाहीन आमनक कन खन्।

विक्रित जावनक प्रशास्त्र आका जामनक) हेराह्मी जनविद्याग्र नामक।

আমাতবিড়ী কৃষ গুণ।

विषय राहा (रुप्त) नाम् नामुक, शिक बन्द हाचानाती।

পক ডিন্তিড়ী কল তুন 🎏

मन मरखाद्रक छक, नामकत, कहिक्क, धरर क्य । नाम प्रमानाती।

खरा खनमान्सि ।

(कार्याय फन खन।

(जर्बार रेक्डण कन) जिल्लि जैं जिल्ला कि किर कम कार्विनिके।

व्यक्तिका कन खन ।

(অর্থাং ভেঁডুল বিশেষ) পক ছইলে, + পৃথেবাক্ত গুণবিশিষ্ট এবং ভেদক।

नात्रक कल खन।

মধুর রস বিশিষ্ঠ অসরস, হাদ্য, বিশদ, এবং অফ্চি নাশক, বাতনাশক, হক্তির অর্থাৎ আও জীর্ণ হয় না এবং গুরুপাক।

काशीत कन खन।

ভূকী, শূল, কফ উৎক্লেণ, ছর্দ্দি এবং স্থাসন্ন, বাঙলোগ এবং বিবন্ধন্ধ ভ্ৰুপাক এবং পিতুকর।

এরাবত ফল গুণ।

(जर्था ६ त्न त्रिया) जल इम विभिन्ने, पास्त अप का का का विश्व कि विश्व का का

का । इक कन वर्ता

ক্ষীরব্ধ-কল, - জাম্বর, রাজদন, ভোদন, ভিন্তুক বকুল, ধ্রন, অশ্বস্তক আর্থকর্ল, কলগু পর্যক, গাজেক্ষী প্রেরবজী বিলু এবং বিদ্যা আদি কল ইহারা - শীভল কফ এবং পিতার, মল সংগ্রাহক কক্ষ এবং ক্যার

की तहक क्ष छन।

की बहुक, - जर्थार वह यक्ष्यंत्र, जयंथ, जिहीय এवर शाक्ष्यं, अरे भावित हर्कांक केंद्र। देशशिरधंत्र कत, - श्रक, विश्वेषो, जीवत, क्यांत्र, भूमतम विभिन्ने अवर मध्य क वायत्रिकत्र नर्राः

CHICALLAND

WHITE MALE

व्यक्ति व शुद्धक्तिका वन माध्याहका वर्ष कर व निका ।

त्राकानन कव छन।

चित्रं, चाइ, कराम बंदर कक्लाक ।

(जानन कन खन।

करोत्र, मधुत, कक এरर कर राष्ट्रभाष्टिकतः आत, उक् , मधु मध्यारी विकार शिक्त अरर अधित्विकत।

े िम्मू के कन खुने।

অপ্ৰক ভিচ্ছক, – কৰাৰ সংগ্ৰাহী, বায়ুব্ৰছিকৰ এবং বিপাকে গ্ৰু। প্ৰক ভিত্ৰুক, – ৰপুৰ এবং কফ ও পিত্ৰ।

रक्न कन खन।

মধুর, কনার, বিশ্ব। সংগ্রাছী, দত্তের দৃঢ়ভাকারক এবং প্রসমকর।

. धञ्चन कन खन । **

্কৰ'য়, ছিৰ, স্থাড় এৰং ব'য়ু ও ককল 🖯

गारकक्रकी ७ अथ्यक कम ७०।

गारिकको वर्षा (गात्रक हाउँ विद्यह) এवर व्यवस्य वर्षा व्यवहार

क्क कन खन

(पार्थाद कोक छुप्त) विषेखी, यस्त, स्थित छ तकत, श्रक, व्यक्तित छह।

श्ववंक कल छन्।

चर्याः राज्यांकरः चेत्रकः राज्यांकरः –वांचरः दरः शिवपुत्रः । राज्यान्तः । सन्दर्भकः च्या वर्षः दावनिष्यः ।

शुक्ततवडी कन खन।

(অর্থাৎ পশ্মবীর) স্বাহ্ন, বিশ্বস্তী, বলকর, কক্ষর, গুক্র, পরিপাকে গুর, শীতল, এবং রক্তশিত পরিকারক।

· विन्कन खुन।

অর্থাৎ বেল, অপক বেল, — ৰক্ষ এবং বায়ু নিবারক, ত ক্ষু, ব্রিঞ্জ এছী, দীপন, কটু ভিক্ত, ক্যায় এবং উষ্ণ। প্রক বেল, — প্রশাৎ মধুর ন বিশিষ্ট, গুৰুপাক বিদাহী, বিষ্টম্ভকর এবং দোষকারী।

অশ্বর্ণ এবং বিশ্বীকল গুণ।

ন্তন্ত্ৰারক, কফ এবং পিত্তন্ন ; তৃষ্ণা, দাহ, জুর, রক্তপিত, কাস স্থাস বংক্ষান।

তাল আদি ফল বর্গ।

ভাল, নারিকেল, পানস, এবং মেচি।দি ফল সমূহ পরিপাকে এবং রসো ধুর-রসবিশিষ্ট; বাত পিশুন্ন, বলপ্রদ, স্মিগ্ধকর এবং হিমগুণবিশিষ্ট।

जाम कल।

স্বাহরস, গুরুপাক, এবং পিজ্য। তালবীজ্ঞ,—স্পাধি তালের স্থ[া]টী ; রিপাকে নধ্র, মূত্রক্ষিকর, এবণ বায়ু ও পিজ্য।

जान जां हित भागा खन।

মধুর শীত্র, গুক্পাক এবং পিত্র ।

ें अनक त राज्य ।

श्वक्षाक, कर्क बंदर र्खमिनाणक कहित्त्व, भी उन, श्रेष्ठीय द्वीसलनक बदर यु दुष्कित्व।

' নারিকেল ফল গুণ!

ুগুৰুপাক, স্থিয়, পিত্ত স্বাহ**্টশীক্তন, বল এবং মাংস**্থিকির, মুখ্প্রিস্থ হণ এবং বস্তিশোধন কর।

मात्रिक्न मना खना

শুক্শাক; বিষ, পিত্র, আছু, বল এবং মাংস কার্ক, মনোহর, ধাতৃ-পোষক; এবং শুক্ষিকারক; বিশেষভঃ কোমল নারিকেলশ্যা, – পিগুলুর মুক্দোব, ভৃষ্ণা হ'র্দ্ধ, দাহ এবং রক্তশিত রোগন।

প্ৰস ফল গুণ।

আৰ্থাৎ কাঁটাল। ক্যার রস বিশিষ্ট, স্ব ভ্রুস, স্মিন্ধ এবং গুৰুপাক।
মৌচ ফল গুৰুণ।

শর্বাৎ করনী। স্বাহরস বিশিষ্ট, করায়, বিশের শীতন নছে, রক্তপিতয়, ব্রুষ, ক্রিকর ক্লেখ্যজনক এবং গুরুপাক।

स्वाका कान्मर्था () मधुक श्रूष्ण ७ श्रुक्त्रानि कन खन ।

রক্ত পিত্র, গুৰু এবং মধুব।

ज्ञाका कन खन।

সারক, স্বরের হিডকর, মধুব, স্মিদ্ধ, শীতল, রক্ত পিডে, জ্বর, শ্বাস, তৃষ্ণ। দাহ এবং ক্যা রোগম।

কাশাত্রা ফল গুণ।

্ ইংদ্যঃ মূত্রবেশ্বের শান্তিকর, রক্তপিত এবং ব য়ু নাশক, কেশের হিডকর, মুসায়ন এবং মেধাজনক।

मधुक शुष्त्र (धवः क्व खन।

মধ্কপূজা, – পুঞ্জির, মুখের অপ্রিয় এবং গুক্। ইহার ফল, – ব যু এরু পিছর।

বাতামানি ফলবর্ঘ ন

্রাতাম, (২) আক্রোড় (৩) রুভিযুক, নিচল (৪) পিচু (৫) নিকোচৰ (৬) এবং উক্ষাণ আদি, – পিডপ্লেখা নাশক, বিষ, অধচ উক্চ, গুৰুপাৰ রুংহন, ৰায়ু ৰাশক, বৰ্কারক ও মধুর রসবিশিপ্ট।

्र (ः८) गञ्चात्रो ।

३ वाज्य । ७ जारकादिकन् । हण्डनदकन ६ महन् कन । • ७ जारकार्ककन् ।

नवनी-कम छन ।

(वर्षार' लावाजिकत) क्याव, क्क बदर शिषत्र किकर जिल्हात्र विभिन्ने, किक्बर, पूर्वश्रित, श्राक्षी, बदर विभन्न।

वमौत्र कन खन।

অর্থাৎ গলপেপার্নী করা,—পাকে শীতদ, ত্রণকর, মদুমুত্র রোধক, দিউন্তা, হর্জর, কক, শীতদ, বায়ুর প্রকোশকর, বিপাকে মধুর এবং রক্তপিত্র।

हेककन खन।

(অর্থাৎ নীলকপিথ কল) শীতল, ক্যায়, মধ্র, বায়ুর প্রকোপকর এবং গুক্পাক।

रेजू नी कन छन।

ক্রিয় অথচ উষ্ঠ, তিজ্ঞ অথচ মধুর, এবং বাতলেখা নাশক।

मयोकन खन।

গুৰুপাক, স্বাহ, কক উঞ্চ, এবং কেশর।

শ্লেয়াতক ফল তাণ।

(অর্থাৎ বহুবার ফল) গুৰুপাক, কফকারী, বধুর এবং **দীতন।** করীর আদি ফল গুণ।

করীর (১) অক্ষ এবং শীলু। ইহারা ছুনশুনা ফল। – স্বাহ্, ভিক্ত কটু এবং উষ্ণ ক্ষ এবং বায়ুনাশক।

• भौलुकन खन।

ভিক্ত, পিতাকর সারক, বিপাকে কটু, ভोকু, উঞ্চ, ভৈগাক্ত, এবং कक ত ব য়ু শাভিকর।

তুবরক ফল তাল ।

ত্রণকর, কবার এবং পরিপাতে ক্টু,এবং উষ্ণ; কুমি, জুর, জানাই, মেছ এবং উদাবর্ভরোগ নাশক।

कत्राक्ष मिकन एन।

কর্জ কিংশুক ও অরিট ফর্ন, - কুঠ, গুরা, উদরী, এবং অর্ণরোগরী; পরি; । কালে, কটু এবং কুমিও প্রমেহ রোঁ গের পাঞ্চিকর।

३ (के छि। ।

বিড়ঙ্গকল গুণ।

কক। উফ, পরিপাকে কটু, লঘু, যায়ু এবং কফ্ছ, ভিজ্ঞ বিষের পক্ষে অপ্পহিতকারী এবং ক্রমিনাশক।

अलग्ना कन खन।

(অর্থাৎ চল্পানেশ জাত পঞ্চশিরা হরীতকী) ত্রণের ছিত্তর, উঞ্চ, সারক: ঘেষ্য, দোষ্ম, শোষ্চ ও কুষ্ঠম, ক্ষায়, অগ্নিকর, অল, এবং নেত্রের ভিত্তকর।

व्यक्तन खन।

অর্থাৎ বয়ড়া। ভেদকর, লঘু, কক্ষ, উষ্ণ অরের ব্যাঘাতকর, ক্রিনি, মাশক, নেত্রের হিতকর, পরিপাকে আত্ন, ক্যায়, এবং ক্ষ ও পিত্র ।

शृतकल छन ।

আর্থাৎ স্থারি। কক এবং পিশুল্ল, কক্ষ, মুখের ক্লেদ এবং মল নাশক। ক্ষাররণ বিশিষ্ঠ, মধুর এবং অংশ সারক।

জ্ঞাতিকোশ ফল গুণ।

জ্যাভিকোশ (১) কপুর, জ্ঞাভিফল, (২) কটুক, (৩) কাকোলক (৪) এবং লবদ। এই সকল কল, ভিক্ত, কটু, ককম, লঘু, তৃষ্ণানাশক এবং মুখের ত্রেদ এবং মুগন্ধ নাশকর।

कर्म् इ खन ।

ভিক্তরস, বিশিষ্ঠ, স্থর্ডি, শীতল, এবং শঘুপাক। পিপাসা এবং মুখ-শোহে মুখের বিরস্তা জমিবো বিশেষ হিত্তর্ব।

লতা কন্ত রিকা গুণ।

कर्नू (तत्र जून) श्रेन मण्डाम भीजन अवेर वित्र (भाषन कत्र।

"মধুর, হ্রব্যা ব'য়ু এবং পিউন্ন[†]ি

বিভাতকী মজ্জা গুণ।

मख्डाद्यनके, क्क अदः ताश्चनाणक।

(कान उड़्डा खन।

क्याय, मधूत्र, शिलुष कृष्टि এवः वायुनामक।

कामनकी मख्या खन।

(कानक्का मम श्रेन मण्यात्र।

বীজপুরকাদির মজ্জা গুণ।

বীঅপুরক (১) শম্পাক (২) এবং কোশাত্র মজ্জা, –পরিপাকে স্বাতৃ, মগ্লিকর, বদকর, স্থিন্ধ এবং পিত ও বায়ুনাশক।

যে ব্রুষ ফলের যেরপে বীর্ষ্য বলা হইরাছে, সেই সেই কলের মজ্জারও দহরপ বীর্ষ্য জ্ঞানতে হইবে।

যে সমস্ত ফলের কথা লিখিত ছইট্রাছে, সেই সকল ফল পরিপক জাব-গতেই বিশেষ গুণকারী হয়, কেবল বিল্ল ফল অপরিপক সময়ে বিশেষ গুণ বিশিক্ট ছইয়া থাকে।

তে সমস্ত কল বাাধিবিশিষ্ঠ, অথবা কীটক্ষত, কিয়া অত্যস্ত পরিপ্রক ক অসমরে জ্বান্তে, অথবা বিপরীত ঋতুতে উৎপ্র হয়,সে সমৃত্ত ফল ব্যব্-ার যোগা নহে।

कनरंश मगाश्च।

भाक वर्श।

.श्रूष्णकनामि।

পুষ্পাকল (৩) অলবি (৪) এবং কালিক্সকাদি শাক বর্গ জানিবে। হারা পিজনাশকঃশ্রিষ্ট এবং অপপ কফের বর্জনকর এ সমস্ত জনক এবং রস পাহন, স্বাহ।

পুষ্পফ গ গুণ ।

অর্থাং সাদ। কুআ্ও, – বাল হইলে, (অর্থাৎ কচি ইইলে) পিড। মধ্য অবস্থার, – কফকর, এবং পাক হইলে – লঘু, উষ্ণ, সন্ধার, অগ্রিকর বা শোধনকর, সকল প্রকার দোষত্ব, হৃদ্য এবং মানসীক বিকারে পর্য।

कालिङ खन।

मुक्ति अवः एटकात अध्यकाती, कक अवर वाटखत वर्धनकाती।

অলাবু ফগ গুণ।

(पर्यार नाउ) मन (छनक, कक्क, श्रक्नाक, व पडासु भीउन।

ভিক্ত অলাবু গুণ।

(वर्षार डिडमाडे, क्रमा)।

वामनी जलातु छन।

(অধাৎ ৰাউনে লাউ) নাত পিওয়।

ত্রপুস আদি।

ত্রপুস (১) একাক (২) বকাক (৩) ও দীর্গরন্ত (৪) আদি ট ছারা,-গুক্পাক, বিফ্টা, দীংল, স্বাহ্,ক্ফকর, মন্মুব্রজনক, সক্ষার এ ষপুত্র

जिर्म कन खन।

(অর্থাৎ শশা) কিচি এবং নীলবর্ ছইলে পিত্র, এবং পক ছই। কফকর এবং পাত্রোগ জনক, অল, ও ব্ভিলেখার শান্তিকর।

একারু ও করারু।

আর্থাৎ ক কুড় ও লালাকুমড়। (লালকুমড়াকে বিলিভি কুমড়া বলে) প ছইলে, – কফবাতের বর্জনকর, সক্ষর, মধুর, আয়িকর আর্থাৎ আধিক পিট কর নহে।

नीर्वहरू।

' (অর্থাৎ তর্মুক্স)'সক্ষার, ম ধ্ব, কফের শান্তিক্তর ভেদক', লয়ু, আ্যির অদা এবং অনাহ ও অর্তিনা রোগের হিডকর গ্

পিপ্পन्यानि वर्ग खन।

শিপ্পলী, মরিচ, শৃন্ধবের, (১) আন্তেক, (২) হিন্দ্, জীরক, কপ্তর্ম ০) জন্মীর, প্রমুধ, প্রসা, অপ্তিক, ভূতুল, প্রগন্ধ, কাসমর্জ, (৪) কালমান ৫) কূ.চর ২৬) ক্ষক (৭) ধরপুষ্প (৮) শিশু (১) মর্ঘুলিপ্ত (১০) গাণজ্জক (১১) সর্ঘপ, রাজিকা (১২) কুলাহল (১০) বেনু, গণীর, চলপর্লিকা (১৪) বর্ষাভূ (১৫) চিত্রক, মূলক, শোভিকা লশুন, পালাকু বিং কলার আদি। ইতারা – কটু, উষ্ণু, কচিকর, বাত্তের র শান্তিকর, বাং বিবিধরণ পাতের সংস্থারে বাবহুত হটুরা বাতেন।

পিপ্লী এবং আদ্রুক গুণ।

শেষাজ্ঞনক, গুৰুপাক, স্বাহ্ন এবং দীতল। শুক্ত ছইলে, — কফ এবং । য়ুর দান্তিকর, রুষা, অধান পিতজ্ঞনক নহে। পাক্য (অর্থাং দ্বণ বিলেষ) । হ সংযোগো, — স্বাহ্ন, গুৰুপাক, এবং শ্লেষাজাবী। শুক্ত ছইলে, কটু, টুফু, শুরুষ্য এবং বফ্ষ বাতর।

শেত মরিচ গুণ।

অধিক উষ্ণবীর্ষ্য অধিক শীতবীর্ষা নছে, সকল কণ মরিচ অপেকা।
শেষ গুণকারী, এবং নেত্রের হিত্তসারী।

लुर्छ रे खन ।

भक्क वाज्ञ, करू, शाटक मधुर, ह्रवा, जिक्क, कठिकद्र, ट्याह विशिष्ठे, नयू अवर शिक्षता

' দাদ্রক গুণু।

কফ বাতম, স্বরের হিডকর, বিবন্ধ, অ্যানাহ এবং শুলের শাস্তিকর ; বটু, ক্ষ কচিকর, ছন্য এবং রখ্য।

, 5 ७% है। २ - मा। • धता है कानक म्हा । ६ क्ष्रिकोत्तक । १ ज्ञानिका ।

श्चिम् खन ।

লঘু, উষ্ণ, পাচক, অগ্নিকর, কফ এবং বাতম কটু, স্লিম সারক, তীক্ষু, সূল, অজীর্ণ এবং কোঠের কঠিন গুনাশক।

' জীরক এবং ক্লফজীরক গুণ। তীক্ষ্ণ উষ্ণ, কটুপাক ক্লচিকর পিজ এবং শগ্নি বর্জনকর।

কারবী এবং উপরুঞ্জি গুণ।

(অর্থাৎ ভেজ্পত্র এবং ছোট এলাইচ) জ্ঞারক এবং কৃষ্ণজীরকের সম গুণকর। ইহারা ব, জনাদি পাহারীয় দ্রব্য প্রস্তুত কালে ব্যবহৃত হয়।

আদা এবং কুন্তম্বরী।

ইহারা একত্রিক হইলে, — আছে সোগান্ধ বিশিষ্ট, ও হাদ্য। শুক্ষ ছইলে পাকে মধুর, স্মিন্ধ, ভূক। এবং দাহের শান্তিকর, সকল দেয়ে নাশক, বটু, অপ্পতিক্তা, এবং নাড়ী প্রথের শোধন কর।

काश्रीत खना

় পাচক, তীক্ষ্ণ, কমি, বাভ, এবং দ্রেত্মার শান্তি কর। স্থান্ধি অগ্নিকর, ফাচিকর, এবং মুখের বৈশদ্যকারী অর্থাৎ নির্মাণত্যকারী।

म्त्रम एवं।

কক, বায়ু, বিৰ, খাদ, কাদ এবং ছর্গস্কুনাশক, গিভকর, এবং পাখু পূল নাশক।

,मुम्थ खन।

'পুর্বেজি হরদের তুশ্য গুনকারী, শধিকন্ত বিশেষ শান্তিকর।

मृत्रम, अर्ड्डाः, धवः पूछ्न।

्र नारक कर्टू, मध्र तमध्रक, कक बाग्नुद माखिकत्र, शाहक अदर कर्श्वताथन क्रा

काममूक्ति खुन।

শের্গাই কালুকাহুদে) ইহাও পুরেলাক্ত হরদাদির তুলা গুণকারী, অধি-

ध्वराखन-मर्जन।

শিতা গুণ।

অর্থাৎ সজিনা। কটু, দক্ষার, মধুর, ছিল্ল এবং পিতেকর।

মদুশিরা ত্রণ।

क्षर्य र क्रमिक्ता । वार्ट , विक्र, स्थाकनाथक, यांत्र र करूँ, रिक्र, ही। बन्धुब (वायक, रूक, धरा शैटक क्र वैरिंगोली :

अम्बला क करा !

ক্ষান্ত স্বিদ্যোজন জিলেন্সের বছনত্ব। িএক এলে (চিত্রান্ত্রি) কেল।

श्री कि हो व्या त्या लाग क्षा के अभिकृत तर हर।

741更 641

জ্ঞাহ প্রদান। বা বাতম - শোক্ষা উদ্ধানি বা শুমারিলের শান্তিৰ ১৫, বট্ট ও ভিডার্ম, জ্ঞান্ত চন্দ্র এবং অনিধ্য।

मुण्क बार अविषय, भारत्यन

সেশ প্রের (লেষ্ড্র কর্ ভ বর্গ্রেশ্যেলর র া ত্র ত লিলে – এফ প্রের বিষ্ণান্ত কিন্তু, এব ভিনে ব্যাহ লিজুনক, ২৯, ৩৬ স্ট ল বিষ্ণান্ত ও বিষ্ণান্ত করে। শুজ হল সাম্প্রির ভাল বিষ্ণান্ত করে। শুজ হল সাম্প্রির ভাল বিষ্ণান্ত করে। শুজ হল সাম্প্রির ভাল বিষ্ণান্ত বিষ্ণান্ত করে। শুজ হল সাম্প্রির ভাল বিষ্ণান্ত করে। শুজ হল সাম্প্রির সাম্প্রির বিষ্ণান্ত করে। শুজ হল সাম্প্রির সাম্প্রির সাম্প্র সাম্পর সাম্প্র সাম্প্র সাম্প্র সাম্প্র সাম্প্র সাম্প্র সাম্প্র সাম্প্র সাম্পর সাম্প

相图 "证明" " " " " "

মূশবাদী চলকল প্রকার ১৮ ব. শা ্নে । ব নুব প্রবিশিক্ত প্রেক্তিক শাক সমূতের পুজালেই এনং কলা উত্তেশ্যেক নিয়ের ক্ষেপ্তিক কিছে এব ওলা ওলা বিশ্ব

183 - CH 1

(१८ अधिक, कोकू, कोकू विभिन्न, एक्टाक, मादक व्याह, न्यावत हैया, रिप्रक्रमक, यत्न, वर्ग, जन्दर व्याह्म, दिएकत वर्ग व्याहित सम्रामकता

ইংবেড, – ছালোগ, জীর্ণজুর, কুকিপুর, কোষ্ঠরোধকভা, গুলা, অফচি, কাস এবং শেফের শান্তি হয়, এবং অর্শ, কুর্তু, অগ্নিমান্দ, কাস, কুমি ধ ককের শান্তি হয়।

পলাত ত্ৰা।

অর্থাৎ পিরার্জ। অত্যন্ত উঞ্চ বীর্ষানহে, ব'য়ুর শান্তিকারী, কটু, তীক্ষ্ গুরুপাক, অধিক শ্লেমাকর নছে, বলকর পিরুকর এবং অংপ শামিকর। कीत्र भनाष्ट्र, - खिक्ष, कठिकत्र, थाजूत्र टिश्वा कात्री, रलकत्र, संधा, करा এवः পুষ্ঠিদাধনকারী, পিচ্ছিল, স্বাহ্ন, গুৰুপাক, এবং রক্তপিত্তের পক্ষে হিতকর।

কলায়-শাক গুণ।

ৰুক্ত এবং পিতুল্ল, বায়ুর প্রকোপকর, গুৰুপাক, ক্ষাল, অন্থর্ম, এবং পাকে মধুর।

চুচ্চু আদি खन।

চুচুচু (১) পৃতিকা (২) তৰুনী (৩) खोरही, दिन्नी किना, नजी, उल्लाडक, छ्शनाञ्जी, त्रकामनी, कक्षी, (8) भावानी, (भन्नु, वनळाडि, श्राप्तत, भन, কর্ষার, ও কোবিদার আদি। ইহারা, ক্যায়, ভিক্ত, প্রথা আহ্, রক্ত-পিত্তম, কফনাশক, ব মু বর্জনকর, সংগ্রাছী এবং লঘু।

किं कि कि वि

লঘুপাক, ক্রমিনাশক, পিচ্ছিল, ত্রনের পক্ষে হিতকর, ক্যায়, মধুর, जरवाही वर किटमार्य ।

कोवली खन।

জর্থাৎ জৈয়নবার্ট। নেত্রের হিতকরী, এবং সর্কোদোষ ছরা।

त्रकात्मी खन ।

অর্থাৎ পর্গাহা। বাত্রাশক।

कड़ी खन।

অশিশ বলকর।

-(১) শাক বিশেব।(২) প্রান্ত) স্ভক্ষারী। (৪) বামনহাটী ",

শীররক্ষ, উৎপদাদি রস, এবং পল্লব গুণু। শীতল, সংখ্যাহী, এবং রক্তপিত রোগে হিতকর।

1/1

शूनर्वामि खन।

পুনর্গা, বক্ন, তর্গারী (৫) উক্তর্ক (৬) বংসাদনী (৭)ও বিল-শাকাদি; ইহার। উষ্ণ, স্থাত্ত, ভিক্ত এবং বায়ুর শাতিকর। পুনর্গাশাক, অধিকন্ত শোধগু।

७७ मी मक आमि छन।

তণ্শীরক, (৮) উপোদিকা (১) অখবদা, চিল্লী, পালস্কা (১০) ও বাঙ্ক (১১) ইত্যাদি; ইহারা মদ-মুত্তজনক, সক্ষার মধ্র, অসপ বাড-শ্লোমাক প্রকোপকর, এবং রক্ত পিড্রা

তণ্ড সীয়কাশাক গুণ।

অর্থাৎ নটেশাক। অত্যন্ত শীত্র, কক্ষ্ণ, রসে ও শাকে মধ্র, রক্তিপিত এবং মন্ত্রার শাত্তিকর এবং বিধনাশক।

উপোদিকশাক গুণ।

অর্থাৎ কল্মীশাক। রুসে এবং পাকে মধুর, রুষ্য, বাভপিত ও মতভার প্রেক্ষ ছিতকর, সারক, অিও, বশকর, শ্লেম্মাজনক, এবং ছিম।

বাস্ত কশাক গুণ!

অর্থাৎ বেভোপাক। কটুপাক, ক্রমিয়, মেধা, অমি এবং বলের বর্জন কর, সক্ষার, সকল প্রকার দোধের শান্তিকর, ক্রচিকর এবং দারক।

চিল্লীশাক গুণ।

वाञ्चक मारकंद्र मम छन विभिन्नो।

भाजकाभाक छन।

আর্থাৎ পালওশাক। নটেশাকের সম ওগকারী। অধিবন্ধ ব'য়ুর প্রকোপকর, মলমূত্র্রাধক, কক্ষ, এবং পিত্ত শ্লেমার পক্ষে হিতকর।

- (६) अप्तरहो। (७) व्यवधा (१) अप्रती। (७) नटिमान।
 - (क) कनश्रीनाक।(১०) शानक्षीका (১১) व्यक्ताना

वाधवलभाक खन।

क्ष, এरर मनमूब । वाश्वताधक।

मछ्क्मनी आहि छन।

মঙক-পণী (১) সপুলা (২) স্থানিষন্ত (৩) স্থাইজনা (৪) প্রাক্ষার্থ বার্টলা, লিপ্পানী, গুড়ু চি, গোজিবা (৫) কাৰ্মাচী (৬) প্রপ্রাড় (৭ অবল্গুজ্ (৮) মঙীন (৯) রুহতী ও কণ্টলারার ফল, পটোল, বার্ত্তাক্ত্বার্ত্তাক্তাক, বার্তাকু কারবেল্লক, (১০) কটুকী, কাকেবুল, উক্বুল (১) পাপ্পাটক (১২) কিরাতভিক্ত (১০) কর্কোটক (১৪) অরিক্ট (১৫) কোশাভকী (১৬) বেলকরীর (১৭) অটরক (১৮) এবং অর্কপুপ্প ইচ্যাদি। —ইহারা রক্তাক্তিয় হৃদ্য, ন্যু এবং কুণ্ঠ, মেছ, জুর, শ্বাস, কাস, এবং জ্কচির শান্তিকর।

मखुकशनी छन।

শৃথিং মৃদ্ধিত। কর।মৃ, পিত্র, রসে এবং পাকে মলুব, হিম ও লযু।

গোজিহ্ব। শাক গুণ।

ইহা পুৰ্বোক্ত নত ৰগানী তুলা গুণ বিশিক্টা।

इनिद्धं कथाक खन ।

व्यर्गाद व्यव्याना । व्यर्ग थी, जिल्लायक, अवर मर्धारी।

ष्यरमध्य खुन्।

অর্থ দোমরাজ। তিক্ত, পাকেবটু এবং পিউ ক্রমান শক।

্যতীনশাক গুণ।

অর্থাৎ ক্রুদ্রমটিরশাক। উষৎ ভিজ্ঞ, কটু, তিনোবল, অধিক উষ্ণ 🔊

কাক্মাচীশাক গুলু ৮

प्पर्या ८ २ छ का मार्चे मारु । म श्रीन भारकत भ्रम छ । काही।

১ মৃঞ্জি। ২ পাকর। ও স্থানাক। ৪ অভনী। ৫ গোজি ব্রারতা।
ত ওড়কামাই। ৭ চাকনারক : ৮ সোমরাজ। ১ ক্রারটের। ১০ করলা
ও উচ্ছে। ১১ এরও। ১২ কেৎপাপড়া। ১৬ চিরাতা। ১৪ কাক্রোর ১৫ নিম্ব। ১৬ ঝিঙা। ১৭ বেতের উগা। ১৮ বাদক কল। রহতি ও কণ্ঠকারীর ফল এন। কণ্, কুণ্ঠ ও ক্মিল্ল কফ বাতের শান্তিকর, কটু, তিক্ত এবং দলু।

পটোল গুৰ:

কফলিতিল, ত্রনের হিতকর, উঞ্চ তিক্ত অথচ বায়ুর প্রকোপকর নতে। পানেক কটু, ইন্য ক্তিকর, এবং অগ্নিকর।

वार्किको खन।

কফবাতম, তিক্তে, কচিকর, কটু লঘু এবং আমিশর। বার্ত্তাকী প্রক ছইলে, ক্ষারবিশি ট এবং শিক্তকর ছইমা থাকে।

কর্কেটিক এবং কার েন্ত্র গুল। পর্যাৎ কাকরোল এবং করলা-উচ্চে। বাস্তাকীর তুলা গুণকারী।

> অটর্মধক, বেত্রকরীর; গুড়ু চী নিম্ব, পপ্পটক এবং কিরাত ভক্ত গুণ।

অটরষক অর্থাথ বাস্ফলন। বেত্রকরীর অর্থাথ বেতের ভাগা পাপপটক ু অর্থাথ কেত্রাপাড়া। কিরা সেতিজ অর্থাথ চিন্নতা। এই সকল তিক্ত এবথ পিতিলোগান শাতিকর।

বরুণ ও প্রপুরাড়শাক।

কক্ষ, ক ৰু, শ্যু, শী গল, এবং বা গলিতের প্রকোলকর।

কার্ম্বাক গুণ।

क्षे ऋश छ। दिश्वि, मधिनक्, नक्ष्रे मश्चित्र, अवर गत्रामत्र गांचित्रत ।

কৌস্তম্ভণাক গুণী

वश्त्र, कन, छेक, झाल नायक खरर नयू नि

नर्गलकामाक छन।

বায়ুর প্রকোপকর, দুগুর এবং পিত্তনীশক।

कारकती खन।

গুহনী ও অশ্বোগের শান্তিফর, উক্ষ, কবার, মধুর, অ্থিকর, পুরু-জন্মরুসমূক্ত হইবে বাত শ্লেমার শান্তিকর হব!

लानिकामि खन।

লোণিকা, জাতুকগণী পাজুর, জীরক স্থার্যলা (১) কুফারক (২) কঠিজার (৩) কুডালিকা (৪) কুরণিটকা এবং পীতারিন্টী আদি। এই সকল রুসে এবং পাকে মধুর, শীতল; কফনাশক, অধিক পিতুজনক নছে, পাঁচাত লবণ রুস বিশিষ্ট, কৃক, সক্ষার, বায়ুর প্রকোপকর, এবং সারক।

কুন্তলিকাশ।ক গুণ!

वर्षार शक्राएं, - मधुर, जिला।

কুরুণ্টিকাশাক গুণ।

ক্ষার রসযুক্ত।

त्राकक्षतक अतः महीनांक खन।

রাজক্ষক অর্থাৎ রাইসরিযার শাক। ইহা সংগ্রাহী, শীতল এবং লগু। ইহাদিগের দ্বারা কোন প্রকার দোবের হ্রাস কিমা রুদ্ধি হরন।।

रतिमञ्भाकखन ।

অর্থাৎ ছোলাশাক। রসে এবং পাকে মধুর, এবং হুজ্জরি, অর্থাৎ শীত্র পাক হয়না।

কলায়শাক গুণ।

ভেদক মধুর, কক্ষ এবং বায়ুর প্রকোপকর। পুতিকরঞ্জের পত্ত গুণ।

অর্থাৎ নাটাকরঞ্জের প্র। – শিধিলক্র, কটুপাক, লঘু, বাতলেখা নাশব

তাষ্ লপতা গুণ।

তীক্ষোষ্ণ, কটু এবং পিতর্জিকর, স্থান্ধি, বিশদ, তিক্ত, স্বরের হিতকর বাড্ডেম্মনাশক, শিথিলকর কটুশাক ক্ষার, অগ্নিকর, এবং বজ্জু কণ্ডুমনে ক্লেদ এবং হর্গন্ধ আদি সংশোধন কর।

শাক্ষর্ম সমাপ্ত।

३.णक्ती (२ तुळ, बंदी। ७ पूनगी। 8 गण्गाए।

পুত্র বর্গ।

কোবিদারাদি প্রজা:

কোবিদার (অর্থ এ রক্তকাঞ্চন) লাল এবং লালালী পুল্প ; ইহারা মধুর, পাকে মধুর এবং রক্ত পিজ্য।

त्रशिम श्रुष्ण खन।

র্য অর্থাৎ বাসক, এবং অগত্য অর্থাৎ বকপুত্র ইহারা ভিক্ত, পরিপাকে
কটু, এবং করকাস্থা।

मधू निज् वानित शूका खन।

মধু শিশু (অর্থ। হক্ত সজিনা) এবং করীর; ইহারা পরিপ কে কটু, বাত্ম, এবং মদমু: তার সঞ্চল কর।

অগন্তা পুষ্প গুণ।

শর্থাৎ বকপুষ্পা। – অত্যন্ত শীতদ শধ্বা শতন্তে উফ নছে। রাজ্যন্ত্র বাক্তির পক্ষে ইহা বিশেষ উপকারী।

রক্তপুষ্পাদির পুষ্প গুণ।

রক্তর্ক, নিম্মুক্ষক, (পথ (৫ ফাটোপাক্ষ) পর্ক এবং আদনত ইহা-দিগের পুষ্প কক এবং শিত্র।

क्षेम श्रूष्म खन्।

্ব্বর্থাৎ কুর্র চী। কুষ্ঠুরোগ নার্শক।

श्राश्रुष्त एव। , ,

দ্ধংতিক, মধুর, শীত্রা, এবং গিত ০ ব্ফখ।

कुर्मश्रुष्ट्री खुन।

मध्न, लिष्ट्नि, जिक्षा, दर्यजनक, अवर मीजन।

कुर ने म (बदः छेर भम भूष्म खन ।

িন্ধুবারপুষ্প গুণ।

অর্থাৎ নিষিদ্ধ পূজা। ছিতকর, এবং পিজয়।

मानठी ७ मिल्मा शुष्त्रं छन ।

ভিক্ত রুস্যুক্ত, সন্ধার অন্য পিছয়।

नकूज शुष्त्र खन।

श्राक्षी विभव अवर छमा।

भ हे न भूष्ण छ।।

बकूनभू मा छन विभिन्छ।

নাগ এবং কুন্ধুন পুত্ৰ গুণ।

নাগ অথাৎ নাগকেশর। ইহারা হোল পিক, এবং বিষ্নাশক।

हम्लाक शुक्त छन।

ব্রক্তপিত্র শীতর অথচ উষ্ণ এবং কফের প্রক্রে ভিত্মর।

কিংশুক এবং কুর্লটক পুষ্পা গুণ।

কি শুক মহাহি প্ৰাসপুত্ৰ এবং কুৰণ্টক অংগ ৎ পীত্ৰিটো ইছারা কফ এবং পিডায়।

বে বে রুকের যে যে এন, সেই সেই পু.জ্পর ভদস্রপ এন জ।নিবে।

মরুশিপ্র এবং করার গুণ।

क हे वर श्रियानामक।

करकानि खेंगे।

ক্রেচর এবং বংশক রীর আব্দি। ইহার : এবং মূজের স্থা করা

भक्तिक छन्।

ক্ষিকর, পরিপাকে স্বাহ্, পিছিল, বিদ্যুল্টা কায়ু র্জিকর, এবং জ্ঞাত পিড্লেম্ব। কর নতে।

বংশকরীর গুণ।

व्यवीय वारमह (काइन) । कककह, हरम अवः शादके मुधून, विमाशी, वा

প্রাণাপ ঔদ্ধানরীর, বেনু এবং ভূমিলাও উল্ভিদ !

প্ৰশাসজ্ঞাত উদ্ভিদ গুণ।

অর্থাৎ ইড়ের পোরাজাত উল্ভিত। – মধুর, পরিপাকে, মরুং, কক এবং দোষম।

ইফুজাত উদ্ভিজ গুণ।

অর্থাৎ ইক্ষুর খোরা ছাণ ছইর। থাকিলে ভাষাতে যে কোরক উৎপত্তি হয়।—মধুর, প্শ্চাৎ ক্যায় রস বিশিষ্ঠ, কটু এবং শীভল।

করীষকাত উদ্ভিগ তুগ।

জাৰণি ইকুলাত উদ্ভিদৰ তুশা শুক গোমির হইতে যে কোরক উৎপন্ধ হয়!—ইহা ইকুলাত উদ্ভিদের তুশা গুণ বিশিক, উক, ক্ষাম রুদ্ বিশিষ্ঠ এবং বংযুব প্রকোপ্কর।

विषुष्ठां उ हे सिन छन्।

শর্থাৎ বাঁশের গায়ে স্থেচনর্গ ছাতার সমায়ে কোরক উৎপন্ন হয়। কথায় রস বিশিষ্ট এবং বায়ুর প্রকোপকর।

ভূমিষ্পাত উদ্ভিন গুণ।

ওকপাক; এবং শতান্ত বায়ুব প্রতিকাশিকর নহে। ভূমি ছইতে উৎপ্র হয় বলিয়াইহার ভূমির সম রস বিশিক্ত হয়।

পিণ্যাক এবং তিলু কল্ফ ইত্যাদির পর।

পিশাক, তিল-কলক, স্কুলিয়া এই শুক্ষ শাক আছে, ইখান। দুচল দেংখের প্রকোশকর।

वर्षेत छन ।

সকল প্রকার বটক অর্থাৎ প্রিটক বিশেষ) বিভিন্তী ও সাম্ব এচে। শকর।

'পিওাকী ভণ।

वायुत्रविकत्र, कठिकत्र, मृ'त्यु धवः पश्चिकत् ।

, গকল প্রকার শাক গুণ।

স্বাদেরক, গুৰুপাক, প্রাধাই বিউল্ভী, এবং জ্তরি বীক ক্যার রস্বিশিকী, পরুব রস্ভ বৃদ্ধ বায়।

(20)

श्रुष्ण, श्रज, कन नान, ध्रवः कम ख्रव।

ইহারা যথা ক্রমে গুরু। শর্কণ, অভান্তজীন, কীটক্ষত শ্বস্থান জাত এবং অদাল উৎপন্ন এ প্রদার পত্ত গাক পরিত,াগ করা বিধেয়।

कम्म वर्श।

বিদারীকদা, ভূবি কুমাণ্ড, শত বরী (১) বিদা, ফ্ণাল, শৃকাটক (২) (কংশেকক (৩) পিণ্ডালুক (৪) মধ্বালুক (৫) হন্তালুক, কার্চালু, শাঙ্থালুক (৬) রক্তালুক (৭) ইন্দিবর এবং উৎপ্র কন্দ অর্থাৎ মূল ইত্যাদি। এই সকলের মূল,—রক্তপিশুষ, শীতল, মধুর, গুক্পাক, শুক্ত এবং শুনা রুজিকর।

विमात्री कम्म खन।

ৰধ্ব, রংছান, র্ষা, শীতিশা, স্বরের হিভিক্র, স্তান্ত মূম হুজাকের, বাশকর এবং বায়ু-পিতিয়।

শতাবরীকদ গুণ।

আর্থাৎ শৃতমুগী। – বাত-পিত্তর, রুষা, স্ব হ্র, ও ভিক্ত রস্মুক্ত জ্ভাতর মুখপ্রির, মেধা, অগ্নি এবং বলের বর্জন কর। ইত্রে শঙ্ক্র, প্রত্থী এবং শুর্ম-বিক্রে শান্তিকর রুষা, শীত্র, এবং রুষায়ন; কফ এবং পিত্র, এবং ভিক্ত রুম বিশিষ্ট।

विम छो।

অর্থাৎ পালাদির মূলাল। এক্রবিদাহী, র্ক্ত পিতের শান্তিকর, বিষ্টন্তী হুজ্র কক্ষ, বিরশ এবং বায়ুবর্জনকর।

শৃল্পটিক এবং কশেক্সক গুণ।

অর্থাৎ পানিকল এবং কেশুর। গুরুপ কর্ বিষ্টন্তা এবং শীতন।

পিগুলিক গুণ।

• লর্থাৎ গোলসালু। কলকর গুরুপাক, এবং প্রকোপকর !

⁽১) শতমূলী। (২) গানিকল। (৩) কেওর। (৪) গোলকালু (৫) মেপিন এড) শীপসুলু। (৭) সাম্পাশালু।

श्रुदब्धकम खन।

क्षियानांभक, शित्रशांक करू अवर शिट**ण**त्र वर्षानकत् ।

বংশকরীর গুণ।

व्यर्गार वैदि । - গুৰুপাক, কফ এবং বায়ুব প্রকোপকর।

ञ्च, स्र त्र (১) वर् भानक (२) वर्जा

ঈৰৎ ক্যায় রসযুক্ত, কটু, ৰুক্চ, বিষ্ঠন্তী, গুৰুণাক, ক্ষ এবং বায়ুৱ বুজিকব। এবং পিডায়।

মানক গুণ !

ব্যথি মানকচু। স্বাচ, শীভদ এবং গুৰু। (মভান্তরে) স্বাচ্, শীভদ শোধনাশক এবং পাকে কটু।

क्र्लकम खन।

অভান্ত উষ্ণ ৰহে।

म् त्रव छव ।

অর্থাৎ ওল। গুদকীল অর্থাৎ কোঠবজরোগম। (মতভারে) অরি-বর্দ্ধক, ক্টকারক ক্ষম, ল্যুপাক, ভোজনগথের পীড়াদায়ক, এবং অর্শ-রোগের হিত্তকর, বন্য ওল—ইকুলেশ্য কিঞ্জিৎ অর্প গুণ বিশিষ্ট।

कि हु छन ।

मात्रक, कर्रे, बागवक এवर वाज इक्तिकृत्

कूमून, डेर्नन, ७११ भूनकम ७०।

हेराता व'शूत थाटकालकृत, कवाब तमयुक्त, लिख्य, लित्रिलाटक मधुत अरस् रिम छन ममझ।

বরাইকম গুণ।

हिल्लाना भक्त तरम श्रीर शादक कर्षे ; भर, क्रुर्व अवः क्रीम-ना भक्त विशेष कर द्वारा अवर तमात्रन।

३ वन । २ मानक हा

ভাল, নারিকেল এবং খর্জ্জরাদি রক্ষের মন্তকের মজ্জা গুণ।

মজ্জা অর্থাৎ মাতি। ইহার। পাকে এবং রুসে স্বাহু, রক্ত পিত্র, ওকের ব্লব্বির, ব'যুনাশক এবং কফের রুদ্ধিকর।

নুতনজাত, ধাতু বিপ্রায়ে উদ্ভব, জীল, ব্যাধি বিশিষ্ট, কীটকত, এবং খেসকল উত্তদরশে বিরুত্ন হয়, এ প্রকার কব্দ সমস্ত পরিত্যাগ করা বিধেয়।

कम्पर्श ममा थः।

मयन वर्ग।

সৈদ্ধাৰ, সাযুদ্ধা, বিজ, সেবিচ্চক, বোমক এবং উদ্ভিদাদি লবণ সমস্ত পারহ ক্রেমে উষ্ণ, বাতম এবং কফ ও পিতের প্রকোপকর। এবং পূর্বা ক্রেমে। স্মিন্ধা, আহু এবং মলমূত্রের সঞ্চরকর।

रेमञ्जय नदन खन ।

্ নেত্তের হিতকর, মুখপ্রির, কচিকর, বহু, অগ্নি রন্ধিকর, স্লিগ্র, মধুর রস বিশিষ্ট, রুষ্ট্য, শীভদ, দোষ্য এবং সক্রপ্রেকা্র ববন অপোক্ষা শ্রেষ্ঠ।

विष्ठेनवन खन ।

ज्ञानात्र, अधिकत, कक्क, शून चेत्र ऋटामांगेश्व, किकत, शिक्क, छेक । व श्रुत

- (मोर्नेफ न नर्ग छणे। र्वाट क्रम कर्ना अविधार क्रम प्रेमेनीश वि

অর্থাৎ ক্রফ লবন। পরিপাকে লঘু, উষ্ট-নীর্থা, বিশদ, কটু, গুলা, শুল পুরুত্বিবৃদ্ধ হর, মুখপ্রিয়, স্থরতি ও কচিকর।

· (त्रोधक नवन खन। ो

অর্থাৎ প্রাংশুলবন। তীক্ষ্ণ, শুতান্ত উফ, জ্ঞীসংস্বর্গের বর্ত্তনকর, পারে।

डे फिन् मदन।

लयु, डीक्स, उँध, उँशहरी, शक्ता, वाश्चर व्यक्तानाम इत, जिल करू अवर

গুটিকা লবণ খুণ]

কফ, বায়ু এবং ক্রমির শান্তিকর, লেখনকর, পিত্তপ্রেক্পকর, অগ্নিকর,

উষক্ষার লবণ গুণ:

(আহি কোব মৃতিকা হিইতে যে শবন উৎপাল হয়) বালু,কর, ওলে ফুল দেশত আকর হইতে যে শবন উৎবল হয়) কটু এবং ছেদনকর।

यवकतानि खन।

যবনীর (শর্থাৎ যবের শুক্ত আ করত যে লবণ প্রেল্ড হয়) র জিনানার (অর্থাৎ সাজীদাটী) পার্কিদ, এবং টক্ষ (অর্থাং সোহাগা) এই সকল গুলা, শর্ম গ্রহনী, কোষ, এবং শক্রাজশারী নাশক। সক্ষপ্রার কারেই পাচক এবং রক্ত গিতাকর।

স্বর্জিকা-ক্ষার এবং যবক্ষার গুণ।

অগ্নিছুল্য- শুক্র এবং শ্রেমার দমনকারী অর্শ, প্রীহা এবং গুলারোগম।

উধক্ষার গুণ।

छिस्र व्यव वाष्ट्र, अहमी व्यव मिनामक।

পাকিম ক্ষার গুণু

ु मूज्रे खि (भाधन इत এवर (मन्द्र)

টক্ষণ-ক্ষার তেই

ৰুক্ষ, বায়ুবৰ্দ্ধনৰর, শ্লেখাশালক, পিছকুর, অগ্নিকর এবং তীক্ষ।

ांच्यतं खन ।

चाइ, चना, द्वः इल, तिमाधन, जिल्लात्वत थारकाशकत, भीवन, न्युद्

क्रिशा खुन।

मुल-त्रमविभिक्ते, मातक, भीजन, देश्माक अवृत् बाग्न-शिक्य ।

ভাষ গুণ।

ক্ষার-রস্বিশিষ্ট, মধুৰ, বেখনক্র, শীতল এবং সারক।

काइमा खन ।

তিক্ত-রস্বিশিষ্ট, লেখনকর, নেতের হিতকর এবং কফ ও বায়ুব শান্তি⊸ কর।

(लोह खन।

বায়ুবৰ্দ্ধক, শীতণ এবং ভৃষণ, পিত 🗷 কফম।

ज्भू ज्वर भीमक खन।

ত্রপু অর্থাৎ রাং। ইহার। কটু এবং ক্রমিনাশক, লবণ-রস্বিশিষ্ট এবং লেখনকর।

मुक्ति विशे।

মুক্তা বিক্রম (১) বজ্রা (২) ইন্দ্রনীল, বৈত্র্য্য এবং স্ফটিক সাদি মনি সমস্ত নেত্রের হিত্তকর, শীতল, লেখন এবং বিষয়)

উৎकृष्ठे जवा विकान।

व्यत्तत्र मरधा उ क्रिके।

यकिनो, तोश्चिम, यतः त्नाहित भोनी भीताः मूर्गः, व्याप्ति वितः मञ्जाः (श्वाना,-मर्श्व कत वरमद्वत रहेत्न) वितः वज्ञः, — मः व व वतः वश्यां मित्र हहेत्न छरक्षे क्रानित्त । व्याप्ति ।

मांश्रमत्मारधा छेटक्रछ ।

লাব, ভিত্তির, সারজ, কুর্ফী এন, কপিঞ্চা, মহুর, বমী এবং কুর্ম। (বংস, – মধ্যম বয়ক্ষ পশুর হইলে উংক্র জানিবে।

क त्वत मर्थंग छे रक्त छै।

कित्ति, नामनक, जाका, शब्दित, शक्तिक, शिवान धरः माजूल्य। कित, - यथाकारन छेरलीव स्ट्रेल छेरक के क्वानिर्दे।

भारकत्र मरधा छेटकुछ ।

म ठीनः वाखन, पूर्कं क, विल्लो, मूनक, श्लाखिका, मध् कशर्गी अवर जीवली। (भाक, - अधक, उक्त अवर नृजन इहेटन छेटकुक्त खानिट्य।

त्र छ इ (अंत मर्पा छे १ क्रिके ।

গ্ৰা ।

नवर १ वर्षा डे १ कुछ ।

रेमक्रव।

्ष्यस्मत भरधा छेरक्वछ ।

नामनकी এवः माण्यि।

क रू तरमत मर्पा छे रक्त छे।

-शिक्ताों वर छरी।

जिकदरमत्र मरधा डेश्कृष्टे।

পটোল এবং বার্তাকু।

भवूत तरमत मरधा छेरकृष्ठे।

शृ वरः (को स वर्षा मश् ।

क्यांत्र त्रत्यत मस्या छेरक्क छ।

পুর্গকল এবং পর্ষক।

हेकू विकादित मधा छेरकुछे

भक्षा।

मरनात मरधा छेर्कुछ।

मधानर এवर देगात्रव।

কৃতান বিজ্ঞান। লাক্ষণ গুণ।

शाहक व्यर च रिक्त । शिल्यो व्यर ७०ी मध्युक इहेता, व्यूषिक्ष विवाद वार्ष्ट्र चार्य व्यापक व्य

অহুলোমকারী হটরা থাকে। বিলেগী হইলে, – তৃণিকর, মুপ্পির, সংগ্রাহী, বলকর, স্বাহু, লয়ু, অমিকর এবং কুষা তৃষ্ণার শান্তিকর হয়।

ষ্ব্ৰণ্ড গুণ।

क्षमा, कृष्टिकत, त्रुवा, भूचिकत वदः वनकत्र।

পায়স গুণ।

বিভিন্তা (অর্থাৎ বায়ু এবং মলমূত্রাদির রোধক) বলকর, মেদ ও খ্লেখ-জানক এবং গুলুগাক।

ক্ষণরা তুগ।

ष्पर्य.९ चिठ्ठे । - क्क अतर शिख्यानक, तलकत अवर वायुत भंखिनत।

আৰু প্ৰকরণ গুণ।

ধৌ হ, নির্মাল, শুক্ষা, প্রায়ের, স্থারারী, স্থারার উক্ষা এবং স্থানাত ছইলে (আর্থাং নিঃশেষরাপে কেন নিঃমারিত হইলে) অপো শ্যু হয়। দৌ হ প্রান্ত আধারা স্থায়া না হইলে কিছা শীতেগ হইলে অয় গুক্পাক হইয়া থাকে।

ज्य खन।

বশর্জিকর, ধাতু প্রক্তিকর: প্রীভিজ্ঞানক, শুক্রের জিকর, গুড়া, ধ'তু এবং ইপ্রিয়ে সকলের বলকারী, কুষ্ণ, ফুশতা এবং ক্ষয়তানাশক।

নুত্ন ভণ্ড লাঘ গুণ। লেখাকর, স্বাহ্ন ত্রিষ, ভক্রবর্ত্তক এব ওক্সাক।

পুরাজ্য ভণ্ড লাল গুণ। বিরস, কক শধ্য এবং অগ্নিকৃদিকর।

অতি উফার গুণ্।

वनमायक अद्र भी उस ।

শুক্ষ বি গুণ।

ख्रुंभाक भवः विव्रम।

१ नभव ७ विम बाज ७ मे।

अ, निक्त अवर छक्श्राक।

मरनारधोडां इ खन ।

भव्याक, भीखलाकी अवर भी छन।

প্যু বিভাৱ গুণ।

जित्न विष्क्षंक अवः कक्त।

ভাজা তণুল গুণ।

নঘুপাক এবং অগ্নির্দ্ধিকর।

চাউল ভাদ্ধা গুণ।

প্রণাম্ভি, কফনাক, কক এবং পিতকর।

চিপিটক তাণ।

ভারি, স্থিন্ধ, শুক্রা, মল এবা কফবর্দ্ধিক।

চিপিটক প্রশার खन।

বলকর, বাহুনাশক এবং কোষ্ঠশু জ্বিকর।

ভুষ্টার গুণ ৷

वर्षाद गूजी। - नयु, ऋगन्नी এनर ककना नक।

वां अवन खन ।

ञ्चित्र, जूष शैनः जेयर एक्कि व इटेन्स मधु এवः विषक र वहेश थारक

শাক প্রকরণ। ...

দিন্ধ এবং নিস্পীড়িত (অর্থাৎ জল । ড়ি.ইয়া) গতে অধবা তৈলে সংজ্ঞার করিলে হিতকর হয়। ফিল নিশীড়িত এবং তৈল কি ঘূত ছারা সংজ্ঞ্জ না হইলে সহিতকর কটুয়া থাকে।

न्यांश्य श्रमत्र।

মাংস অভাবতঃ রা/া, জ্যাকর এবং বলকর। স্নেহ, খোল, গাঁনালু, ক্লাল একং কটুরদের সূত্ত পাক করিলে, –হিতকর, বলকর, কৃতিকর, গুড়ীকর এবং গুক্পাক হয়। খোল এবং গদ্ধাবের সংযোগে সংস্কৃত, ছইলে পিতাও কক্জনীক এবং বল, মাণ্স এবং অগ্নির বর্ত্তনকর হয়। প্রিস্থ পরিশুক ছইলে, – আগ্নি, ছর্ষজনক, প্রীতিকর এবং গুরুপাক হয়; এবং ক্তিকর ও বল, মেধা অগ্নি, মাংস ওলাঃ এবং শুক্তের বর্ত্তনকারী ছইয়া খাকে।

डेल्लू ख भारम खन।

মাণস, - উলুপ্ত এবং গিউ ছইলে, উলুপ্ত কছে। উহা পরি ভাকর সম জনবিশিত হল বলিলা অগ্নিপক ছইলে লঘু ছইলা থাকে।

ম'ংস শূলকা প্রথিত এবং প্রালিগু করিয়া (অর্থাৎ মাংসে মদলালি মাধাইয়া) জজারে পাক কবিলে কিঞ্ছিৎ ওকপাক হয়।

বে মাংস উলু গু, ভজ্জিত, পিউ প্রতিগু কিছা কটাহে পক কি পরিশুক্ষ প্রাদিয়া, শুলিকারাছিত কিছা এই প্রাকার অপব কেনি মতে পাক কর। যায়, ভাষাত কিছিৎ গুক্পাক হয়।

टिजनशक भारम खन।

छिम्भवीर्घा, लिखकत्र अदर धक्या क इस।

ध्राज्यक ग्रंग खन।

লঘু. সংগ্রের দীপ্তিকর মুখপ্রির কাচিকর দৃষ্টির প্রাসন্নকর, পিতাল, মনে জ এবং উষ্ণীর্মাহয় না।

भारतमञ्जूषी खन ।

ভৃত্তিকর, বলকর, খাস, হাসু, এবং ক্ষুট্রোগন্ন; বাত, পিত এবং প্রাথ-নাশক ও মুখ প্রার। মাংদের বিষ দ ড়িগরস সংযুক্ত হইলে, – ম্মৃতি, ব্লল এবং অরহীন ব্যক্তিগনের, অরুধারা ক্ষীণ এবং ক্তোরস ব্যক্তিগনের ভ্রম এবং বিলিফ-সন্ধি ব্যক্তিগনের, কৃশু এবং ক্সিংবেডস ব্যক্তিগনের ভৃত্তিকর, সংখাত্তকর, শুক্তা, ওজঃ এবং বলের ব্রন্ধনকর, রুষ্য এবং দোষম হয়।

রসগ্রহীত মাংস প্রা

অধাৎ যে মাংসের রস প্রত্ন করা হয়, ভার্ছ সেবন করিলে পুরিনাধন কি বলাধন হয় মা। রস্প্রহীত অর্থাৎ দীটামাংস, – অঞ্জীর্কর, বিই খীঃ कक, विद्रम अतर वांग्रुत द्विक्तिता मीथाधि वां क्रगटनेत्र शत्क (वर्ष: ६ ষাহাদি(গর ঠঠরাগ্নি অভান্ত ভীকু) ভাষাদিগের পক্ষেও রসএছীত মাৎস वर्षार भौतेमारम वाश्व अक्याक लानित्त।

' ্থ।নিজনাংস গুণ। (অংথাং অস্থিনীন স্থল এবং পুন্ধার প্রত্তর দারা চূর্ণিছ) এমত ১ मारगहे भथा।

বেশবার গুণ।

পিপানী, অঠী, মরিচ গুড় এবং গুড়ের সহিত এককালেই উত্তমরপে প্ৰফ হওরা। ইহা গুৰুপাক, স্মিন্ধ, বলক্ৰ, বাভবোগ্য এবং স্কল ধাভুৰ शक्ति এवर (य जनल त) क्वित गूभरभः स इत्र, जाहानिरशत शक्क विरम्य তৃত্রিকর এবং হিতকর।

मৌরাব গুণ।

ক্ষুধা এবং ভৃষ্ণ'র শান্তিকর; মধুব, শীতল, স্ফল্ল, অগ্নির্দ্ধিকর এবং বঁমিল অপনা বিদ্রেচন দারা শুদ্ধ-শরীব ব্যক্তিদিলোরত মুপপ্রিয়। সোরার ष्य गुष्ठ छे ६ क्रुष्ठ ।

य्यं तिङ्वान।

মুদ্যাযুষ গুলু।

অর্থাৎ মুগোর যুহ, – ক্লত অথবা অক্তহী হউক, ইহা বিলেব হুপ্থা।

ত্রাগমাতৃক গুণ।

অর্থাৎ মুদ্ধাযূব, – দাতিনী এবং জ্ঞাকা সহবোগে প্রস্তুত। মহুর, ধূপা, গোধুম এবং কুলখা, সবল সহযোগে কৃত হইলে কতিকর, ভয়ুপাক এবছ . (म: रिवतः व्यक्तिदर्शिष रया ∫ जिस्रा जाका এवर माज्ञिक मध्यूक रहेटग कर्क अवर পিছের অবিরোধি হয়। ইং। বাতব্যাধির শক্তে উপকারী এশং বায়ুরাগার ্রীকে অপথ্য, কড়িকর, অন্নিকর, মুখপ্রির এবং কুর্পাক।

नियद्यान खन।

পার্টোল এবং নিছের যুষ, - ইহা কফ এবং মেদের পোধনকর, পিউস, আমিকর, মুখপ্রিয় এবং কৃমি, কুষ্ঠ এবং আঃরের লাভিকর।

मून (कत यूष छन।

খাস, কাস, প্রতিশার প্রসেক, শৃক্চি এবং জ্বর র এবং ক্ফ, মেদ, ও, গলরোগ নিবারক।

কুলথের যুষ গুণ।

বায়ুনাশক, স্বাস ও প্রিস রোগের শান্তিকর এবং তুনী, প্রতুনী, কাসঃ
অর্শ গুলা এবং উদাবর্ত রোগের শান্তিকর ছয়।

দামিড় ও আমলকের যুব গুণ। মুখপ্রির, দোবের সংশমনকারী এবং শঘুপাক।

মুদা ও আমলকের যুষ ৪৭।

বল এবং অগ্নিজনক, মৃত্ত্র, ও মেদনাশক এবং পিও ও ব'য়ু দমনকারী। গু'আই বি এবং কফ ও পিডের পক্ষে হিতকর।

যব, কোল এবং কুল দুর্থার যুষ গুণ। কণ্ঠলোধনকর এবং ব যুনালক।

সকল প্রকাণ ধান্যের যুষ গুণ। ষর, কোল এবং কুলখের সহ গুণ সম্পান্ন, রুছণ এবং বলের বর্জন কর। প্রাল অর্থাৎ কলক গুণ।

क्ता अवर ७ वाशु हत्कत दिषकत ।

কাম্বলিক গুণ।,

প্রকোক গুণসম্পন্ন (

দাড়িষাত্র গুণী।

ক্রেন্ত্র কুলু এবং বায়ুনাশুক ও অ্লির দীপ্তিকর।

प्तवाखन-मर्भन।

नधास छन ।

কক্ষর, বলকর, বৈশ্ব ব'য়ুবাশক এবং গুৰুপাক।

ভক্রাম গুণ।

পিততকর, বিযন।শক এবং রক্তের হানিকর।

অকৃত এবং কৃত্বিজ্ঞান।

তৈল, লবন এবং ঝাল; এই সকল দ্রব্য সহযোগে প্রস্তুত না হইলে ভাছাকে 'অক্ত, বলে এবং গোরস, ধান্যাস এবং কলাস সহযোগে প্রস্তুত হইলে ভাছাকে 'কৃত, বলে।

সংস্ভ এবং অসংস্ত মুষ গুণ।

সংস্ত অপেকা অসংস্ত যুব,—লঘুরসবিশিষ্ট ও হিতকর।

কাখলিক।

"(অর্থাৎ দ্ধিমন্ত আল সহযোগে প্র হ ইরা যেমূব প্রস্ত হর)।

जिन कल्क रेजानि खन।

ভিলকলক, ভিলবিক্তি, শুষ্ধাক, শারাক্ষ্র এবং শিগুকী। এই সকল
গুক্পাক এবং ও পিতৃবর্জনকর।

्वछेक खन्।

जिलकल्कामित मम छनिविनिष्ठ अवर विद्वारी।

রাগষাড়ব গুণ।

मधुलाक, त्रश्रम त्रवा, कृता, त्राहक, अधिकतः एका, मुक्ती, जन, एकि

त्रमाना खन।

'ল্বং অলপ্থি /৪ চারি দের, পরিকার মিছরি /২ ছই সের, ক্লিন্ত্রপু ৪ চারি ভোলাঃ হত ২০ কুড়ি ভোলা, ৩৩ টি ৪ চারি মাবা, নাগাইচ ৪ চারি মাষা মরিচ ১৬ বেলি মাষা এবং লবল ১৬ বোল মাষা; ै.ই সমন্ত দ্রেরা একত্রে হন্ত হল দ্বারা মন্থন করিয়া পরিষ্কার স্থান ব্যক্ত লংগ্রেছ চাঁকিবে। তৎপর মৃগনাভী, চন্দন, অগুক এবং কপুরিবাসিত মাটির পাত্রে উহা উত্তদ রূপে আলোড়ন করিবে। তুগবান বাহ্যদেব এইরূপ রসালা প্রস্তুত করিয়া পান করিতেন।

জল রসবিশিষ্ট দ্নিজ্ঞান মহিষের ছ্যের দ্যি ৮ সের এবং শুজ চিনি /৪ চারি সের; এই ছুই জবা প্রথমতঃ কিঞিৎ কিঞিৎ করিমানে পরিমানে বজে নিক্ষেপ করিবে, তৎপর আর্ছ খন ছ্যের সহিত নৃতন মাটির পাজে ভ হা উদ্ধের রাখিবে, পশ্চাৎ একাচ, লবজ, কপুরি এবং মরিচের সহিত উহা মিশাইল। আলোড়ন করিবে। ভোজন প্রিয় রকোদর এইরপের রসালা প্রস্তুত্ত করিতেন।

রদালা,—বসন্ত বজ্ঞিত দিনে প্রতিদিন দেবন করিলে বীর্যা এবং ইন্তি-দের বল র্ছি হয়। প্রীয় কিছা শরৎকালে স্থাকিরণ দারা শরীর বিশুদ্ধ চইলে, প্রমন্ত জীসভোগে শরীর থিয় হইলে, — দূর পথ জমণ কবিয়া শরীব শীর্ণ হইলে; এই রসালা পান করিলে শরীর ত্রেই পরিপুট হয়। রসালা শুক্রের্ছিকর, বশকর, কচিকর, বায়ু এবং পিতনাশক, অগ্নিকর, ভেক্কজুব্ ক্রিয় মধ্য শীতল, সারক, এবং রজ্ঞাপত, ভৃষণ, দাহ এবং প্রতিশাল রোগের শাতিকর।

मिनिठ जीता।

७ इ म ज्युक मि कर्य।

ব্লেহকৰ, মুখপ্ৰিয় এবং ৰায়ুনাশকু;

মস্থ গুণ

- হৃত্যুক্ত জ্বলারে আগ্রাভ এবং অত্যন্ত এব নহে ও আতান্ত শীতলক ন্তে এর পে শুক্ত প্রস্তাত করিলে মহ বছে মন্ত্র সাল বলকর, পিপাসা এবং বিষয়। ্ষাল, তৈল প্রবং থাড়, একতে পাক হইলে মুম্কুচ্ছে এবং উনাবর্ত রোগের শান্তিকর হয়।

শার্করা, ইফুরস এবং জ্রাক্ষা মিলিত হইলে পিজবিকার নাশক হয়। জ্রাক্ষা এবং মধূক মিলিত হইলে, কফরোগ নাশক হয়। ত্রিফলা মিলিত হইলে মলদোধের অল্লোমকর হয়।

আল-বসবিশিষ্ট অথবা অল বিহীন গোড়িশানক অর্থাৎ গুড়ের পানা,— গুকপাক এবং মূত্রে ছিকর। উহা মিছরি, ফ্রাক্রণ এবং শর্করার সহ মিলিভ হইলে অপ্পারসবিশিষ্ট, তীক্ষ্ণ এবং শীত্র হয়।

দ্রাক্ষাপানক গুণ।

শ্রমনাশক, মৃড্ছ¹, দ হ এবং ভৃষ্ণানাশক।

প্রদাক ও কোলের পানক হল।

মুখপ্রির এবং বিউদী।

জনের সংযোগ, সংক্ষার এবং মাজা বিশেষকপো বিদিত ছইয়া সেই স্থাবারে অনুসারে পানকেয় গুক লাবব উপদেশ প্রালান করা বিধেয়।

ক্রিজাত ভক্ষ দ্রবা তে।।

বশকর, শুক্রবৃদ্ধিকর, মুথ প্রির, স্থান্ধী, অদাহী, পৃথিকর, অন্ধিকর, এবং পিজন্ন। উহা ঘূরণক হইলে, —বৈশকর, মুথপ্রির, ক্ককর, বার পিওন, শুক্রবৃদ্ধিকর, ওক্পাক এবং রক্তমাংসর্দ্ধিকর।

ওড়জাত ভক্ষাদ্র গুণ।

র্দ্ধির, গুরুণাক, ব'রুনীশিক, অদি'হী, পিতার শুক্র এবং কফের র্দ্ধিকর।

স্থ চাদি দারা প্রক গোধুমচুর্ণজাত পিউক এবং পুর্মিশ্রেত পিউক গুল।

रिट्णस्त्रभ धक्रभाक अवर वर्षन।

(यांनक खन।

অহান্ত হুর্ভার অর্থাৎ শীত্র পরিপাক হয়না।

ममृक खन ।

ক্ষতিকর, অগ্নিকর, স্বরের হিছকর, পিডায়, ব'য়ুনাশক, ওঞ্পাক, মৃষ্টভন্ন এবং বলবর্জনকর!

वियानमन खन।

মুখাপ্রির, স্থান্ত্রী, মধুব, স্মিন্ধ, কফকর, গুরুণাক, বায়ুনাশক, তৃত্তিকর এবং বলকর।

ता धूब हूर्न मश्रकी म ज्कार वा खन।

রংহণ, বায়ু এবং পিত্তম এবং বলকর। ইহা ওকমিশ্রিত হইলে ফেণক কছে। ফেণক, – অত্যন্ত মুখপ্রির, হিতকারক এবং লঘুপাক।

মুদ্ধ দি বেসবার সমূহের মধ্যে, – পুর্ণা বিউজ্জু। বেসবার, – মাংস সহিত হইলে সম্পূর্ণা কহে। সম্পূর্ণা – গুক্সাক এবং রংছন।

পাসল গুণ।

অর্থাৎ পিষ্ঠক বিশেষ। শ্লেখ'জনক।

भक्त नि खन्।

আর্থাৎ বিষ্টক বিশেষ। কফ এবং পিচ্তার আকোপকর, বিদাহী, অভাস্ত বলপ্রাদ নাছ এবং বিস্থান গুরুপাক।

द्वित्व छन्।

लिहेर्कित (भव। नघूलाक, कृति असति भिक्ते वयर व'यूत मध्यम्त ।

भाषकनारे मः क्वांसि शिक्षेक खन।

বিষ্ণী পিত্তপ্রিশিষ্ঠ, শ্লেম্মান্শিক, মলের সঙ্গতিকর, বলকর, শুক্র-রুদ্ধিকর এবং গুরুপাক।

कुर्फिका।

. वर्षां पूत्र विकातका व समामता। अक्षांक अवः वाज्य शिवन्त्र

অদুরিত দ্রোৎপন্ন ভক্দবাঞ্গ।.

শুকপাক, বায়ু এবং পিতের বর্ষনকর, বিদাহী এবং উৎক্রেনজনক, কক্ষ

• श्रुजशक्तभीमाजना छन

ফদ্য, স্থান্ধী, শুক্রেরিকের এবং লঘ্পাক; ব'য়ু এবং পিত্র, বলকর এবং বর্ণ দ্বীর পক্ষে হিতকর।

टिन्लाइ थानासना छन !

বিদাখী, গুৰুপ'ক, পরিপাকে বট্ট-রমবিশিক্ট, উক্ক, বায়ু এবং চৃষ্টি-ম'শক; পিত্তকর এবং ভূকের দেখি উৎপাদক।

> ফেপ, মাংশ, চিনি, তিলি, মাষকলাই ছারা উপায় ক্রেভক্ষ দুবো ভাগ!

यमकत्र, अक्नांक, दुःदन এवर रुपदं श्रीतः

कल'ल ध्रार अभात शक्त थानासना खन।

লযুপাক এবং বায়ুব প্রকোপক্র। ইহা সংগক হউলে লয়ু এবং পার্বেও অভাস্ত লয়ু হয়।

কিলাট অর্থাৎ ছানাদি ই্শ্ববিকার জাত ভক্ষাদ্রের গুণ।
গুৰুপাক এবং কফের ংজনুকর।

ক্ৰমান গুণ।

অর্থ হৈ অর্থ নিজ গোর্নাদি। ব'তকর, কক্ষ, গুরুপকি এবং মলের স্মতিকর।

वाछाछन।

ক্ষর্বাৎ ভৃত্তবর। উদ¶ভ, কাস, পীনস এবং দেহরে;গনাশক্র :

धारलाल्य खन।

লগুপাক এবং কফ ও মেদের শোধনকর।

সর্বপ্রশার শক্ত গুণ।

অর্থাৎ সকল প্রাকার ছাতু। – রংহল, রব্য, তৃষ্ণা, পিত্ত এবং কফয়। খাইবামাতে বলকর ভেদক এবং ব য়ু নালক। ছাতু ভবল না ছইয়া পিণ্ডা-ক্ষৃতি হইলে গুৰুপাক এবং খর অথাৎ কঠিন ছইলে বিশেষ গুৰুপাক ছয়। শক্তব অবলেহিকা অর্থাৎ ভিহ্নার অব্যভাগ দারা সাদর যে,গা ছ'তু-কোমলত্ব হেতু আগভ জীব হয়।

लांक कार्या

অর্থাৎ ধই। ছর্দ্দি এবং অভিদাব নাশক, অগ্নিকর, কফনালক, ব্লকর; ক্ষার এবং মধুর রস্বিশিক্ত, লঘ্পান্ধ, তৃষ্ণ। এবং মলনাশক।

लाखभाउन छन।

অর্থ ও থয়ের ও জা। তৃক্ষা, ছ'র্রু, দাহ, হর্ম এবং রোগয় / রক্ত পিত দাহ এবং জু রমা শক।

চিপিটক গুণ।

অর্থাৎ চিড়া ৷ গুরুলাক, স্লিগ্ধ স্তু হুণ, কফের বর্দ্ধনকর, ক্ষীরভাব জন্য বদকর, বায়ুনাশক এবং মদের সম্বভিকর।

নুতন তংগুল জ্বন। নতান্ত হজাং, দধুব-রসবিশিষ্ট এবং র হন।

পুর†তন তণ্ডল তাণ।

সন্ধানকর এবং মেহন শক।

অব্যের সংযোগ, সংস্থার এবং বিকার বিবেচনা পূর্বক, কিছা কারণ বিদ্তি হইয়। ভোক্তার অভিশ বানু সারে বল আবোর উৎপাদকত্ব হেছু
শাঞ্জ নু সারে ভক্ষাজবাদি নির্দ্ধেশ করা বিধেশ।

অনুপান বিজ্ঞান।

কেছ কেছ আলরস ত্যাগকরিয়া কেবল মগুররসে আসক্ত হন, কেছ কেছবা
শাল এবং মধুর উভরবিধ রসেই পরি তুপু লাভ করিয়া থাকেন। ইহাদিগের পথ্য বিবিধ প্রকার। শীতল এবং উফ জল, আসব এবং মদ্য,
মুষ, ফলাল এবং ধান, লি এবং হৃদ্ধ; এই সমস্ত বসের মধ্যে যাহার পক্ষে
যে অনুপান হিভকর হইবে, ব্যাধি, কাস এবং সেই সেই ভোজা নির্প্র পুর্বিক মারাস্থ্যারে ভাহাকে তাহাই প্রদান করা বাবছেয়। নির্মাল, এবং পরিকার পাত্রন্থিত সলিলই সমস্ত অনুপানের সধ্যে উৎরেট। লোকের জাথাবিধ ভোয়াত্মক সমুদায় রসই প্রান্ত প্রধা; অর্থাছ শৈশব কাল হইতে বাল-কাল অবধি সকল ব্যুক্তর বুলিকেই রসময়্ব অসুণান সেবন করাতেইটা

সমস্ত প্রকার তৈলাক্ত পদার্থ সেবনের প্রক্ষে উষ্ণ জ্বল জ্বপান ব্যব-জ্বো ক্ষেবল ভ্লাভক জ্বপাই তেলা এবং তুবরুক ক্ষেৎ সেবনের প্রক্ষে উহা বিধেয় নহে। কেহ কেহ তৈলাক্ত পদার্থ দেবনের প্রক্ষে ক্রেপান নি. ক্ষণ করেন।

মধূ ও সমন্তর্গ পিন্টার ভোজনের পক্ষে,— দ্ধি, পারস এবং মদ দাবা পীড়িত ব্যক্তিগনের পক্ষে এবং বেষপারী ব্যাক্তগনের প্রক্ষে, শীতুজ অল অনুপ্রব্যবস্থেয়।

কেছ কেহ পিটাল এবং শালী মূদ্য আদি ভোজনগারী ব্যক্তিগণের পক্ষে-শীলত জল, হুদ্দ অথবা মাংসের রস অত্পান ব্যবস্থা করেন!

● যুদ্ধ, পথ আন এবং আতিপ জনিত উন্পো এবং বিষ এবং মদ,জনিত বি বোগে,—মাষকলাই আদি অনুপান অথবা ধি,নালে কিল। দ্যিনত অনুপান প্রসিদ্ধ।

সকল প্রকার মাংদের গক্ষে, মন্পানাভান্ত অর্থাৎ মদ্যপায়ী ব্যক্তি-গানের পক্ষে মদ্যাই অনুপান এবং মদ্যগানে অন্ভিন্ত ব্যক্তিগনের বাকে শীতল সলিল অধ্বাফলাক গধ্য।

श्वभाकान्त পথ প্রান্ত ও অধিক কথে পাকখন এবং জীম্পার্গ ক্রিছ

সুরাক্রণ কিছা সূল ব্যক্তিগণের পক্ষে মধ্দক অর্থাৎ মধুর পান: শুন্ন-

নিরোগ ব্যক্তিগণের পক্ষে চিত্র স্বর্থাৎ চিতা পথা।
বায়ুপীড়িত ব্যক্তিগণের পক্ষে, স্লিম্ন স্থাচ উষ্ণ দ্রব্য পথা।
কফ্পীড়িত ব্যক্তিগণের পক্ষে, কৃষ্ণ স্থাচ শীতল দ্রব্য পথা।
পিত্রপীড়িত ব্যক্তিগণের পক্ষে, মধুব স্থাচ শীতল দ্রব্য পথা।
সক্ষেপিত্রোধাক্রান্ত ব্যক্তিগণের পক্ষে, দ্লুম্ব এবং ইফুরস পথা।
বিষ্ণীড়িত ব্যক্তিগণের পক্ষে, স্লেক্ স্বর্থাৎ স্থাক্ষদ, সেলু স্বর্থাৎ ক্রেম্বাল

वर्ज मञ्जूदर्व शृथकर चलुशान विङ्ख न

পুর্বেষ্ ক্রির এবং বদরাল ও বিদ্দের গক্ষে ধানাল সম্পর্কে এবদর।

জ্জহাল ও ধ্যজ অর্থাৎ মক.দশ আত পশুর মাংসের শক্তে পিশ্পনীর আসেব অন্নুপান বাবছেয়।

বিষিদ্ধ জান্তর মাধ্যের প্রেক্ত, কোল এবং বদরের স্থানব সভাগানি বিধেয়।

প্রাত্তন জন্তর মাংসের প্রেক্ত, - ক্ষীরেরকের আমের অন্তপান প্রানিজ।
গুরুষাপর জন্তর মাংসের প্রেক্ত, - থজ্জার এবং নারিকেলের অংসব অন্ত্রীপান বিধেয়।

প্রসহ জন্তর মাণ্ডের পক্ষে, — অধ্যান্ত্রার শাসব অন্থান ব্যবস্থাসিক। পর্নিম্বার মাণ্ডের পক্ষে, — ক্ষণান্তার অর্থাঃ সাজিনা রক্ষের আনব্ব

বিদেশর জন্তর মাংলার পক্তে, –ফস্নারের বাস্ব অন্পান বাবছের (একশক জন্তর মাংলের পক্তে, – তিফলার আমৰ অনুপান প্রযোজা। অনুদর্শক জন্তর মাংলের পক্তে, শদিরের অ্সব অনুপান বিধেয়। স্থানতর জন্তুনিবের মাংলের পাকে, – শৃলাটিক অর্থাৎ পানিকল এবং কমেককের অর্থাৎ কেন্তরের আসব অনুগান প্রযোজ্য।

কোশবাসী এবং পাদী অর্থাৎ ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র পদাবশিষ্ট জন্তব মাণদের পদে, পানীকল ও কেন্দ্রের আসব শহরান ব্যবদের।

প্রক্তি দিশের মাংদের পাকে, – ইকুরসের আসেব শ্রপান বিধেয়।
নিদ্যাত জন্তদিশের, মাংদের পাকে, – মুণালের, আসব শহপান
প্রাযেজ্যে।

সমুত্রজাত জন্তদিশের মাতের পালে, - মাতুর্জের জাসব জন্পান বাবতের।

শতাফলের পাক্ষে, – গাম এবং উৎপালন দের শাসর অন্পান। ক্ষাইফপের পাক্ষে, – দা তথা এবং বেজের আসের সন্থান – মুধুবফলের পাক্ষে, – তিক্টুবুজ কল্পের আসের সন্থান– তারফলাদির পাক্ষে – ধানাকে অনুপান–

কটুক অপাৰি কাল কলাদির পাচক,- দুকা। নল এবং বেভেরে আংসান আহুপান—

পিপ্রান্ত কলের প্রেছ - খ্রুড়া (শ্র্থং গোস্কুর।) এবং ক্স্কের বিশ্বং শ্রুজার স্থান -

ধুআত শান কলের পক্ষে—দাক্ষা (অর্থাৎ দাক্ষ্রিন্ডা) এব ক্রী-রের অংসব অহপান—

हाइ आ नित शास्त्र, - स्वार्भुत्र ब्यान्य अइतान -मधुक्षनो बानित शास्त्र, - मधाशक्षम् स्वत अ मव अस्थान -कोवको बानित शस्त्र, - शुःक्षं क ब्यूशान -कुळ्खनारकत शरक, - शुःक्षं क ब्यूगान -

তাল মন্তকাদির পাক্ষা, (জ্বাৎ ডাল খজ্জা আদির মাধির পাক্ষে) তাল কলের আসব অত্থান – *

লৈশ্ববাদির পক্ষে, – মুরাদ্য এবং ক্রাঞ্জক অন্থান – লক্ষ দ্রবাের পক্ষে জালই অন্থান বাবস্থেয়।

সমত ক্মুপানের মধে সুর্তির জলই সর্বোৎকৃষ্ট, যাহার প্রক্রেজ্য হিতকর তাহার পক্ষে সেই জলই ব্যবস্থেয় !

ৰাত এবং ক্রে - উষ্ণ জল এবং শিভাও রজে শীতল লগ প্রাধ্য

আহারদোষ বিশিষ্ট (অর্থাৎ গুরু কিন্তা পরিনিতই টুউক) ক্ষিত অন্পানের ছারা সেই ভূক্তার সহজেই পরিপাক হইলা থাকি। অনুপান• সম্যকরপে সেবিত হইলে কচির বৃংহণ, বৃষ্য, দেবে সংঘাতের ভেদক, ভৃত্তিকর, মার্দ্দবকর, শ্রম, এবং ক্লম্ম, অ্থজনক, অন্নিকর, দোবের শান্তিকর, অত্যন্ত পিপাসার শান্তিকর, বদকর এবং বর্ণকর হর।

অনুপান পুরের পীত হইলে শরীর কষিত করিয়া থাকে, মধ্যে সেবিত ছইলে সমতাবে থাকে এবং পশ্চাৎ পান করিশে বর্ষন করিয়া থাকে। এ কারন বিশেষরূপ বিবেচনা পুর্বক অনুপান প্রয়োগ করা বিধেয়।

যে সকল ব্যক্তি দ্রবাপদার্থ পান করে না, সেই সকল ব্যক্তির অন জরিন্ন, ছি:তু প্রাপ্ত এলং পীড়া জনক হইনা থাকে, একারণ অনুপান সেবন করা কর্ত্তব্য।

খাস এবং কাস রোগাজান্ত বাজির পক্ষে এবং জ্ঞান জ্ঞান স্কল্প এবং কল্ফের সন্ধি খানের, উর্জভাগ গতরোগ,— অনুপান সেবন বর্ত্তব্য নছে।

ক্ষতোরস ব্যক্তি প্রসেকী এবং যাহার স্বর ওল হইরাছে এইরূপ রোগী ক্রান্ত ব্যক্তির পক্ষে অনুপান অবিধেয়।

জনুপান সেবন বরিয়। পথ জমণ, জাধিককথোপকথন জাধারন, গান এবং নিজা অবিধেয়। নিষিধের অনাতর হইলে সেই জনুপান কণ্ঠ এবং বৃক্ষাস্থলে থাকিয়া আমাশায়কে দূমিত করে এবং কম্পা, জায়ির জাব্যলাত। ছার্দি, অর্থাং ব্যান আদি বিবিধ বোগ উৎপার্থন করে।

যে সমন্ত ব্যক্তি স্কুক্ষার বিলাসী, এবং চিরস্থাভান্ত, সেই সকল ব্যক্তি পরিশ্রমিক কার্যোনিশ্রিক্তা জন্য মন্দাগ্নি এবং রোগাজ্ঞান্ত হয়। একারণ কোনু কোনু জব্য জন্মণাক এবং কোনু কোনু জব্য লঘুপাক ইহা বিশেষ্তক্রপে জ্ঞাত হইরা স্বভাব, সংস্থার মাত্রা এবং কালানুসারে অনুপান ব্যবস্থা
করা ভাহাদিশের পাক্ষে বিশেষ রিধের। কুনিন্ত যে সমন্ত ব্যক্তি বলিষ্ঠ
পরিশ্রমী; দীপ্তাগ্নি বিশিষ্ট এবং শ্র অর্থাৎ কঠিন জব্য ভক্ষণ পূর্রক
কালাভিপাত করে, সেই সমন্ত ব্যক্তির পাক্ষ আহারীয় জবোর গুক্স
কি শুদ্ধ বিবেচনা করিয়া জনপান সেবনের কোনু প্রয়োজন নাই,।

সরাত্মপান বর্জ বিজ্ঞান।

বিশ্বত জ্ঞানপূর্ণ আয়তন গিলিন্ট, এবং গবিত্র এমত কছানদ (অর্ধাৎ পাকলালা) প্রস্তুত করা বিধেয়। বিশ্বত লোক বর্ত্ত উত্তম এবং বিবিধ গুণ বিশিষ্ট ভক্ষা আর প্রাক করাইয়া আতি পবিত্র স্থানে অতি গোপনে সেই জন্ম সংস্থাপন করিতে হইবে, তৎপর সেই সিন্ধান্তে বিষয় উষধ স্পর্শ করাইয়া ভাহার বিষনাল করত, তালরত হারা বীজ্ঞানতর ভাহাতে জ্লা প্রোক্ষণ কবিবে; পশ্চাত সিন্ধান্ত দারা অর্থাৎ ভন্তপাত্রেগক্ত সিন্ধানি চক্রন্থিত সাধক নামের আন্যাকর যুক্ত মন্ত্র হারা পুত করিয়া আহার করিবে।

পরিবেশন পাতা ভিত্তান,

কাফ নিসে কর্থাৎ মনিমর পাত্রে ম্বচ, - রজ্বনার-পাত্রে প নায় দ্রব্যা হিন্দ্র পাত্রে, ফল সমূহ এবং অপথ তজ্জদ্রব্য সকল, - স্থ্রবর্মর পাত্রে পরিশুক এবং প্রদিরে (অর্থাৎ প্রলিশু) দ্রব্য সমূহ - রজ্বত পাত্রে, প্রদ্রে অর্থাৎ কর্তর প্র রসময় পদ র্থ সকল, - প্রাপ্তবময় পাত্রে, - কটার (অর্থাৎ তক্রে, দ্যার স্ব এবং ব্যঞ্জন) এবং বড় কর্থাৎ পানীয় বিশেস - ভাজমুয় পাত্রে, স্পীতল এবং স্থান ছু মুম্মর অথবা কাংচ কিন্তা স্ফটিকময় শীতল ও স্থান পাত্রে, পানায় জল পানক (অর্থাৎ গুড়মগ্রু এবং শক্রাদির পানা) এবং মহা - বৈত্র্যাময় পাত্রে, - রাগ্য ড্রে, এবং সদৃক আর্থান পাল্রেণ সমুগ্রু নির্মাণ ভাল্তিণ মনোরমপাত্রে, - স্থাপদন (অর্থাৎ স্থামিশ্রে স্বান্ত্র মরা এবং স্বান্ত্র স্থামিশ পাত্রি স্থামিশ পাত্রি, - রাগ্য ড্রে, এবং সদৃক

ফল এবং অপর ভক্ষা এব্য সকল ভোজন কর্তার দক্ষিণ পাশে এবং প্রান্তব্য রসঃ পানীয়, লাক, হস্ত, পভ্যুদ, এবং অগর পের এবা, সমূহ বামপাশে সাজাইয়ঃ দিবে সক্ষিধ গুড়জাত ধাদু এব্য রাথবাড়ব এবং, শটক (অর্থাং মৃত এবং জ নিশ্রেত শালী চূর্ব) আদি সম্মুখে কিমা দক্ষিণ বুলু এই উভ্যের মধ্যে সাজাইয়া দিবে। মনোরমা শুভজনক। পবিতা, জনতার হিত এবং রিগ ী পুষ্প ভূষি।
সমতল ছানে ভেজা উপবেশন করিয়া স্থাংজ্ত হু স গ্নমত বিশুদ্ধ
না অংহান্ত শীতল না অংহান্ত উষ্ণ সদ্য প্র হিতকর আহারীয় দ্রাংভাজঃ
করিবে।

মধুর বদবিশিষ্ট জবা সমূহ শত্রা, আন এবং চুবন রসবিশিষ্ট জবা সুবন্ধ মধ্যে এবং অবশিষ্ঠ জবাদি পরিশেষে ভোজা করিবে।

দা ডিংখাদি কল সকল অতিয়ে ভেলান করিয়া তৎপর পানীয় সেকল সেবেন করিবে, ত প্রে বিৰিধি ভেলা ভোজন করা কর্তিয়া।

মলভেদে গড় প্র'র্থ সমূহ আতো ভোজন করা বর্ত্রা। ভোজনের প্রায়েষ্টে মধ্যে এবং শেষেই হউক ফলের মধ্যে অ'্ডাক্র, দেধিয়, আন্মলক কলভোজন করা বাবভেয়।

মুণ'ল, বিসি, শালু, কল্প এবং ইফু শ্মাদি আংহারের আংগ্র ভোজান ক্রিবে, আহোর সমাপ্ত হইলে এ সকল সেবন করা অবিধিয়।

ক্ষুণার্ভ্ত বংক্তি যথাসময়ে উচ্চ সানে সমভাবে স্থু উপ্রিষ্ট ইটারা মালাদি বিবেদনা করভঃ আপেন প্রাকৃতির তাসাদ, স্মিন্ধ, জিবপ্রধান লগু এবং উষ্ণ দ্রবা সমূহ শীল্প শীল্প জোভন কবিবে। এরপ কল যথাকালে স্কৃতি ইটাল তৃত্তিকের ইটার থাকে একা ভেলার প্রীজ্ঞাকর হল্প।

্ শ্যু জৰ্ম হুত্ত্ব,র পরিপাক হইয়া থাকে। স্থিত্ত এবং উষ্ণ এবং বলকর এবং অগ্নির।

শীত্র শীঘ ভাজন কলিলে ভূতার সমকালেই পরিপাক হইলা থাকে। রোগাহীন, জবপ্রবিদ্যালা সমূহ স্থাংগ জার্ম এবং ম জাত্সারে ক্রি সেবন করিলে ধাতুর সমতা বিধান হইলাখাকৈ।

আহারের সময় নিরূপণ।

বৈ যে ঋতুতে রাত্রি অভান্ত দীর্ঘ অর্থান্ত হয়, সেই দেই ঋতুতে ঋতুদোৰ মোলতের উপথে গী ভেজন এব্য প্রতিভালে ভোজন করা কর্ত্বা, যে যে ঋতুতে দিবা অভান্ত দীর্ঘ হয়, সেই মেই ঋতুতে তথকালে উপটোনী ছেজো এলাতামূহ অপরাতে ভোজন করা রিধের। যে য়ে শুতুতে দিবারাত্র সমত্যা হইয়া ত্যকালে দিবাগিত সমান বিভাগ করিয়া

অপ্রাপ্ত কালে অর্থাং ফুলা ক্রার মত্রে এবং স্থাত কালে অর্থাং ভোজনের সময় অহাত হইলে, ভোজন করা বিধেয় নছে। অপ্রাণ কালে শরীর লঘু হয় না, তংকালে ভোজন করিলে নানারণা পীড়া উৎপন্ন হয়। এমত কি ভাষাতে মৃত্যুত উপস্থিত হইয়া থাকে। অতীতকালে যঠরানল বায়ুবারা স্থাচ্চন্ন থাকে, ভংকালে আছার করিলে ভূজান মৃত্যুত করেই পরিপাক হন্ন এবং দিতীরবার ভোজনের প্রশ্লাস থাকে না। — ভাৎপ্র্যার্থা, বথা সম্য অর্থাৎ ক্লুধার সম্যেই ভোজন করিবে।

আহার করণের দিক নিরূপণ।

পূর্বিমূপে বিসমা আহার কবিলে প্রমায়ু রুদ্ধি, দক্ষিণে যণ লাভ।
প্রিমায়ে বিষয়ে।

আহারের পরিমাণ।

অপ্ল অথবা অধিক পরিমাণে ভোজন করা বিধি নছে। পরিমিত্ত
আহারই বিধের। অপ্পাণরিমাণে আহার কবিলে অসভোষ উৎপন্ন এবং
বীলক্ষর হইরা থাকে। অধিক পরিমাণে ভোলন করিলো আলস্য জন্মের
শারীর ভার হর, আটোপ অর্থাৎ বায়ু জন্য উদর আগ্রাত হয় এবং শারীর
অবসন্ন হইরা থাকে।

ছই ভাগ পর এবং এক ভারা পানার পান করিয়া বার্ষ্ট্রপ্লরনের প্রীন্য উন্তর মধ্যে এক ভাগ ক্ষুর রাখিলে পরিমিত শাহার বলা যায়।

দিব'রাত্রির সময় এবং দেবাদি বিভাগ করিছা এই সমূহে দোঘ রহিত।
ুপুর্বের ক্ত গুণবিশিষ্ট সুংস্কৃত অন্ন স্থোজন করাই কর্তব্য।

. পরিভাজা অনু।

নিঃসার, দোষবিশিন্ত, উদ্ভিষ্ট, পাষাণ, তুন অথবা লোক যুক্ত দিক (অথিং যে অনে হ্নাজ ছেম) প্রুক্তিত, আছ্-রস্থীন এবং হর্মন্ত মূক পরিত্যাগ করিবে। অধিক সিল্ল অথবা সিদ্ধ, অভ্যন্ত তফ, এবুং উপদ্ধ (অর্থাৎ আঁকা) এবং আহ্রস রহিত অন পরিত্যজা জানিব। শীত্র অনকে বিভীয়বার উষ্ণ করির ডিডাজন করিবেন।

আছারের বিধি।

আহার করিতে বসিয়া উত্তরোভর আহ্তর জহা ভেজিন করিতে হয়। আছার করিতে করিতে পুন: পুনঃ মুখ প্রকালন করা কর্তব্য, যেহেতু জিহবা বিভন্ন ছইলে আলে উত্তৰ কচি জামে এবং প্রথম এক প্রাকার, স্বাহ্যারা জিহবা তর্পিত হইলে, অন্যরপ ফ্রব্যের আস্থাদন, উত্তমরূপে উপলব্ধি হয় भा। अस, - चात्र इहेटन, - श्रिष्ठा, तन, भूकि, उरमाइ, हर्य वतर सूथ छर-পার হয়, অস্বাত্র হইলে ভাহার বিপরীত হইয়া উঠে-এক্বার যে দ্রুষা আহাব করিয়া পুনর্বার সেই দ্রবা ভোজন করিতে ইচ্ছা জ্ঞান্যে, তাহাকেই স্থাত ভোজন বলে। ভোজনের মধ্যে মধ্যে এবং আছারাতে জল পান করা বিধেয়।

আচমন বিধি।

আচমনের সময়ে দন্তের সন্তর্গত অলাদি অপে কম্পে বহিগতি কর ৰৰ্ভবা। ভাছা না করিলে মুখে তুৰ্গন্ধ উৎপন্ন হইনা থাকে।

आहात कतित्व करू कीर्य रहेता, यांश विषक्ष हहेता, शिक्ष तिक हम। ভোজন না করিলে লেখার শান্তি ছইয়া থাকে।

আহারান্তে মুখ সংশোধন বিধি।

খুমের ছারা অথবা ক্যার ক্টু এবং ভিক্তরসের ছারা কিছা কজোল, কর্প ধাৰক এবং অমন: ফলের সহিত অধ্যা ক্যার কটু এবং ভিক্ত মুখ-সংশোধনকর রদের সহিত অগন্ধ তাব্লপাত সেবনের ছারা ছুখ সংখোধন क्रां विद्यम् ।

क श्रुम खन। '

यूष(भावनांभक ववः चूकीर्वकत्रः

खनाक खन। ____

एक छराक, - अधिकन। कवाब, मधूत वादः माद्रक। की हा छराक, कक, अली नित्र, अधिनामक अवर मानक।

ভাস্ব লগত গুণ।
ভীক্ষা, উষ্ণা, কটু, কক এবং বাজনাশক, পিছকর, প্রায়িদীশক এবং কে ফি-*** 4 7 1**

कृत्वत खन।

কল, বায়ু এবং মেধনাশক। শশ্চুন, কটু, শার, উষ্ণ এবং কৃদ্ধি-নাশক।

খদির গুণ।

कुर्छ, 'विमर्गद्रांभ, त्यह अवर क्कि शिख्य।

মোটা এলাইচ গুণ।

भूत, रक्षां श्रेतक, इ कि अवर ककवाश्वना नक।

नरम खन ।

উদরকস্পা, आमिट्रांग এবং শুनश्च ; शाहक ७ लघुशाक।

कत्रिजी खन।

সমু, তৃকা, প্লানি এবং ছগদ্ধনাশক। কপুরি গুণ।

সারর, শীঙ্ল, চক্ষের হিডকারী এবং কফনাশক। নসলাদিয়ুক্ত তায়ুল ওণ।

কটু, ভিক্ত, উন্নঃ, দধুর, ছাবর, কার: কবার, বাতয়, রুমিনাশক, কলপ ব্লিকর, জ্ঞাসভাবনের ভূষণ, রভিকর এবং হুংথ বি, জ্লক। তামুলের এই জ্বোদশ ওণ সাছে।

আহারান্তে কর্ত্তব্য কর্ম।

আছার করিয়া ভোজনের প্রামকাল আব্ধি রাজ্যবং অর্থাং অচ্ছন্দে বসিয়া থাকিবে। তংশর শতপদ গ্রমন করিয়া বাদপাথে শিয়ন করিবে।

শারীরক নিয়গ।

ভূক্ত-ব্যক্তি, ইছামত শব্দ পার্শ, রূপ, রুস এবং গন্ধ সেবন করিবেন।। অপ্রিরজনক শব্দ, স্পার্শ রূপ, রুস এবং গান্ধ সেবন করিলে অর্থবা ক্ষাচ আন ভে'জত করিলে, কিষো, অতিশয় হাস্য করিলে বদন হয়।

া ন্ত্ৰ-প্রধান এই (অর্থাৎ দ্রবন্তব্য হইতে অন্নের পাক প্রধিক তপ্প)
আহার করিয়া শহন কিছা উপবেশন করা বিধেয় নহে।

আহার করিয়া তৎপরেই অগ্নি অথবা আতপ সেবন কিমা স্তরণ কি বানবাহনের দারা গমন করিবেনা।

শাক, নিক্ট কর এবং অলংস ভোজন করা বিধি নহে।

ু একবারে কেবল একটা রুস কিখা একত্তে সমুদায় রুস সেবন করা বর্ত্তবঃ নছে।

একবারে আছার করিয়া অগ্নির দীপ্তি না হইলে পুনক্ষার জনগ্রহণ করিবেনা।

ভূক্তার বিদ্ধা ছইলে (অর্থাৎ অসরস হইয়া গলা জলিয়া) অহি-নাশহয়।

কঠিন দ্রব্য অধিক পরিমাণে আহার করা কর্ত্তব্য নহে।

পিঠান ভোজন করিবে না অথবা অপ পরিমানে আছার করিয়া দিওণ অলপান করিবে তাহা হইলে সহজেই পরিপাক হইবে)

ে পেয় লেছ্য চুষা, এবং চর্মা; এই চারিপ্রাক।র আহার উত্তরোক্তর অফ্তর।

গুক্পাক দ্রব্য অর্জ পরিমানে এবং লঘু দ্রব্য সম্পূর্ণ পরিমানে ভে:জন করা বিধেয়।

আঁত্রান্ত তর্ল জঁব-জবোই কোন পরিমাণই ক্রকপাক হয় না। জবপ্রধান শুক্র হইলে সমাক রূপ আহার করিলে বিকল হয় না।

ব্দত্যত শুক্ষ ব্যাল আন্তান্ত ছইলেগ ও উত্তম পরিপাক হয় না।

পিশুক্ত অথবা অসমাক রূপে রিম হইলে জর বিদ্যু ছইয়া থাকে। কিছা পরিপাক সময়ে জনবাহীপথে (অর্থাছ) যে পথের ছারা জঠর মধ্যে জন প্রবিফ হয়) পিত থাকিলে, কিছা অপর কোন প্রকার বিদাহি জন আহার করিলে জন বিদ্যু হয়।

एक, विषय, এবং विकेखी, (अर्थाष धेंकशांक) जातत्र पाता मधि नाम स्त्र। जाश्वर विषय এवং विकेक ज्ञ, - वाक, विक এव हिल्ला मध्यारिश जाने (त्रशि छेंश्रांमन कृतिहार थाटक। শ্বিক জলগান করিলে, অকালে আহার করিলে, মূল মূত্রের বেগ ধারণ করিলে, পুথবা সময়ে নিজা না হইলে, লঘু এবং আভাবিক ভক্ষা জয় খোকালে আহার করিলেও পরিপাক হয় না।

কর্ষা, আছল, অথবা ক্রোধ উৎপন্ন ছইলে; লোভে, রোগ কিছা দিন্য চার দারা প্রীভিত থাকিলে, তান ,বিদেষ জামিলে, তাল স্থাক রাপে পারি-গাক হর না।

ভূক্ত- জন মাধ্য্য ভাবাপন হইলে আম, এবং জন ভাবপের ছইলে বিদগ্ধ বলা যায়।

ভূক্ত-অন্ন কিঞ্চিৎ পাক হইরা যদি অতান্ত তোদ এবং শুল সহকারে বিফলৈ হয়, তাহা বন্ধ এবং কুপিত বায়ুর কার্যা। তংকালে উদ্ধার শুলি হই-লেও (অর্থাৎ উদ্ধারে কোনরূপ গল কিছা রস না থাকিলেও) যাবং হাদর দেশের,ভার থাকে, তাবং আহারে কচি জ্পান না।

পাকতলীর অবশিষ্ট রস কর্তৃক নাসিকা দারা ক্ষত্রাব সহকারে যে অজনি দোষ উৎপন্ন হয়, তাহাকে চতুর্থ প্রকার অজনি বলে। অর্থাৎ কোননেপে পরিপাকের বিলয় ব্যাখাত ঘটিয়া বায়ুব কুপিত হইলে, যাবৎ অন্ন নের দারা পাকছলী ভার থাকে, তাবং দেই কুপিত বয়ে পাকছলীতে , কভীবে ছিতি করে। পাকছলীর প্রান্ধ সমুদান্ত রস শরীরে সঞ্চালিত হই। র পার, সেই কুলিতবায়ু অবশিষ্ট রস এহন করিয়া উর্জ্ঞানী হইলা মুখ
নবং নাসিক। হইতে আপ্রাব জ্যান। ইহাকে সাধারনে পেটয়ার্ম, বলে।
নুছ্র্ন, প্রলাপ, বম্নেছ্র্ন, প্রস্কে, মুবং শরীরের অব্দন্ত্রা, জ্জীর্মের দার্মী
নই সমন্ত উপদ্রব এবং মৃত্তুত উপদ্বিত্বর।

আম,— অজীব হইলে শুজ্বন, এবং বিদগ্ধ ছইলে বসন এবং বিষ্ঠন্ধ ছইয়া।

शूट्य क व्यविषये तमदात्र। व्यक्तीत छेरला इहेटन भवन कतिया थाकित्त, धरः भवनाक छेक कम स्मर्यन केतु व्यवस्था विषय अवस्थातर व्याद्धाना छ मा इहेट्य जावर व्यवस्थ थाका है कर्तवा।

যে পর্যান্ত শরীর শলু এবং প্রাকৃতিছ না হইবে ভাবৎ আহার করিবে না। হিভাহিত বিবেচনা পূর্মক আহার করিলে ''সমশন, কছে আধিক হন্তুক শর্থবা শুপু হউকু অকালে আহার করিলে ''বিষ্মাশন, কুছে এবং পুঁক্ত জব্য পরিপাক না ছইতে আছার করিলে "অধ্যাশন, কছে। এই জিবিশ্ব অহিতাচারের ছারাই জাবন মফ এবং বিবিধ রোগ উৎপর হিল।

আয় বিদয় হই ল, — শীতণ সলীল দেবন করিলে পরিপাক হইয় থাকে।
শীতপতারভারা পিত বস্ট হয় এবং অয় ঈবৎ ক্লিয় হইয়া অংধাদিকে
গামন করে।

আহার করিব। মাত্রে হৃদর কণ্ঠ এবং গ্লদেশ জালিলে,—ফাক্ষা এবং ছারতকী কিন্তা মধু এবং ছারতকী লেহন করা বিধের।

বিষ বলিষ্ঠ ব্যক্তির অজীণ হইবার আসক্ষা জিমিলে,—প্রাভঃকানে অথবা আহারত্তে, শুঠী এবং অভয়া হরিত্বী জক্ষণ করা বিধেয়।

শৃপা বিবিদ্ধিত অপ্তর্ম দোষ লীন হইরা থাকে, তাহাতে অগ্নির পা শারত হর নাঃ তৎকালে অজীনে ফুগাও জামে; সেই ফুগা শৃপার্ণি ব্যাক্ত বুঝাত না পারিলে তাহার পক্ষে বিষ্ঠিম হইরাথাকে।

मनविध प्तवाखरनत किया।

- ১ শৈত্যগুণ দারা, জ্লাদন, অস্তন, এবং মুক্ত্রি, তৃক্ষা, ও দাহের উপিছ
- ২ উক্ষঞ্পৰার।, এই সমূহের বিপরীত ক্রিরা উৎপন্ন হয়। অধি। ইহা পাগন।
 - ৩ স্মিগ্ন ৪৭, স্মেহ, এবং মাদ বিকর, বলকর ও বর্ণকর।
 - ৪ কক গুন, ইহার বিপরীত বিশেষ্ত হুজুন এবং ধর।
 - পিচ্ছিল গুণ, –জীবনীয়, বলকর, সন্ধ;নকর শ্লেমাল এবং ওক।
 - छ विभव्द छन, हेश्र विश्वीष अवः क्रिप्र स्मायक । त्रार्थन कत्र।
 - । ৭ তীক্তণ, দাহ, পাক, এবং, আআবকুর'।
 - ৮ মৃহ্ওণ, ইহার বিশরীত।
- ⇒ গুৰুত্ব গুনের ছারা, আ সরতা, উপলেপ, বল, ভৃথি এবং উহুপ্র হয়।
 - ঃ । লঘ্রুণ, ইহার বিপরীত, এবং লেখনকুর ও রোপ্নকর।

দশবিধ দ্রবদ্বেরর ক্রিরা।

- 3 । जर, (लपकत्र)
- १। मां का, कुन, এरः रक्षनकत्र।
- ্। শ্লম্প, লিছিলের বন গুণকি শিষ্ঠ।
- ৪। কর্মশ, পুরেশাক্ত বিশ্বের স্থ গুণ বিশিষ্ঠ, খুখাত্রকী এবং কু।
 - ४। ज्ञान्त, -क्तिकत् अवः भ्रञ् ।
- ৬। হর্গস্কা, ইংগর বিপারীত এবং হুলাস, অফ্টিকর, সারক, অফ্লেম ারক, সদকর, এবং মাত্রার পাক্ষে মজলকর।
 - ৭। ব্রেষ্ট্রী, সমূদায় দেহ বাপ্ত হইয়া পাক করে।
- ৮। প্রিকাসী, প্রফুলভা সম্পাদনপূর্বক ধাহুর বন্ধন সমুদায় শিধিল চরে।
- ৯। আশুকারী, ক্রতগামী জন্য জলস্থ ভিল সম দেহে সভ্রেই ব্যাপ্ত
 - .২০। হক্ষ ৪৭, হক্ষা গ জনা হক্ষা শিরাতে গমন করে।

আহাবের গতি নিশ্চর।

পঞ্চভূত্মাক দহে পাক ভেতিক আহার পঞ্চরপে পরিপাক হ**ইরা।** দর্থাৎ বায়ু পিতে, কফ, মল এবং মূত্র; এই প**দ প্র**কারে পরিনত হইরা। গ নীরন্থ স্বীয় স্থায় গুন বরিয়া থাকে।

ক্ষ এবং পিও অবিদ্ধা এবং বায়ু বিদ্ধা; আহার সমাক্ষণে পরিপাক বা নিঃস'র হইলে (অর্থাৎ ভূক্ত দ্রব্য হইতে সমুদায় সারাংশ নিস্ত ইলেণ) শরীর পুঠি হয় া

আহারের মদ ভাগ, – বিষ্ঠা এবং মুত্র, এবং সার ভাগ পুর্বের বৃলা,
নাছে।

েনেই সারাংশ ব্যান বায়ু ছারা বিক্লিও ইইরা সমুদার ধাতু পোৰন করিয়া। কে।

कुक, शिक, भन,, त्यन, नथ, द्राभ, এवः निव्यन, अवर प्रकन्न (यह, धर्ने भन्धि किमायदा नकरात्र मुनक्कानित्य।

আকারাদি ভেদে দ্রব্তুণ।

শন্তমূল। ধারক, রক্ত[ি]তিয়, এবং দীতল।

व्यवसां छा । विषयां विषय क्षेमा निष्

আজ্জ ক । পাকে কটু, মধুর রস বিশিষ্ট, কক-ব গ্লুব শান্তিকর, পাচক এবং কণ্ঠশোধন কর।

আজ্জুনকাপ্ট। ক্ষরেরোগে, ভয়রোগে, রক্তন্তর এবং মৃত্যুদ্রোগে হিচকর;

অঠবর্গ। বায়ুনাশকঃ বলেব হিত্রপারী ধাতু পুটিকর।

আৰ্নদ ক'চা। ক্ৰমি, অৰ্শ এবং ৰক্ষ ও তীক্ষু।

ष्पा इहे । श हक, डिल्, धारक जवः (म रश ।

আদা। কফ এবং বায়ুনালক।

শাপাং। অগ্নি সম ত কু, নিদ্রাকারক এবং স্বপ্রদারক।

कामना थाड़ शृशिकतः भीडवीर्याः कामनाड्यः, यसन तम कर्यः एक झामत क्यामिएडः, भएषा এবং অংফ সেখন कतिस्न मकन एम'स सक्षे ६सः। खेटात वीक्रभमाः - मस्टश्क्रमक अवश् क्यामनात पृण्यः -ध्यः विभिक्ते।

বাসন। কফ পিতে।

ইন্দ্ৰব। স্থা, এবং রক্তাপ্ত নাশক।

मेरलां कता। कुछ धर खनानि नामक।

উयक्तात्र। উष्ठः, अवः वाज्यः ; श्राह्मिनी अवः वननानकः

এরওমুগ। পূণয়, ধাতৃপুষ্টিকর এবং ঘলনাপক।

এশাইচ। (মোটা এলাইচ) খুন নদকোষ্ঠ, ড্ঞা, ছর্লি এবং কর্ম ব নাশ্র। (ছোটএল.ইচ) ভীক্ষা, উষ্ণা, কট্পার, কচিকর কিন্তু এব শ্রির বর্থনকর।

अस्ति नवन नव्, जीक्षु देशः, स्ट्राहिन, श्का, श्राह्य शृश्काम कर विर क्ट्राबदर नकात।

় কটকী। সারক, কক, ৰফ ও পিতছ। (শ্নো। ট) হিগু, বটু, ল এব তৃষ্ণানাশক।

कृष्टेश्ती । हक, राष्ट्र, वदर थान कामह।

कनका क्षेक्य, श्लानकत्र, जेसून, उष्टान वर मारक।

करेखा कृषि, कुष्ठे धरा श्वास नीनक।

करङ्ग्ल। কুঠ, গুলা উদरী, এবং আশ বোগা ; গবিণাকে কটু এবং কৃষি ও প্রাধের প্রাধের শান্তিকর।

करवी। कुर्छ अदर उन्हाम न'नाक।

কপুরি। ভিত্ত বদ বিশিষ্ট, প্রতিজ্ঞ শীঙ্গ, লহুপ্কি জিলোসা স্প্র শোল্য এক মুখের বিরুস্ভা জামিলো বিশেষ ভিত্তক্র ।

कारमा। स्कित्म विभिन्ने।

ন কৰে ৭। ক্লেডিকিয়া, ক্ষণ্য, লঘু এব তুন্তী, মেন্স, ছাং স্থাসন কাস্য এবং অক্তিৰ শান্তিকর।

काकर ए अभी। क्या, वर्ध, धाम, काम, खुद्र द्वर दि । नामतः।

লাকমাছি। ঈষ্ম হৈছে, বটু, মিলোম্চ ক্ষিক উঠ্চ এব। জ্বাচিক নীচিল্ নাহে এবং কুঠ্যাশ্ৰু

কাশকাই দল ত্রাস্ব শা এনকর। তাচে দ্রা ১ ধ্রবত হতিও এবং পিশ্রম

The set of the second of the second control

ভূদা কল, বাচ, ধান এব 😘 চ

কুলনপালী বিবিধি এবং পোলি আগতি বিজ্ঞানি আহোর। জুলা জনকব।

কুত্তি। শাস, কাস এবং বিবরোগাদি নাশ্র ক্ষ্য কলিও, জুল দেব অর্থা এবং অতিসার নাশক।

কুলেখাড়া। আমবাত, এবং বায়ু-রক্তদোশ্র।

'कू लहत । कक्ष, अत[्] महम् (खत् ग्राक्षेत्रकर्ता।

रक्**छत्र।** अक्ल क, तिकेखि, धनः भौडल।

क्लिश्रहा। इन्दराध्यत मर्ग छनकत এরং भग्नि त्र किक्द्र।

धनीत्र। कुर्फ, विमश्दान, त्मर, धवर कक शिख्य।

राष्ट्रिश्ला । शिश्लमीयून मम धनकंद्र धनः यादक।

गज़गरज़। यश्वर, जिला।

, গনিরারি। শো্থয়, বায়ুবিকারে হিতকারী।

গালারিক্র। ধারক, মুধুরা, ভিক্তবস, ওক্পাক, কেশের ছিডকারী। । সাত্রস পাবজ, দাভিল এবং দাহ এবং বায়ুনাপক। गाखदिम्न। केला।

छन्छन। ज्ञात्रकारा।

खडा। कुछ छ उनमा भक।

গুটিকালবন। কফ, বাষু এবং ক্ষির শাৃতিকর লেখন কর পিৃতি প্রকোপুণ কর, অগ্নিকর, পাচক, এবং ভেদক।

शुफ्कामाई। (कांकमाछि (प्रथ)

গুড়ত্বক। কফ বায়ুনাশক, শুক্র এবং আমবাতয়. এবং কটু।

গুলগ। ধাবক, বলেব হিতকারী এবং ত্রিদোষয়।

গোৰক্চাত্ৰে। (বিজেনা দেশ মূনক জ বনং কীনবোগো-বিশেষ বিভক্ত গোক্ষ্মী। মূৰবজ্ঞ এবং বায়ুনাশক, বান্ত হিছকামী এবং ধাতু গুলী কব। খোড়া নিম: ধাৰত, ক্যায়াল্জ এবং শীত্ৰা।

ধোশাক্ষ। অসনাশক (প্রুষ্ট্রেল) প্রিক্ত এক ভীক্ষ্ণ ও এণ-বিজ্যোট-কাদি নাশক।

স্তকুমারি। কলায় তিজা শংখার যাজি, সভালিতিয়ে, কজনাশাক, কায়ু কর্ম করে, সংআহী, একি ল্লা

इहै। (शिक्शनो (मर्थ) अवर धोन्नक।

চাকুন্দা। সোমরাজ দেখ। এবং গুলা, মর্শ ও উদরবোগনাশক, এবং

চাচ্ছেবি। এছনী ও অর্শরোগের শান্তিশর, উক্ত, ক্রার, মধুর, অগ্নিরন; এবং অলার্স ইইলে বাভগোলার শান্তিকর।

চিভামূল। পাকে অগ্নি তুলা, শোখ, ক্ষমি কুষ্ঠ এবং অর্শনাশক।

চিরাতা। বায়ু রুদ্দিকর, কক্ষ এব[°] কফ, পিন্ত ও জ্বুব নাশক।

চুদ। কফ, বায়ু এবং মেদনাশক। শস্কুর্ - কুর্ছ, বিস্পর্যোগ, মেহ, এবং কফ পিত্তয়:

চোরপাশিতা। কফ, বায়ু শোধ, মেছ, ক্মিনাশক।

চ্ছগলান্ত্রী। কষার, তিক্ত অর্থচ আছ়। রক্ত-পিতার কচ্ছ, বায়ুবর্ধন কর. সংগ্রাহী এবং নদু।

জীরন্তী। মল-মূত্র জুনক, সক্ষার, মধুর, অংপা বাতভালার প্রকাপকর। এবং রক্ত িত্তর।

ি জারিতী,। তিতে, কটু, কফস্ব, লয়ু- ভৃষ্ণ(নাশক, এবং সুখের লেদ এবং হুগান অংশক। लकात्रका विज्ञानिम छन्विनिष्टे।

'জিরা। ক্রক, কচিকর, কদ এবং বায়ুনাশক, পাকে কটু, তীকু 'ষ্টু লবু এবং পিতালি র্দ্ধিকর। ক্রাজনা, কটু, তীক্ষ্ণ, উষ্ণ, জামন্ন বিং জেলান,শক,

भूविको चाम कामरतारधर, ७ विवृक्त क,तक।

জৈ।ঠমসু। স্বারের নিরাজনর, এবং রক্তপিত ও ব্রন্দাশক।

টালক্ষার। কক্ষ্ণ, শারুবান্তনভর, শ্রেখানাশক্ষ্য বিভ এবং শ্রেমির ও শীক্ষ্ণ তার্থন কোনা। কাস, শাল রোগে হিডকর, শার্মর, ধাতুপ্তিধর, ইন্তব্য অধ্যার রাল্যাক।

^क दा। कर व्रवस्ता वित्यक्ते, भारत, त्यश्चनकत, भौकन धवः माद्रक।

ट वस्ती। बाह्य अध्य अप अध्योदहार तह रिक्ताती, अद् हम विभिन्ने।

ंशालाता यानागरम् तक।

पुरमा। भिष्यतः व किन्य वदः हुस्यवासक।

८७ज्ञालाखा -- ब्लीसम् अपर इस्टेक्कोस्ट कर हुना खन विनिन्छे।

दिवासा किता के अनुस्था का किताही।

भवकता । २०, भग, क्रांस यह भारता

भग्ना अर्तन्या, अत्र ६ इ.स.च. मादक प्राप्त श्रीया (पर ए तृह

मान्द्रविला। धनिजात पुरार् ७५ ति वसे।

সুবাসভাব লাকিব, আনুহাজ্য সোমা, এক বিন্ধ রেরুলার

इसा। इक रहे, कर्म महा दा दा दा है।

্রাক্ষা। নপ্তর - বং অ্রেক, গড়গতিকর, ব রুছিরকারী, বলের ছিজকারী। ক্ষরেরো, ড্রান, ড্রান ড্রান এবং বার্ন শক।

ধনিনা। (কাঁচাধনে) মগুৰ, স্থানিন, এবং ক্চিকর। (৩% ধনে) ক্ষৰভেল্লাই, তৃষ্ণা এবং ত্ জিলাশন।

ধ। ইকল। শাঙল, এব রক্তাপতা ভিসার নাশক।

ধুশুব। মত্তাদারক কফ্র এবং আগ্নি পিত্রকর।

मागी,व मत्। तत्या, भिछ वर भिष्ठ ।

। निष । होग, कुछ, अरु बा भव मानक।

প্লার্বাজ। আহ্, রেডাড, ন্লকর, ক্ষকর, ওক, পরিশাবে মন্ত্র, বিশিবে মন্ত্র,

প্রগাছ।। '

প্রদা। নেত্রের হিতকর, শীতদ, লেখনকর, এবং বিবফ্রা

পাকিম কার। মূত্রেভি শোধন কর এবং মেদ্র।

পাঠা। অভিসার এবং তিদোব নাশক।

পানিকল। গুৰুপাৰ, বিষ্টান্ত এবং শীতন।

श्राद्धनी। कक्तरायु नामक।

शास्ता। क्याताम अधाम काम गामक अवर मध्य।

পিপ্পানী। মধ্র, ধাতুপুঞ্চিকর, কটু, আগ্নিকর, সারক, আগ্রিষ্ট এবং বায়ু, কক, আস, কাসম। (কাঁচাহইলো) আহ, শীতল, ওফ, আগ্র অবচ ককম।

গিলেপনী মূল।—ভেদক, আগ্র ব্রন্ধিকর, এবং কফয়!

পিনাজ। মধ্ব, ধাতুপুটিকর, কটু অবচ স্নিম্ব এবং বায়ু নাশক, বলের হিতকারী, পিত্তম, কফকারক, ভৃত্তিজনক এবং গুরুপাক।

পিরালকল। মধুব, স্থিত্ত, শুক্রেরিকর, এবং বায়ু পিত্র।

পুনর্বা। কলবাভয়, শোফ, উদর এবং অর্শ রোগের শান্তিকর, কটু;

পুঞারক কার্ছ। চক্লের হিতকারী, শীতল, ঘালের নিবারক।

कक्षी। जन्मनकत्।

बुकून। अध्र, शातक, पार दिश्वाकत, पष्ठ मृत्काती।

वह। कुन, এवर व यू नागक, आयूच (इंडकार्ड) अवर मा कि व्यक्तित।

বক্ৰবৃক্ষ। ব যুজনা শুৰ নাশক ভেদী অথচ উষ্ণ এবং ক্মরী রোগছ।

বংশকরীর। গুরুপাক, কফ এবং বায়ুব প্রেকোপধর।

बर्भटन्डिन । क्यांत्र मध्त्र, क्या धवः र श्रू नामक।

বছেড়। তেদী, তীক্ষ্, উঞ্চ, বিরস, ক্রমনাশক, চফুর হিতকারী, পাকে আহ্, ক্রবাররস, কফ-পিওম। (উহার বীক্ষুশস্য) শিপাসা, ছর্দ্দ, কফ, প্রবং বায়ুনাশক ও শমুপাক।

বাকস। কাস, মুখের বৈরস্য, ইক্তপিত এবং কফল।

বামনহাটী। শাস-কাসয়।

ক্রানা। ছার্ল, হলাস্, পাতসার ও তৃষ্ণানাশক। কক, উষ্ণ, পরিপাকে। স্মুত্রং বীষ্ট্রক্ষর।

বাসক, হিচ্ছ এবং পিত শ্লেমার শান্তিকর।

বিছাতি বিষয়েগা, কাসরোগ কক ও নাশক।

বিট্লবল। জুর্মন্ত্র, আয়ি এবং বল র্জিকর। বাত, আম, ও জজীর্জন্য প্রেটের বেদন। ও শব্দ নাশক।

বিড়ঙ্গ। কক, উষ্ণ, পরিপাকে কটু, স্মু, এবং বায়ু ও কলম। ডিক্ত, ু বিষকোগ ও ক্মিনাশক।

বিদাবিকন্দ। মধূব, রংহণ র্ষা, শীতশ আরের হিতকর, জভাত শুত্র-র্থজিকর বশকর এবং ব য়ুপিডয়।

यलुम्त। बायु, कक, हार्क्त वदः शिवज्ञ।

বিৰত ড়ক।। শোধ এবং আমবাতনাশক।

বিসা। (প্রমাদির মুণাল) অবিদাহা, রক্তাপিতের শান্তিকর, বিইন্ত্রী হর্জর, কক্ষ, বিরস, এবং বায়ুরান্ধকর।

বেড়েলা। স্নিন্ধ, ধা চুপু ঠিকর, এবং বায়ু দি তত্ম।

বেল। (কচিবেল) ক্যায়, পাকে উষণ, আগ্লের, ধারক, ভিক্ত, কটু স্পিন, বায়ু এবং ক্রম। (প্রুবেল) স্থায়ি, মগ্লুর, গুক্পাক, আমনাশ্রক (শুক্তবেল) ধারক, ক্ফ, বাত এবং আমশ্লুল নাশক।

ব্রহতি। ধারক, পাকে উতা, এবং বাভয়।

বিশা। বয়স্থাপনকারী, এবং দেধা, শাতি e শ'স্বুর্জিকর।

ভাহ লয়া। কফ ও পিতম।

ভূষাপত্র। বল কফ এবং রক্তম।

ভূম্প। পাকে কটু মধুর রসবিশিষ্ট, কফ বায়ুর শাক্তিকর্ পাচক এবং কণ্ঠগোধন কর।

(ভেলা। স্নিড, ক্রমি এবং অর্শনাশক অভির ছৈর্য্যকারক; কলায় এবং মধূর
• ভেলার ভাঁটি। মধুব, ক্যায় এবং বায়ুবকোপকারক।

তৃদরকে। চক্ষু এবং কেশের হিভকারী পাত্রোগ এবং কফ্ম। মমঞ্জিটা। কুন্তু এবং বিষয় চা ক্রশোখন শেক লাবনাকর।

মধূশিও । সারক, তিক্ত, শোধনাশক, আমিকর কটু, বিদাহী, মলমূত্র রোধক, কক্ষ, এবং তাজেঃফ ও বীৰ্যাশালী।

মর্ক পূজা। পুর্তিকর, মুখের আপ্রায়, এবং শুকা। ইছার ফল, বংয়ু এবং শিক্ষ।

নরিট। (কাচানরিচ) থাকে আছু. গুক, এবং শ্লেমানাশক। শুক্তন। মরিচ) ক্চিকর, শ্মিকর, কক্ষ, উষ্ণ প্রয়ু, এবং শুক্তীয়। (শ্বেড) মরিছ) , অধিক উফবীর্থা, সর্বপ্রকার মরিছাপেকা গুণকারী, শুরুরণ নেজের ছিতকারী।

मिलिका। मालको शुष्टा मम छन विभिक्ती।

মালতীপুষ্প। ভিক্তরস বিশিষ্ট, সপ্সন্ধ, পিওয়।

মুক্তা। নেত্রের-হিতকর, শান্তল, লেখনকর, এবং কিয়ন চ

मूथा। जिल्हा कर्ते, वाज्य, এवः व्यक्षित् क्षकत्र । ।

भोति। किनत्र, शाष्ट्रभूषिकत, এवर मार ७ तुल्या।

यमानि। কুষ্ঠ, এবং শূলয়, প্রেয়, জয়িদ, পিততর, এবং বায়ুকফ, এবং রুমিনশেক।

যবক্ষার। অগ্নিতুল্য, শুক্র, শ্লেষ্য। দমনকারী অর্শা, প্রীহা এবং গুলুনাশক। রক্তাচন্দন। কফ এবং শোথল ও লঘু।

রক্ততেউড়া। আহ্, কর্মা, অপ্পতিভাক, কন্ম, ক্ট্রু, পাকে ভিতা এবং ক্ষম।

র্ভদাজনা। (মগুণিগু দেখ)

র্ভাণ। কার মধ্র রস, কঠের হিতকারী ধাতু পুকিবে, ওক সংগ্রহ সারক ভগ্নযোড়া দারক, বংগর হিতকারী রক্তাপিও রু জকর, এং বাজ-বেদনাদিনাশক।

द्वार। करे, क्रमिय, नवन तमविभिन्ने, बदेर दाश्चकता।

'রাস্থা। শেথি এবং আমবাত নাশক।

কপ্য। অন্তর্মবিশিক, সাধ্রু, শাত্রু, তৈলাত, এবং ব বুলিইয়।

(त्रमूक। करे क्षर वाश्चनागढ़, शिखकंद्र धनर लपुशाक।

রোমক লবন। তীকু, অভান্ত উঞ্জা সংস্থার বছন কর। পাকে বট্টু, বাতল্পন্য বিষ্ঠানি, স্ক্র, মলভেদক এবং মূত্রকর।

রোহিত রক্ষুণ। প্রাংগ, ওল এবং উদ্গীবোগ্য।

ण তীক্স রৌ। কপুরের ওুণ্য ও। বিশিক্ত, শক্ষণ এবং বাস্তর শেংধনকর।

णारा। **७ श**द्राग, जुरुतियः এवः र्गमश्चामक ७ वनकत्।

लाध्। ककाश्व वदर (भाषत्र व मादक।

প্রেছি। বায়ুবন্ধক, শীকল, এবং ড্যান পিও ও ক্ষয়।

শতমূলা। বায়ু, পিছ, মেহ এবং ক্রছনাশক ও সারিক।

'শালপাণী। কাসল ধারক এবং কচ্চরোগল।

শিল্প के हैं, गुकान्न, मध्य, जिल्ल, वर शिल्कन्न।

ं मृत्रीका। तिस्तामा विमर्शतामा । सर्घा पुरुषा विवास । विभिन्न । विभिन्न ।

শুভ৺পর। জুব. স্লেখা, এবং পিতর; এবং অগ্নির্ভিডব।

শক্ত হট্টা। বক্ত তেউডীর অপেকা কিঞাপুসপে ওণ বিশিষ্ট।

ভি । কল ও বালুবাশক লঘুপাক, অগ্নিকর, পাকে মধুব, খাত পুটিকর,

· श्रिव, प्याप्त, कर्डू अव॰ कैहिकत !

खन्क। रेत्रि, मार, बामसून उक्ष छ एक्तिमांक।

শামানতা। পিতৃ, ত্রগ ছ দি এবং জবল।

মচল লগন। ক'ছকৰ, উন্ধৰ শৈষ্ট্ৰ, ক্টুপাক, গুল্ল, শূল ও কোঠ বছকর, কিঞাই পিজকৰ এবং লা।

সলিবার জ। তীক্ষ; কটু এবং বাজ্ঞর্যান্ড e উদর বেদনা নাশক।

ফিল্ৰ আপটা। সভাদোম্যুক্ত, আহিব জ্লাদভন্তৰ।

নিজি। তীক্ষ, উঞ্চ মন্ততাকারক, কু**র্তুনাশক, বল, মেধা এবং অগ্নিকর এবং** ভোষাবাশক।

भौतक। कठे कृषिष्ठ, मनन्यम विनिर्दे अन्ध (लभेनकत्।

জুবর্। আজে আদা, রংলপ্র রাজালা, তিদেশি প্রতিব।প্কর শীতলা, নেতের ভিত্তত এবং বিষয়।

स्रपुर्ण। स्टरमव सम ७१ विभिन्ने, स्मिनसः विश्वा

জুৰম। কক, ৰ'য়ু, খাসে, কান এবং ভুগন্ধি **নাশক, পিছকের এবং**' পাধাশ্যিম।

বৈদাৰ-লবন। দেশ মান ধ'তুপুঞ্জিব, চক্ষের হিতকারী, পাচক, **অগ্নিকারক** মিঞ্জ, ক্চিয়ার, মধারা রাম এবং শ্রম্পাক।

रमानानी। जुन, कर छाता. व'बु अवर छेम'वर्डामि द्वार्गन्न अवर भीडन।

সোদালী কল। মধুব, ধাতুপ্ धेकत, সারক এবং বাছপিতায়।

সোনা। ধাবক এবং অগ্নিকর।

সোমর'জ। বাত, ৰুফ, কুমি, কুষ্ঠ এবং ত্রুকদোষ নাশক।

সোহ গা। কফ্ম, ভীক্ষ, উঞ, পাল্লকর, অনাদিধাতু পোষক এবং পি ব

रिगोत्का नवन । . পরিপাকে लग्, উक्षरीया, रिनाम, कछे, छन्। भूगे ७ दिवस्

পৌনীর। কফ এবং বায়ুর ছিতকর।

সজিক কাব। শেশিতুলা, এবং বাডপ্লেমার দমনকর, মর্শ, প্লীছা বিবং গুলাবোগন।

স্বরপত্ত। ভীকু, উঠ, পবিত্ত এবং ক্রমিও বিষরোগয়। ছবিন্তা। কফ, পিজ, কণ্ড, এবং তক দোহয়।

हती उनी । ইহা সাত প্রকার। জীদন্তী, – স্লেহপার্নে। রোহিনী-ক্ষরেরাগে

विख्या, - (नश्रात । शूक्ता, - विद्याहरत । अप्रका - (त्राहरतार्था अख्या, - गंकार्य । कनिका, - ज्ञक्त द्वार्था वावरच्या । इत्रोक्की नव्य ज्ञायुक वायूनानक। असू जार्यार्था शिख्या । स्थ्री जरर्यार्थ कक्य व्यवस्थक न त्यार्थ इस ज्ञाल द्वार्थित भाष्टिक व ।

ছরীতকী বীজ শসা। চক্ষুর হিতকারী এবং বাত পিদন্ত।
হাড়ভালা। অন্তিভগ্নের ও বলের হিতকর ও বায়ু নাশক।
হিং। ভীক্ষু, কটুরস, শূলন্ন, বর্দ্ধ এবং অন্তীর্ণনাশক, লঘু, উষ্ণ, পাচক, ক্মিন্ধ;
নিধিক এবং কক বাতম।

প্তভত্তা। **কক্**য়।

क्षिकत । কৃষিকর, পরিপাকে আহ্ পিচ্ছিল বিস্যাদি, বায়ু র্ছিকর। এবং শুভান্ত পিউ-শ্লেমাকর নহে।

ক্ষীরস্ক। শীঙল, সংআ'হী এবং হক্ত পিত রোগের হিডকর। কেংপাপড়া। পিছ, দাহ, স্থার ছফা এবং কফ নাশক।

म्याखः।

ক্ৰিক্তা কিংপুর রোড এরক: বসাকের লেন ১৭ নং ভবনে
্ুক্বিফা-রজাকর খুল্লে শীক্রিরচাদ দাস ধারা মুদ্রিত।